व्याकरणवीथिः

कक्षा 9 एवं 10 के लिए संस्कृत व्याकरण

0974

© NCERT
not to be republished

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

974 – व्याकरणवीथि:
कक्षा 9 एवं 10 के लिए संस्कृत व्याकरण

ISBN 978-93-5007-774-0

प्रथम संस्करण
जुलाई 2003 आषाढ़ शक्संवत् 1925

संशोधित संस्करण
नवंबर 2016 कार्तिक शक्संवत् 1938

पुनर्मुद्रण
अप्रैल 2019 चैत्र शक्संवत् 1941
सितंबर 2019 भाद्रपद शक्संवत् 1941
जनवरी 2021 पौष शक्संवत् 1942
सितंबर 2022 आश्विन शक्संवत् 1944
मार्च 2024 चैत्र शक्संवत् 1946

PD 10T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2016

₹ 110.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा इंडिया ऑफ़सेट प्रिंटर्स प्रा. लि., बी–20/1 एवं एक्स-36, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-II, नयी दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेट
बेंगलुरु 560 085 **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी.कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 **फोन : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 **फ़ोन : 0361-2676869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *अमिताभ कुमार*
संपादक : *रेखा अग्रवाल*
उत्पादन सहायक : *प्रकाश वीर सिंह*

आवरण
अमित श्रीवास्तव

© NCERT not to be republished

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत - शिक्षणार्थमादर्श - पाठ्यक्रम - पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद: भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे माध्यमिकस्तरीयच्छात्राणां संस्कृतव्याकरणसम्बन्धिकाठिन्यमपाकर्तुं द्वादशाध्यायेषु प्राक्तनसामाजिक-विज्ञानमानविकीशिक्षाविभागेन निर्मितस्य व्याकरणवीथि: नामपुस्तकस्य संशोधितं परिवर्धितं च संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र वर्णविचारसंज्ञासन्धिशब्द-धातुरूपोपसर्गाव्ययप्रत्ययसमासरचनाप्रयोगानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। पुस्तकमिदं पठित्वा छात्रा: संस्कृतस्य प्रयोगे दक्षा: भवेयु:, इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहित:।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यै: विशेषज्ञै: अनुभविभि: संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोग: कृत:, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शा: सदैवास्माकं स्वागतार्हा:।

हृषिकेश सेनापति

नवदेहली — *निदेशक:*

नवम्बर 2016 — राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT not to be republished

© NCERT
not to be republished

भूमिका

व्याकरणशास्त्र अनादिकाल से भारतीय चिन्तन का अनिवार्य अङ्ग रहा है। प्रातिशाख्य तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में पदगत सन्धि, समास, आगम, लोप, वर्ण-विकार, प्रकृति तथा प्रत्ययों का विवेचन प्राप्त होता है। निरुक्तकार यास्क का योगदान इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनके द्वारा की गई नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात तथा क्रिया आदि की व्याख्या व्याकरण के परवर्ती आचार्यों (पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि) के लिए भी उपयोगी रही है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत भाषा में लिखित शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि व्याकरण भाषा को शुद्ध बनाकर उसका समुचित प्रयोग सिखाता है। व्याकरण शब्द (वि + आ + कृ + ल्युट्) से निष्पन्न है। **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन** इति व्याकरणम् अर्थात् शब्दों की व्युत्पत्ति करने वाले, प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्धारण करने वाले तथा उनके शुद्ध स्वरूप का विवेचन करने वाले शास्त्र को व्याकरणशास्त्र कहते हैं। अति प्राचीन काल से शास्त्रों में व्याकरण का प्रमुख स्थान है — **मुखं व्याकरणं स्मृतम्।** संस्कृत भाषा में व्याकरणशास्त्र का जितना सूक्ष्म तर्कपूर्ण एवं विस्तृत विवेचन हुआ है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ है। वेदों के सम्यक् अध्ययन, अर्थ बोध तथा वेद मंत्रों की व्याख्या के लिए वेदाङ्गों का ज्ञान अनिवार्य है। वेदाङ्ग छह हैं —

शिक्षा व्याकरणं छन्दो, निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि, वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

1. शिक्षा, 2. व्याकरण, 3. छन्द, 4. निरुक्त, 5. ज्योतिष, और 6. कल्प।

© NCERT not to be republished

व्याकरण की सहायता से ही हम वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के साथ-साथ भास, कालिदास, माघ, श्रीहर्ष, भवभूति, बाण एवं जगन्नाथ प्रभृति विद्वानों की कृतियों का रसास्वादन करते हैं।

संस्कृत वाङ्मय (वैदिक एवं लौकिक) की रक्षा करना व्याकरण का प्रथम प्रयोजन है, जैसा कि महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में कहा है— "रक्षोहागमलघ्वसन्देहा: प्रयोजनम्"।

व्याकरण ऐसी शक्ति प्रदान करता है जिसके द्वारा सारे श्रुत और अश्रुत शब्दों तथा पठित और अपठित वाङ्मय का रहस्य अल्पकाल में ही समझा जा सकता है। शब्दों का असंदिग्ध ज्ञान व्याकरण से ही सम्भव है। धनवान् शब्द शुद्ध है या धनमान्, बुद्धिमती शब्द शुद्ध है या बुद्धिवती इस प्रकार के सन्देह को वैयाकरण ही दूर कर सकता है, क्योंकि वह जानता है कि अशुद्ध पद का प्रयोग अनिष्ट का कारण बन जाता है।

दुष्ट: शब्द: स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोऽपराधात्।।

(पाणिनीय शिक्षा)

व्याकरणशास्त्र के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए किसी ने ठीक ही कहा है—

यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्र! व्याकरणम्।
स्वजन: श्वजनो माभूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्।।

संस्कृत व्याकरण की परम्परा

संस्कृत व्याकरण की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी वैदिक संहिता। तैत्तिरीय संहिता में उल्लेख है कि इन्द्र ने संस्कृत भाषा का प्रथम व्याकरण रचा। पतञ्जलि के *महाभाष्य* में सङ्केत मिलता है कि इन्द्र के पहले भी व्याकरणशास्त्र का अस्तित्व था। इन्द्र ने बृहस्पति से व्याकरण-विद्या का अध्ययन किया था।

"बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच।"

ऐन्द्र व्याकरण की अविच्छिन्न परम्परा का उल्लेख ऋक्तन्त्र में भी सुलभ है—
"ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्य: ऋषय: ब्राह्मणेभ्यश्च।"

इससे प्रतीत होता है कि ऐन्द्र सम्प्रदाय व्याकरण का एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय था। इसके समकक्ष व्याकरणशास्त्र का एक दूसरा माहेश्वर सम्प्रदाय भी था जिसके प्रवर्तक महेश्वर थे जिसकी आधारशिला पर पाणिनि ने व्याकरण के भव्य प्रासाद का निर्माण किया।

पाणिनि ने *अष्टाध्यायी* में आपिशलि, काशकृत्स्न, शाकल्य, स्फोटायन एवं शाकटायन आदि दस वैयाकरणों का नामोल्लेख किया है। इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती सभी वैयाकरणों के ग्राह्य विचारों और विवेचनों से परिपूर्ण तत्त्वों को अपने ग्रन्थ में अपनाया है।

पाणिनि का समय सप्तम ई.पू. और पञ्चम ई.पू. शताब्दी के मध्य माना जाता है। इस विषय में विद्वानों का मतैक्य नहीं है। ये उत्तर-पश्चिम भारत में स्थित शालातुर ग्राम के निवासी थे। इनकी माता का नाम दाक्षी था।

सर्वे सर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्य पाणिने: (वाक्यपदीय)

ये उपवर्ष या वर्ष आचार्य के शिष्य थे। ऐसा माना जाता है कि पाणिनि की तपस्या से प्रसन्न होकर महेश्वर ने उन्हें 14 माहेश्वर सूत्रों का उपदेश दिया। उन्हीं के आधार पर पाणिनि ने अत्यन्त संक्षिप्त (सूत्र) शैली में सुदृढ़ व्याकरण लिखा है। यह ग्रन्थ आठ अध्यायों में विभाजित है। अत: इसका नाम *अष्टाध्यायी* है। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। प्रत्येक पाद में सूत्र हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग 4000 सूत्र हैं। समस्त सूत्र अध्याय, पाद और सूत्राङ्कों में विभक्त हैं। प्रथम अध्याय में व्याकरण सम्बन्धी संज्ञाओं तथा परिभाषाओं का विवेचन है। द्वितीय अध्याय में समास और कारक के नियम हैं। तृतीय और अष्टम अध्याय में कृदन्त प्रकरण हैं। चतुर्थ तथा पञ्चम अध्याय में स्त्री प्रत्यय और तद्धित का विवेचन है। षष्ठ तथा सप्तम अध्याय में सन्धि, आदेश और स्वर-प्रक्रिया से

© NCERT not to be republished

सम्बन्धित सूत्र रखे गए हैं। ऐसी किंवदन्ती है कि इनकी मृत्यु व्याघ्र (व्याघ्रो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिने: — पञ्चतन्त्र) के आक्रमण द्वारा त्रयोदशी तिथि को हुई थी।

द्वितीय वैयाकरण कात्यायन हैं, जिन्हें वररुचि भी कहा जाता है। इनका समय 400 ई.पू. से 300 ई.पू. के मध्य माना जाता है। ये दाक्षिणात्य थे। इन्होंने पाणिनि द्वारा रचित लगभग 1250 सूत्रों की आलोचनात्मक व्याख्या की है, जो *वार्तिक* के नाम से प्रसिद्ध है। वार्तिकों की संख्या प्राय: 4000 है।

पाणिनि की व्याकरण परम्परा का परिवर्तन एवं परिवर्धन करने वाले महान् वैयाकरण पतञ्जलि हैं। इनका समय दूसरी शताब्दी ई.पू. है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ *महाभाष्य* है। कात्यायन के वार्तिकों की प्रश्नोत्तर-शैली में समीक्षा करते हुए पतञ्जलि ने *अष्टाध्यायी* पर भाष्य लिखा है। *अष्टाध्यायी* के अध्याय, पाद और सूत्रक्रम में ही पतञ्जलि ने अपने भाष्य का क्रम रखा है। इसका विभाजन आह्निकों में है। प्रथम पस्पशाह्निक में व्याकरण की आवश्यकता आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण विवेचन है। वार्तिकों की समीक्षा तथा शङ्काओं के समाधान के साथ उपयोगी वार्तिकों को सहर्ष स्वीकार तथा अनुपयुक्त आलोचनाओं का खण्डन किया है। इस ग्रन्थ में तत्कालीन सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का प्रचुर एवं मनोरम परिचय प्राप्त होता है। *महाभाष्य* पर कैय्यट की प्रदीप और नागेश की उद्योत टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। व्याकरणशास्त्र में पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि को **त्रिमुनि** (मुनित्रय) संज्ञा से अभिहित किया गया है।

काशिका और न्यास

पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि के पश्चात् व्याकरण नियमों को बोधगम्य बनाने के लिए विविध टीका-ग्रन्थों का युग प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में सातवीं ईसवी में जयादित्य और वामन ने *अष्टाध्यायी* पर एक टीका लिखी जो *काशिका वृत्ति* के नाम से प्रसिद्ध है। काशिका पर जिनेन्द्र बुद्धि ने *न्यास* और हरदत्त ने *पदमञ्जरी* नामक उपटीकाएँ लिखीं।

प्रक्रिया ग्रन्थ

टीकाओं और उपटीकाओं के बाद पाणिनीय सूत्रों की नवीन पद्धति की ओर वैयाकरणों का ध्यान आकर्षित हुआ। धर्मकीर्ति ने *रूपावतार* ग्रन्थ लिखा जिसमें *अष्टाध्यायी* के सूत्रों को विभिन्न प्रकरणों में विभक्त कर सम्पादित किया गया है। सन् 1350 ई. में विमल सरस्वती ने *रूपमाला* और 1400 ई. में पं. रामचन्द्र ने *प्रक्रिया कौमुदी* नामक ग्रन्थ की रचना की। 1630 ई. के लगभग भट्टोजी दीक्षित ने *सिद्धान्त कौमुदी* की रचना की। इस पर स्वयं भट्टोजी दीक्षित ने *प्रौढ़मनोरमा* नाम की टीका लिखी। इसी ग्रन्थ पर पण्डितराज जगन्नाथ ने *मनोरमा कुचमर्दिनी* नाम से व्याख्या प्रस्तुत की है। सिद्धान्त कौमुदी पर नागेशभट्ट ने *लघुशब्देन्दुशेखर* नामक प्रौढ़ ग्रन्थ लिखा। सिद्धान्त कौमुदी की दो अन्य प्रसिद्ध टीकाएँ - *तत्त्वबोधिनी* और *बालमनोरमा* हैं। आचार्य वरदराज ने सिद्धान्तकौमुदी को संक्षिप्त करते हुए *लघुसिद्धान्त कौमुदी* एवं *मध्यसिद्धान्त कौमुदी* की रचना की, जो व्याकरण के प्रारम्भिक छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ हैं।

उपर्युक्त समस्त ग्रन्थ प्राय: व्याकरण के व्युत्पत्ति पक्ष को लक्ष्य में रखकर लिखे गए हैं। व्याकरण के दार्शनिक पक्ष को लेकर लिखे गए ग्रन्थों में— भर्तृहरि का *वाक्यपदीय,* कौण्डभट्ट का *वैयाकरणभूषणसार* तथा नागेशभट्ट की *लघुमञ्जूषा* और *स्फोटवाद* प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा के आलोक में माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर पूर्व में प्रकाशित *व्याकरणवीथि:* पुस्तक का यह संशोधित संस्करण है। इसमें 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में 'वर्ण विचार', द्वितीय में 'संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण', तृतीय में 'सन्धि', चतुर्थ में 'शब्दरूप सामान्य परिचय' पंचम में 'धातुरूप सामान्य परिचय' षष्ठ में 'उपसर्ग', सप्तम में 'अव्यय', अष्टम में 'प्रत्यय', नवम में 'समास परिचय', दशम में 'कारक और विभक्ति' तथा एकादश अध्याय में 'वाच्य परिवर्तन' पर उपयोगी सामग्री दी गई है। इसके द्वादश अध्याय में 'रचना प्रयोग' (संस्कृत में

पत्र, अपठित अनुच्छेदों पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर, अनुच्छेद लेखन तथा लघु निबंध) दिए गए हैं। पुस्तक के 'परिशिष्ट' भाग में 'शब्दरूपाणि' (अजन्त, हलन्त, सर्वनाम तथा संख्यावाची शब्द) एवं 'धातुरूपाणि' गणों के अनुसार पर्याप्त मात्रा में दी गई है, जिससे छात्रों को शब्द रूप तथा धातु रूप सम्बन्धी समस्या के लिए इधर-उधर भटकना न पड़े। इस तरह इस पुस्तक में संस्कृत व्याकरण के आधारभूत नियमों का परिचय देते हुए उपयोगी अभ्यासचारिका द्वारा छात्रों के व्याकरण ज्ञान को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है कि यह पुस्तक माध्यमिक स्तर के छात्रों की संस्कृत व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयों का समाधान करने में सफल होगी।

संपादक

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक समीक्षा कार्यगोष्ठी के सदस्य

आभा झा, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), सर्वोदय बाल उ.मा. विद्यालय, जे-ब्लाक, साकेत, नयी दिल्ली

पतञ्जलि कुमार भाटिया, *रीडर* (संस्कृत), पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नेहरू नगर, नयी दिल्ली

पुरुषोत्तम मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, जहाँगीर पुरी, दिल्ली

यदुनाथ प्रसाद दुबे, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, भवन्स मेहता कॉलेज, भरवारी, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश

योगेश्वर दत्त शर्मा, *रीडर* (संस्कृत), (अवकाश प्राप्त) हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राजेश्वर मिश्र, *रीडर*, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

रामनाथ झा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), स्पेशल सेंटर फ़ॉर संस्कृत स्टडीज़, जे.एन.यू, नयी दिल्ली

लता अरोरा, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर-IV, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली

हरिराम मिश्र, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), स्पेशल सेंटर फ़ॉर संस्कृत स्टडीज़, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय, भाषा शिक्षा विभाग

उर्मिल खुंगर, *सिलेक्शन ग्रेड लेक्चरर* (सेवानिवृत्त), संस्कृत

कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), संस्कृत

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर*, संस्कृत (समन्वयक एवं संपादक)

जतीन्द्र मोहन मिश्र, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, संस्कृत (सह संपादक)

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ–

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

© NCERT not to be republished

विषयानुक्रमणिका

	पुरोवाक्	***iii***
	भूमिका	***v***
अध्याय		
प्रथम	**वर्ण विचार**	**1-8**
द्वितीय	**संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण**	**9-12**
तृतीय	**सन्धि**	**13-34**
	1. स्वर (अच्) सन्धि	13
	2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि	22
	3. विसर्ग सन्धि	28
चतुर्थ	**शब्दरूप सामान्य परिचय**	**35-40**
पंचम	**धातुरूप सामान्य परिचय**	**41-48**
षष्ठ	**उपसर्ग**	**49-53**
सप्तम	**अव्यय**	**54-60**
अष्टम	**प्रत्यय**	**61-100**
	1. कृत् प्रत्यय	61
	2. तद्धित प्रत्यय	89
	3. स्त्री प्रत्यय	98
नवम	**समास परिचय**	**101-109**
दशम	**कारक और विभक्ति**	**110-123**
एकादश	**वाच्य परिवर्तन**	**124-128**
द्वादश	**रचना प्रयोग**	**129-153**
	1. पत्रम्	129
	2. दूरभाषवार्ता	133
	3. अपठित गद्यांश	134

not to be republished © NCERT

4. अनुच्छेदलेखनम् 141
5. निबन्धावली 143

परिशिष्ट

I. शब्दरूपाणि **154-178**
i. स्वरान्त शब्दरूप 154
ii. व्यञ्जनान्त शब्दरूप 160
iii. सर्वनाम 165
iv. संख्यावाची शब्द 173

II. धातुरूपाणि **179-228**

© NCERT not to be republished

0974CH01

प्रथम अध्याय

वर्ण विचार

भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। पाणिनि ने वर्णमाला को 14 सूत्रों में प्रस्तुत किया है। परंपरा के अनुसार महेश्वर ने अपने नृत्य की समाप्ति पर जो 14 बार डमरू बजाया, उससे ये 14 (ध्वनियाँ) सूत्र पाणिनि को प्राप्त हुए—

> * नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
> उद्धर्तुकाम: सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

ये सूत्र इस प्रकार हैं —

1. अइउण् (अ, इ, उ)
2. ऋलृक् (ऋ, लृ)
3. एओङ् (ए, ओ)
4. ऐऔच् (ऐ, औ)
5. हयवरट् (ह्, य्, व्, र्)
6. लण् (ल्)
7. ञमङणनम् (ञ, म्, ङ्, ण्, न्)
8. झभञ् (झ्, भ्)
9. घढधष् (घ्, ढ्, ध्)
10. जबगडदश् (ज्, ब्, ग्, ड्, द्)
11. खफछठथचटतव् (ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्)

* दशरूपक के अनुसार— नृत्त और नृत्य में भेद होता है। नृत्त भाव पर आश्रित होता है, जबकि नृत्य ताल एवं लय पर आश्रित होता है।

© NCERT not to be republished

12. कपय् (क्, प्)
13. शषसर् (श्, ष्, स्)
14. हल् (ह्)

प्रत्येक सूत्र के अन्त में हल् वर्ण का प्रयोग प्रत्याहार बनाने के उद्देश्य से किया गया है (जैसे— अइउण् में 'ण्' हल् वर्ण है)। इन्हें प्रत्याहारों के अन्तर्गत आने वाले वर्णों के साथ सम्मिलित नहीं किया जाता।

प्रत्याहार

माहेश्वर सूत्रों के आधार पर विभिन्न प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे— अच्, इक्, यण्, अल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता है, किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं—

यथा— अच् = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ — यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण 'अ' का परिगणन किया गया है तथा अन्तिम वर्ण 'च्' को छोड़ दिया गया है।

(क) **हल्** (पाँचवें सूत्र के प्रथम वर्ण 'ह्' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)
ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष् तथा स्।

(ख) **इक्** (प्रथम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'इ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) इ, उ, ऋ तथा लृ।

(ग) **अक्** (प्रथम सूत्र के प्रथम वर्ण 'अ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) अ, इ, उ, ऋ तथा लृ।

(घ) **झल्** (अष्टम सूत्र के प्रथम वर्ण 'झ' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स् तथा ह्।

(ङ) **यण्** (पञ्चम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'य' से लेकर षष्ठ सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ण्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) य्, व्, र् तथा ल्।

- सन्धि आदि के नियमों को समझने के लिए प्रत्याहार ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।
- वर्ण दो प्रकार के होते हैं— स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर (अच्)— जो (वर्ण) किसी अन्य (वर्ण) की सहायता के बिना ही बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं— ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत

1. **ह्रस्व स्वर**— जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उसको ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में पाँच हैं— अ, इ, उ, ऋ तथा लृ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर**— जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगे उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या आठ है— आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ तथा औ। इनमें से 'लृ' ध्वनि का दीर्घ रूप 'ॡ' केवल वेदों में प्राप्त होता है। अन्तिम चार वर्णों को संयुक्त वर्ण (स्वर) भी कहते हैं, क्योंकि ए, ऐ, ओ तथा औ दो स्वरों के मेल से बने हैं।

   उदाहरण —

   अ+इ=ए अ+ए=ऐ अ+उ=ओ अ+ओ=औ
3. **प्लुत स्वर**— जिस स्वर के उच्चारण में तीन या उससे अधिक मात्राओं का समय लगे उसे प्लुत कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को दूर से पुकारते हैं तब सम्बोधन पद के अन्तिम वर्ण को तीन मात्रा का समय लगाकर बोलते हैं, उसे ही प्लुत स्वर कहते हैं। लिपि में प्लुत स्वर को '३' की संख्या से दिखाया जाता हैं, उदाहरण के लिए एहि कृष्ण३ अत्र गौश्चरति। 'ओ३म्' के ओकार का उच्चारण सर्वत्र प्लुत ही होता है।

© NCERT not to be republished

सभी ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत स्वर वर्ण अनुनासिक एवं निरनुनासिक भेद से द्विविध हैं।

अनुनासिक— जिस स्वर के उच्चारण में मुख के साथ नासिका की भी सहायता ली जाती है, उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं।

यथा— अँ, एँ इत्यादि समस्त स्वर वर्ण।

निरनुनासिक— जो स्वर केवल मुख से उच्चारित होता है, वह निरनुनासिक है।

व्यञ्जन (हल्)

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, उन्हें व्यञ्जन या हल् कहते हैं। स्वर रहित व्यञ्जन को लिखने के लिए वर्ण के नीचे हल् चिह्न (्) लगाते हैं। सम्पूर्ण व्यञ्जन निम्न तालिका में दर्शाए गए हैं—

उदाहरण —

कु =	क् ख् ग् घ् ङ्	क वर्ग
चु =	च् छ् ज् झ् ञ्	च वर्ग
टु =	ट् ठ् ड् ढ् ण्	ट वर्ग
तु =	त् थ् द् ध् न्	त वर्ग
पु =	प् फ् ब् भ् म्	प वर्ग

व्याकरण सम्प्रदाय में इन पाँच वर्गों को कु, चु, टु, तु, पु नाम से जाना जाता है।

य् र् ल् व्	(अन्त:स्थ)
श् ष् स् ह्	(ऊष्म)

1. **स्पर्श**— उपर्युक्त 'क्' से 'म्' तक के 25 वर्णों को स्पर्श कहते हैं। इनके उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है। प्रत्येक वर्ग के अन्तिम वर्ण— ङ्, ञ्, ण्, न् और म् को अनुनासिक भी कहा जाता है, क्योंकि इनका उच्चारण मुख के साथ नासिका से भी होता है।

© NCERT not to be republished

2. **अन्तःस्थ**— य्, र्, ल् और व् वर्णों को अन्तःस्थ कहते हैं। इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।
3. **ऊष्म**— श्, ष्, स्, ह् वर्णों को ऊष्म कहते हैं।

अनुस्वार

इसका उच्चारण नासिका मात्र से होता है। यह सर्वथा स्वर के बाद ही आता है।

यथा— अहम् - अहं। सामान्यतया 'म्' व्यञ्जन वर्ण से पहले अनुस्वार (ं) में परिवर्तित होता है।

1. **विसर्ग (:)**— इसका उच्चारण किञ्चित् 'ह्' के सदृश किया जाता है; इसका भी प्रयोग स्वर के बाद ही होता है।

   यथा— रामः, देवः, गुरुः।
2. **संयुक्त व्यञ्जन**— दो व्यञ्जनों के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

   उदाहरण—

   i) क् + ष् = क्ष्

   ii) त् + र् = त्र्

   iii) ज् + ञ् = ज्ञ्

उच्चारण स्थान

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ एवं नासिका को उच्चारण स्थान कहते हैं। वर्णों का उच्चारण करने के लिए फेफड़े से निकली निःश्वास वायु इन स्थानों का स्पर्श करती है। कुछ वर्णों का उच्चारण एक साथ दो स्थानों से भी होता है। वर्णों के उच्चारण स्थानों को अग्रिम तालिका से समझा जा सकता है—

© NCERT not to be republished

स्थान	*स्वर*	*व्यञ्जन*			*अयोगवाह*	*संज्ञा*
		स्पर्श	*अन्त:स्थ*	*ऊष्म*		
कण्ठ	अ, आ	क्, ख, ग्, घ्, ङ्	य्	ह्	:	कण्ठ्य
तालु	इ, ई	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	र्	श्		तालव्य
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	ल्	ष्		मूर्धन्य
दन्त	ऌ	त्, थ्, द्, ध्, न्		स्	*	दन्त्य
ओष्ठ	उ, ऊ	प्, फ्, ब्, भ्, म्			⨯प, ⨯फ	ओष्ठ्य
नासिका	अनुनासिक स्वर	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्			उपध्मानीय ं, ँ	नासिक्य
कण्ठतालु	ए, ऐ		व्			कण्ठतालव्य
कण्ठोष्ठ	ओ, औ				#	कण्ठोष्ठ्य
दन्तोष्ठ						दन्तोष्ठ्य
जिह्वामूल					⨯क, ⨯ख	जिह्वामूलीय

सम्बद्ध स्थानों के साथ नासिका से भी पञ्चम वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयत्न

फेफड़े से निकली नि:श्वास वायु को मुख, नासिका तथा कण्ठ आदि स्थानों से स्पर्श कराते हुए मनुष्य द्वारा अभीष्ट वर्णों के उच्चारणार्थ किए गए यत्न को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न के दो भेद होते हैं— आभ्यन्तर तथा बाह्य। वर्णों के उच्चारण काल में मुख के अन्दर मनुष्य की चेष्टापरक क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं—

स्पृष्ट— वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा के विभिन्न भागों द्वारा मुख के अन्दर के विभिन्न स्थानों को स्पर्श किया जाता है तो जिह्वा के इस प्रयत्न को स्पृष्ट प्रयत्न कहते हैं। 'क्' से 'म्' तक सभी व्यञ्जन 'स्पृष्ट' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

* विसर्ग का भेद उपध्मानीय (जब विसर्ग के बाद प, फ वर्ण रहते हैं, तब अर्ध विसर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण— पुन: पुन:, तप: फलम्)

विसर्ग का भेद जिह्वामूलीय (जब विसर्ग के बाद क, ख वर्ण रहते हैं, तब अर्धविसर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण— प्रात: काल:, दु:खम्)

© NCERT not to be republished

ईषत् स्पृष्ट— वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा द्वारा उच्चारण स्थानों को थोड़ा ही स्पर्श किया जाता है, तो जिह्वा के इस प्रयत्न को ईषत् स्पृष्ट कहते हैं। य्, र्, ल्, तथा व्, ईषत् स्पृष्ट से उच्चारित होते हैं।

विवृत— वर्ण विशेष के उच्चारण काल में जब मुख-विवर खुला रहता है, तो मुख के इस यत्न को विवृत कहते हैं। सभी स्वर 'विवृत' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

ईषत् विवृत— वर्णों के उच्चारण काल में जब मुख-विवर थोड़ा खुला रहता है, तो मुख के इस प्रयत्न को ईषत् विवृत कहते हैं। श्, ष्, स्, ह् ईषत् विवृत प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

संवृत— वर्णों के उच्चारण काल में फेफड़े से निकलने वाले नि:श्वास का मार्ग जब बन्द रहता है, तब इसे संवृत कहते हैं। इसका प्रयोग केवल ह्रस्व 'अ' के उच्चारण में होता है।

बाह्य-प्रयत्न— वर्णों के उच्चारण का वह यत्न जो फेफड़े से कण्ठ तक होता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। मुख से बाह्य होने की अपेक्षा से इसे बाह्य कहा जाता है। इसके ग्यारह भेद हैं—

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। बाह्य प्रयत्नों के आधार पर वर्णों का विभाजन निम्न तालिका से समझा जा सकता है—

विवार, श्वास, अघोष	*संवार, नाद, घोष*	*अल्पप्राण*	*महाप्राण*	*उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित*
'खर्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ग के प्रथम द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स् "खर: विवारा: श्वासा: अघोषाश्च"	'हश्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, अन्त:स्थ एवं ह् "हश: संवारा नादा घोषाश्च"	वर्गों के प्रथम, तृतीय, पंचम वर्ण एवं अन्त:स्थ संज्ञक वर्ण	वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण एवं ऊष्म संज्ञक वर्ण	सभी स्वर वर्ण

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु प्रत्याहारेषु परिगणितान् वर्णान् लिखत—

i) इक् .... ii) जश् ....
iii) ऐच् .... iv) हश् ....
v) अट् .... vi) झश् ....

प्र. 2. अधोलिखितानां वर्णानाम् उच्चारणस्थानं लिखत—

i) कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) ....
ii) टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्) ....
iii) पवर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) ....
iv) इ, च्, य्, श् ....

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य वर्णान् पृथक्कृत्य लिखत—

यथा— गजः — ग् + अ + ज् + अ + :

i) कमलम् ii) भोजनम्
iii) गच्छति iv) अनुपतति
v) रावण:

प्र. 4. उदाहरणमनुसृत्य वर्णानां संयोजनं कुरुत—

यथा— अ + ह् + अ + म् = अहम्

i) प् + उ + स् + त् + अ + क् + आ + न् + इ
ii) प् + अ + ठ् + इ + ष् + य् + आ + म् + इ
iii) ग् + ऋ + ह् + अ + म्
iv) श् + ओ + भ् + अ + न् + अ + म्
v) भ् + अ + व् + इ + त् + अ + व् + य् + अ + म्

प्र. 5. संयुक्तवर्णान् पृथक्कृत्य पूरयत—

i) क्ष = क् +....+.... ii) त्र = ...+ र् +....
iii) श्र = ...+....+ अ iv) ज्ञ = ज् + ञ् +....
v) ए = अ +.... vi) ओ = ...+ उ

© NCERT not to be republished

0974CH02

द्वितीय अध्याय

संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण

व्यावहारिक सुविधा के लिए प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ को किसी न किसी नाम से अभिहित किया जाता है। इसी नाम को संज्ञा भी कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में संज्ञाओं एवं परिभाषाओं का बहुत महत्त्व होता है। इनका प्रयोग लाघव के लिए किया गया है। संज्ञाओं एवं परिभाषाओं को समझने से व्याकरण-प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलती है। कुछ संज्ञाएँ एवं परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं—

आगम

किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्रवत् पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है, तब वह आगम कहलाता है (मित्रवदागम:), जैसे— वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। यहाँ वृक्ष के 'अ' एवं छाया के 'छ' के मध्य में 'च्' का आगम हुआ है।

आदेश

किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है (शत्रुवदादेश:), जैसे— यदि + अपि = यद्यपि, यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश हुआ है। यह आदेश पूर्व वर्ण के स्थान पर अथवा पर वर्ण के स्थान पर हो सकता है। पूर्व तथा पर दोनों वर्णों के स्थान पर दीर्घादि रूप में 'एकादेश' भी होता है।

उपधा

किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व (वर्ण) को उपधा कहते हैं, जैसे— चिन्त् में

© NCERT not to be republished

'त्' अंतिम वर्ण है और उससे पूर्व 'न्' उपधा है (अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा)। जैसे महत् में अन्तिम वर्ण 'त्' से पूर्ववर्ती 'ह' में विद्यमान 'अ' उपधा संज्ञक है।

पद

संज्ञा के साथ सु, औ, जस् आदि नाम पदों में आने वाले 21 प्रत्यय एवं तिप्, तस्, झि आदि क्रियापदों में आने वाले 18 प्रत्यय विभक्ति संज्ञक हैं। सु, औ, जस् (अ:) आदि तथा धातुओं के साथ ति, तस् (त:) अन्ति आदि विभक्तियों के जुड़ने से सुबन्त और तिङन्त शब्दों की पद संज्ञा होती है (सुप्तिङन्तं पदम्), यथा— राम:, रामौ, रामा: तथा भवति, भवत:, भवन्ति। केवल पठ्, नम्, वद् तथा राम इत्यादि को पद नहीं कह सकते। संस्कृत भाषा में जिसकी पद संज्ञा नहीं होती उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है (अपदं न प्रयुञ्जीत)।

निष्ठा

क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं— 'क्तक्तवतू निष्ठा'। इनके योग से भूतकालिक क्रियापदों का निर्माण किया जाता है, जैसे— गत:, गतवान् आदि।

विकरण

धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में आने वाले शप् (अ) श्यन् (य) श्नु (नु), आदि प्रत्यय विकरण कहलाते हैं, यथा— भवति में भू + ति के मध्य में 'शप्' हुआ है (भू + अ + ति)। विकरण भेद से ही धातुएँ 10 विभिन्न गणों में विभक्त होती हैं।

संयोग

संस्कृत में 'संयोग' एक महत्त्वपूर्ण संज्ञा के रूप में प्राप्त होता है। यह एक पारिभाषिक शब्द है। महर्षि पाणिनि ने *अष्टाध्यायी* में इसका अर्थ "हलोऽनन्तरा: संयोग:" किया है। अर्थात् स्वर रहित व्यञ्जनों (हल्) के व्यवधान रहित सामीप्य भाव को संयोग कहते हैं, यथा— महत्त्व में त्, त् तथा व् का संयोग है। इसी प्रकार—

- राम: उद्यानं गच्छति। उद्यानम् में 'द्' और 'य्' तथा गच्छति में 'च्' और 'छ्' का संयोग है।

- अयं रामस्य ग्रन्थ: अस्ति। रामस्य में 'स्' और 'य्', ग्रन्थ: में 'ग्' + 'र्' तथा 'न्' और 'थ्' तथा अस्ति में 'स्' और 'त्' का संयोग है।

संहिता

वर्णों के अत्यन्त सामीप्य अर्थात् व्यवधान रहित सामीप्य को संहिता कहते हैं (पर: सन्निकर्ष: संहिता)। वर्णों की संहिता की स्थिति में ही सन्धिकार्य होते हैं, जैसे— वाक् + ईश: में 'क्' + 'ई' में संहिता (अत्यन्त समीपता) के कारण सन्धि कार्य करने से 'वागीश:' पद बना है।

सम्प्रसारण

यण् (य्, व्, र्, ल्) के स्थान पर इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के प्रयोग को सम्प्रसारण कहते हैं (इग्यण: सम्प्रसारणम्)। जैसे— यज्- इज् ⟶ इज्यते, वच्- उच् ⟶ उच्यते इत्यादि।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितपदेभ्य: आगमवर्णान्, आदेशवर्णान् वा स्पष्टीकृत्य पृथक् कुरुत—

यथा— वृक्ष + छाया - वृक्षच्छाया — च् (आगम:)

यदि + अपि - यद्यपि - य् (आदेश:)

i) इति+ आदि - इत्यादि — (..................)

ii) तरु+ छाया - तरुच्छाया — (..................)

iii) अनु + छेद: - अनुच्छेद: — (..................)

iv) अनु+ इच्छति - अन्विच्छति — (..................)

प्र. 2. अधोलिखिततालिकात: पदसंज्ञकपदानि पृथक् कृत्वा लिखत—
स:, पठति, हरि, दृश्, हसामि, चल्, मुनी, चलति, ते।

प्र. 3. अधोलिखिततालिकायां प्रदत्तपदेषु संयोगस्य उदाहाणानि पृथक् कृत्वा लिखत—

महेश:, उष्ण:, वागीश:, महत्त्वम्, सज्जन:, क्लेश:, पावक:।

© NCERT not to be republished

0974CH03

तृतीय अध्याय

सन्धि

व्याकरण के संदर्भ में 'सन्धि' शब्द का अर्थ है वर्ण विकार। यह वर्ण विधि है। दो पदों या एक ही पद में दो वर्णों के परस्पर व्यवधानरहित सामीप्य अर्थात् संहिता में जो वर्ण विकार (परिवर्तन) होता है, उसे सन्धि कहते हैं, यथा— विद्या + आलय: = विद्यालय:। यहाँ पर विद्य् + आ + आ + लय: में आ + आ की अत्यन्त समीपता के कारण दो दीर्घ वर्णों के स्थान पर एक 'आ' वर्ण रूप दीर्घ एकादेश हो गया है। सन्धि के मुख्यतया तीन भेद होते हैं—

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि),
2. व्यंजन सन्धि (हल् सन्धि), एवं
3. विसर्ग सन्धि

1. स्वर (अच्) सन्धि

दो स्वर वर्णों की अत्यंत समीपता के कारण यथाप्राप्त वर्ण विकार को स्वर सन्धि कहते हैं। इसके निम्नलिखित भेद हैं—

i) **दीर्घ सन्धि (अक: सवर्णे दीर्घ:)**— यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरों के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमश: आ, ई, ऊ तथा ॠ हो जाते हैं।

अ/आ + आ/अ = आ   इ/ई + ई/इ = ई

उ/ऊ + ऊ/उ = ऊ   ऋ/ॠ + ॠ/ऋ = ॠ

उदाहरण—

पुस्तक + आलय:	=	पुस्तकालय:
देव + आशीष:	=	देवाशीष:

© NCERT not to be republished

दैत्य + अरि:	=	दैत्यारि:
च + अपि	=	चापि
विद्या + अर्थी	=	विद्यार्थी
गिरि + इन्द्र	=	गिरीन्द्र:
कपि + ईश:	=	कपीश:
मही + ईश:	=	महीश:
नदी + ईश:	=	नदीश:
लक्ष्मी + ईश्वर:	=	लक्ष्मीश्वर:
सु + उक्ति:	=	सूक्ति:
भानु + उदय:	=	भानूदय:
पितृ + ऋणम्	=	पितृणम्

ii) गुण* सन्धि (आद् गुण:)— यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए। दोनों के स्थान पर ए एकादेश हो जाता है। इसी तरह यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ओ' एकादेश हो जाते हैं। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद यदि 'ऋ' आए तो दोनों के स्थान पर 'अर्' एकादेश हो जाता है।

उदाहरण —

अ/आ + इ/ई	**=**	**ए**
उप + इन्द्र:	=	उपेन्द्र:
देव + इन्द्र:	=	देवेन्द्र:
गण + ईश:	=	गणेश:
महा + ईश:	=	महेश:
नर + ईश:	=	नरेश:
सुर + ईश:	=	सुरेश:

* अ, ए एवं ओ वर्णों को 'गुण' वर्ण कहा जाता है।

© NCERT not to be republished

लता + इव	=	लतेव
गंगा + इति	=	गंगेति
अ/आ + उ/ऊ	**=**	**ओ**
भाग्य + उदय:	=	भाग्योदय:
सूर्य + उदय:	=	सूर्योदय:
नर + उत्तम:	=	नरोत्तम:
हित + उपदेश:	=	हितोपदेश:
महा + उत्सव:	=	महोत्सव:
गंगा + उदकम्	=	गंगोदकम्
यथा + उचितम्	=	यथोचितम्
गंगा + ऊर्मि:	=	गंगोर्मि:
महा + ऊरु:	=	महोरु:
नव + ऊढ़ा	=	नवोढ़ा
अ/आ + ऋ/ॠ	**=**	**अर्**
देव + ऋषि	=	देवर्षि:
ग्रीष्म + ऋतु:	=	ग्रीष्मर्तु:
वर्षा + ऋतु	=	वर्षर्तु:

iii) वृद्धि* सन्धि (वृद्धिरेचि)— यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' एकादेश हो जाता है। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के स्थान पर 'औ' एकादेश हो जाता है।

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

उदाहरण—

मम + एव	=	ममैव
एक + एकम्	=	एकैकम्
तव + एव	=	तवैव

* आ, ऐ एवं औ वर्णों को 'वृद्धि' वर्ण कहते हैं।

© NCERT not to be republished

अद्य + एव	=	अद्यैव
लता + एव	=	लतैव
तथा + एव	=	तथैव
सदा + एव	=	सदैव
देव + ऐश्वर्यम्	=	देवैश्वर्यम्
आत्म + ऐक्यम्	=	आत्मैक्यम्
अ/आ + ओ/औ	**=**	**औ**
जल + ओघ:	=	जलौघ:
मम + ओषधि:	=	ममौषधि:
नव + ओषधि:	=	नवौषधि:
विद्या + औचित्यम्	=	विद्यौचित्यम्
आत्म + औत्सुक्यम्	=	आत्मौत्सुक्यम्

iv) **यण् संधि (इको यणचि)**— इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थान पर यण् (य्, व्, र्, ल्) हो जाता है। जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ ॠ, तथा लृ के बाद कोई असमान स्वर आए तो 'इ' को य्, उ को व्, ऋ, को 'र्' तथा 'लृ' को 'ल्' आदेश हो जाता है।

उदाहरण—

यदि + अपि	=	यद्यपि
इति + आदि	=	इत्यादि
अति + आचार:	=	अत्याचार:
इति + अवदत्	=	इत्यवदत्
नदी + आवेग:	=	नद्यावेग:
सखी + ऐश्वर्यम्	=	सख्यैश्वर्यम्
सु + आगतम्	=	स्वागतम्
अनु + अय:	=	अन्वय:
अनु + एषणम्	=	अन्वेषणम्

© NCERT not to be republished

मधु + अरिः	=	मध्वरिः
वधू + आगमनम्	=	वध्वागमनम्
पितृ + आदेशः	=	पित्रादेशः
पितृ + उपदेशः	=	पित्रुपदेशः
मातृ + आज्ञा	=	मात्राज्ञा
लृ + आकृतिः	=	लाकृतिः

v) **अयादि सन्धि (एचोऽयवायावः)**— जब ए, ऐ, ओ तथा औ के बाद कोई स्वर आए तो 'ए' को अय्, 'ऐ' को आय्, 'ओ' को अव् तथा 'औ' को आव् आदेश हो जाते हैं। इसे **अयादिचतुष्टय** के नाम से जाना जाता है।

उदाहरण—

ने + अनम्	=	नयनम्
शे + अनम्	=	शयनम्
नै + अकः	=	नायकः
भो + अनम्	=	भवनम्
भानो + ए	=	भानवे
पौ + अकः	=	पावकः
नौ + इकः	=	नाविकः
भौ + उकः	=	भावुकः

vi) **पूर्वरूप सन्धि (एङः पदान्तादति)**— पूर्वरूप सन्धि को अयादि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पद के अन्त में स्थित ए, ओ के बाद यदि ह्रस्व 'अ' आए तो 'ए+अ' दोनों के स्थान पर पूर्वरूप सन्धि 'ए' एकादेश तथा 'ओ+अ' दोनों के स्थान पर 'ओ' एकादेश हो जाता है। अर्थात् ए-ओ के पश्चात् आने वाला 'अ' अपना रूप ए-ओ में ही (विलीन कर) छुपा देता है। उस विलीन 'अ' का रूप लिपि में अवग्रह चिह्न (ऽ) द्वारा अंकित किया जाता है, जैसे— हरे + अत्र में हरयत्र होना चाहिए था परन्तु 'अ'

© NCERT not to be republished

'ए' में समा गया और रूप बना हरेऽत्र। यहाँ उच्चारण के समय 'हरेत्र' ही कहा जाता है (अवग्रह का उच्चारण नहीं होता)।

उदाहरण—

ते + अपि	=	तेऽपि
हरे + अव	=	हरेऽव
वृक्षे + अपि	=	वृक्षेऽपि
जले + अस्ति	=	जलेऽस्ति
गोपालो (गोपाल:) + अहम्	=	गोपालोऽहम्
विष्णो +अव	=	विष्णोऽव

प्रकृतिभाव

vii) 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्'— प्रकृतिभाव का अर्थ है सन्धि करने का निषेध करना, अर्थात् प्रकृत वर्णों में विकृति (परिवर्तन) न करके उन्हें ज्यों का त्यों बनाए रखना। वस्तुत: इसे सन्धि का भेद न कहकर सन्धि का अभाव ही कहना चाहिए क्योंकि सन्धि नियम के लागू होने की स्थिति में भी सन्धि कार्य नहीं होता। यदि कोई वर्ण प्लुत या प्रगृह्य संज्ञक होता है और उसके बाद अच् आता है तो प्लुत एवं प्रगृह्य वर्णों का सन्धि न होते हुए प्रकृति भाव होता है।

प्रगृह्य संज्ञा

(क) ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्,

(ख) अदसो मात्

(क) ईदन्त, ऊदन्त तथा एदन्त द्विवचन रूपों की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अर्थात् ऐसे द्विवचन, जिनके अन्त में ई, ऊ अथवा ए होता है, उनकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है तथा जिनकी प्रगृह्य संज्ञा होती हैं, उनके बाद अच् होने पर किसी भी प्रकार की सन्धि नहीं होती।

© NCERT not to be republished

यथा— कवी + इच्छतः, विष्णू + इमौ, बालिके + आगच्छतः, यहाँ पर कवी, विष्णू, तथा बालिके ये क्रमशः ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त द्विवचन के रूप होने के कारण प्रगृह्य संज्ञक हैं, अतः यहाँ किसी प्रकार की सन्धि नहीं होती, इसलिए ये कवी इच्छतः, विष्णू इमौ, बालिके आगच्छतः ही रहेंगे, न कि कवीच्छतः इत्यादि।

(ख) अदस् शब्द के 'म्' के बाद 'ई' या 'ऊ' आए तो वहाँ पर भी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

यथा— अमी + ईशाः, अमू + आसाते। यहाँ पर 'अमी' तथा 'अमू' प्रगृह्य संज्ञक हैं, अतः किसी भी प्रकार की सन्धि नहीं होगी।

- प्लुत वर्ण में प्रकृतिभाव का उदाहरण है, एहि कृष्ण३ अत्र गौश्चरति। यहाँ पर अ+अ में दीर्घ सन्धि नहीं हुई, क्योंकि सम्बोधन पद 'कृष्ण' में 'अ' प्लुत है।

viii) पररूप सन्धि (एङि पररूपम्)— उपसर्ग के 'अ' के पश्चात् यदि 'ए' या 'ओ' आए तो उनका पररूप एकादेश हो जाता है। इस पररूप सन्धि को वृद्धि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पररूप कार्य से तात्पर्य है कि जब पूर्वपद का अन्तिम वर्ण अगले शब्द के आदि वर्ण के समान होकर उसमें मिल जाए, जैसे— प्र + एजते = प्रेजते में वृद्धि कार्य प्रैजते होना चाहिए था, लेकिन 'प्र' में स्थित 'अ' की स्थिति 'ए' में ही मिल गई अर्थात् अ+ए इन दोनों के स्थान पर 'ए' एकादेश हो गया है। यहाँ पर 'अ' की अपनी सत्ता ही नहीं बची। अतः प्र + एजते = प्रेजते, उप + ओषति = उपोषति हुआ।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत—

यथा— चन्द्र + उदय: = चन्द्रोदय:/ चन्द्रौदय: / चन्द्रुदय:

उत्तरम्— चन्द्रोदय:

i) मातृ + ऋणम् = मातर्णम् / मातॄणम् / मातृणम् - ....
ii) यदि + अपि = यद्यपि / यदपि / यदापि - ....
iii) मत + ऐक्यम् = मतेक्यम् / मतैक्यम् / मत्येकम् - ....
iv) भानु + उदय: = भान्वुदय: / भानुदय: / भानूदय: - ....
v) भौ + उक: = भावक: / भाविक: / भावुक: - ....
vi) विष्णो + इह = विष्णविह / विष्णवेह / विष्णोह - ....
vii) सर्वे + अत्र = सर्वे अत्र / सर्वेऽत्र / सर्व अत्र - ....
viii) गङ्गा + इव = गङ्गैव / गङ्गोव / गङ्गेव - ....

प्र. 2. अधोलिखितेषु सन्धिविच्छेदं रूपं पूरयित्वा सन्धे: नाम अपि लिखत—

यथा— अन्वेषणम् अनु + एषणम् - यण् सन्धि—

i) तवैव — .... + एव — ....
ii) नदीव — नदी + ... — ....
iii) केऽपि — .... + अपि — ....
iv) अत्याचार: — अति + ... — ....
v) शयनम् — .... + अनम् — ....
vi) यथोचितम् — यथा + ... — ....

प्र. 3. यत्र प्रकृति भाव - सन्धि: अस्ति तत्पदं (√) इति चिह्नेन चिह्नीकुरुत यत्र च नास्ति तत्पदं (×) इति चिह्नेन चिह्नीकुरुत—

i) नदी एते ( )
ii) वृक्षे अपि ( )
iii) मुनी एतौ ( )
iv) साधू उपरि गच्छत: ( )

© NCERT not to be republished

v) सखी एषा ( )
vi) मुनी इच्छत: ( )
vii) सभायाम् कवी आगतौ ( )
viii) नदी इयं वहति ( )

प्र. 4. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

i) **कवीन्द्र:** अद्य नवीनां कवितां श्रावयति।

.... + ...

ii) कंस: सर्वेषु **अत्याचारम्** करोति स्म।

.... + ...

iii) गङ्गा **गङ्गेति** यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि स: पापेभ्य: विमुच्यते।

.... + ...

iv) यथा राम: पठति तथैव श्याम: पठति।

.... + ...

v) वानरा: सर्वत्र **वृक्षेऽपि** कूर्दन्ति।

.... + ...

© NCERT not to be republished

2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन के पश्चात् स्वर या दो व्यञ्जन वर्णों के परस्पर व्यवधानरहित सामीप्य की स्थिति में जो व्यञ्जन या हल् वर्ण का परिवर्तन हो जाता है, वह व्यञ्जन सन्धि कही जाती है।

i) श्चुत्व (स्तोः श्चुना श्चुः)

- 'स्' या 'त' वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) का 'श्' या 'च' वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) के साथ (आगे या पीछे) योग होने पर 'स्' का 'श्' तथा 'त' वर्ग का 'च' वर्ग में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण—

मनस् + चलति (स् + च् = श्च्)	=	मनश्चलति
रामस् + शेते (स् + श् = श्श्)	=	रामश्शेते
मनस् + चञ्चलम् (स् + च् = श्च्)	=	मनश्चञ्चलम्
हरिस् + शेते (स् + श् = श्श्)	=	हरिश्शेते

'त' वर्ग का 'च' वर्ग

उदाहरण—

सत् + चित् (त् + च् = च्च्)	=	सच्चित्
सत् + चरित्रम् (त् + च् = च्च्)	=	सच्चरित्रम्
उत् + चारणम् (त् + च् = च्च्)	=	उच्चारणम्
सत् + जनः (त्(द्)+ ज् = ज्ज्)	=	सज्जनः
उत् + ज्वलम् (त्(द्) + ज् = ज्ज्)	=	उज्ज्वलम्
जगत् + जननी (त्(द्) + ज् = ज्ज्)	=	जगज्जननी

ii) ष्टुत्व (ष्टुना ष्टुः)

- यदि 'स्' या 'त' वर्ग का 'ष्' या 'ट' वर्ग (ट, ठ, ड, ढ तथा ण) के साथ (आगे या पीछे) योग हो तो 'स्' का 'ष्' और 'त' वर्ग के स्थान पर 'ट' वर्ग हो जाता है।

not to be republished © NCERT

उदाहरण— 'स' वर्ग का 'ष्' वर्ग

रामस् + षष्ठ: (स् + ष् = ष्ष्) = रामष्षष्ठ:

हरिस् + टीकते (स् + ट = ष्ट) = हरिष्टीकते

'त' वर्ग का 'ट' वर्ग

उदाहरण—

तत् + टीका (त् + ट् = ट्ट) = तट्टीका

यत् + टीका (त् + ट् = ट्ट) = यट्टीका

उत् + डयनम् (त्(द्) + ड् = ड्ड) = उड्डयनम्

आकृष् + त: (ष् + त् = ष्ट) = आकृष्ट:

iii) जश्त्व (झलां जशोऽन्ते)

- पद के अन्त में स्थित झल् के स्थान पर जश् हो जाता है। झलों में वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण तथा श्, ष्, स् तथा ह् कुल 24 वर्ण आते हैं। इस तरह झल् के स्थान पर जश् (ज, ब, ग, ड, द) होता है। वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। ष्, श्, स्, ह् में ष् के स्थान पर 'ड्' आता है। अन्य का उदाहरण प्राय: नहीं मिलता है।

उदाहरण—

वाक् + ईश: (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = वागीश:

जगत् + ईश: (त् + स्वर = तृतीय वर्ण द् + स्वर) = जगदीश:

सुप् + अन्त: (प् + स्वर = तृतीय वर्ण ब् + स्वर) = सुबन्त:

अच् + अन्त: (च् + स्वर = तृतीय वर्ण ज् + स्वर) = अजन्त:

दिक् + अम्बर: (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = दिगम्बर:

दिक् + गज: (क् + ग् = ग्ग्) = दिग्गज:

सत् + धर्म: (त् + ध् = द्ध) = सद्धर्म:

अप् + जम् (प् + ज् = ब्ज्) = अब्जम्

चित् + रूपम् (त् + र् = द्र्) = चिद्रूपम्

© NCERT not to be republished

iv) चर्त्व (खरि च)

- यदि वर्गों (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग) के द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण के बाद वर्ग का प्रथम या द्वितीय वर्ण या श्, ष्, स् आए तो पहले आने वाला वर्ण अपने ही वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है।

उदाहरण—

सद् + कारः (द् + क् = त्क्)	=	सत्कारः
लभ् + स्यते (भ् + स् = प्स्)	=	लप्स्यते
दिग् + पालः (ग् + प् = क्प्)	=	दिक्पालः

v) अनुस्वार (मोऽनुस्वारः)

- यदि किसी पद के अन्त में 'म्' हो तथा उसके बाद कोई व्यञ्जन आए तो 'म्' का अनुस्वार (ं) हो जाता है।

उदाहरण—

हरिम् + वन्दे	=	हरिं वन्दे
अहम् + गच्छामि	=	अहं गच्छामि

vi) परसवर्ण (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः)

- अनुस्वार के बाद कोई भी वर्गीय व्यञ्जन आए तो अनुस्वार के स्थान पर आगे वाले वर्ण के वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है। यह नियम पदान्त में कभी नहीं भी लगता है।

उदाहरण—

पदान्त में - संस्कृतं पठति।
संस्कृतम्पठति

अं + कितः (ं + क् = ङ्क)	=	अङ्कितः
सं + कल्पः (ं + क् = ङ्क)	=	सङ्कल्पः
कुं + ठितः (ं + ठ = ण्ठ)	=	कुण्ठितः
अं + चितः (ं + च् = ञ्च)	=	अञ्चितः

© NCERT not to be republished

vii) लत्व (तोर्लि)

- यदि "त" वर्ग के बाद 'ल्' आए तो तवर्ग के वर्णों का 'ल्' हो जाता है। किन्तु 'न्' के बाद 'ल्' के आने पर अनुनासिक 'लँ' होता है। 'लँ' का आनुनासिक्य चिह्न पूर्व वर्ण पर पड़ता है।

उदाहरण—

उत् + लङ्घनम् (त् + ल् = ल्ल्)	=	उल्लङ्घनम्
तत् + लीन : (त् + ल् = ल्ल्)	=	तल्लीन:
उत् + लिखितम् (त् + ल् = ल्ल्)	=	उल्लिखितम्
उत् + लेख: (त् + ल् = ल्ल्)	=	उल्लेख:
महान् + लाभ: (न + ल् = ल्ल्)	=	महाँल्लाभ:
विद्वान् + लिखति (न् + ल् = ल्ल्)	=	विद्वाँल्लिखति

viii) छत्व (शश्छोऽटि)

- यदि 'श्' के पूर्व पदान्त में किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण हो या र्, ल्, व् अथवा ह् हो तो श् के स्थान पर 'छ्' हो जाता है।

उदाहरण—

एतत् + शोभनम् (त् + श् = च्छ्)	=	एतच्छोभनम्
तत् + श्रुत्वा (त् + श् = च्छ्)	=	तच्छ्रुत्वा

ix) 'च्' का आगम— (छे च)

- यदि ह्रस्व स्वर के पश्चात् 'छ्' आए तो 'छ्' के पूर्व 'च्' का आगम होता है।

उदाहरण—

तरु + छाया (उ + छ् = उ + च् + छ्)	=	तरुच्छाया
अनु + छेद: (उ + छ् = उ + च् + छ्)	=	अनुच्छेद:
परि + छेद: (इ + छ् = इ + च् + छ्)	=	परिच्छेद:

x) 'र्' का लोप तथा पूर्व स्वर का दीर्घ होना (रो रि)

उदाहरण—

- यदि 'र्' के बाद 'र्' हो तो पहले 'र्' का लोप हो जाता है तथा उसका पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण—

स्वर् + राज्यम् (र् + र् = आ + र्)	=	स्वाराज्यम्
निर् + रोग: (र् + र् = ई + र्)	=	नीरोग:
निर् + रस: (र् + र् = ई + र्)	=	नीरस:

xi) न् का ण् होना—

- यदि एक ही पद में ऋ, र् या ष् के पश्चात् 'न्' आए तो 'न्' का 'ण्' हो जाता है।

उदाहरण— कृष्ण, विष्णु, स्वर्ण, वर्ण इत्यादि।

- अट् अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, कवर्ग, पवर्ग, आङ् तथा नुम् इन वर्णों के व्यवधान में भी यह णत्व विधि प्रवृत्त हो जाती है।

उदाहरण—

नरा + नाम्	=	नराणाम्
ऋषी +नाम्	=	ऋषीणाम्

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितं सन्धिविच्छेदरूपं पूरयत—

i) दिगम्बर: — .... + अम्बर: (दिक् / दिग्)
ii) मच्छिर: — मत् + ... (छिर: / शिर:)
iii) जगदीश: — .... + ईश: (जगत् / जगद्)
iv) अयं गच्छति — .... + गच्छति (अयं / अयम्)
v) नीरोग: — .... + रोग: (निर् / नीर्)
vi) तल्लीन: — तत् + ... (लिन: / लीन:)

प्र. 2. समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत —

i) सत् + जन: — सज्जन: / सत्जन: ....
ii) तत् + श्रुत्वा — तच्श्रुत्वा / तच्छ्रुत्वा ....
iii) विद्वान् + लिखति — विद्वांल्लिखति / विद्वाँल्लिखति ....
iv) सम् + कल्प: — सम्कल्प: / सङ्कल्प: ....
v) उत् + लेख: — उल्लेख: / उच्लेख: ....

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानां यथापेक्षं सन्धिम् अथवा सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

i) सर्वे **जगच्छिवानि** कार्याणि कुर्वन्तु। ....
ii) यत्पाठे **उत् + लिखितम्** तत् सर्वं पठत। ....
iii) **नीरोग:** जन: सुखी भवति। ....
vi) कोकिल: **पं + चमे** स्वरे गायति। ....
v) स: **तरुच्छायायाम्** पठति। ....
vi) मानी **मानम् + न** त्यजति। ....

© NCERT not to be republished

3. विसर्ग सन्धि

विसर्ग (:) के पश्चात् स्वर या व्यञ्जन वर्ण के आने पर विसर्ग के स्थान पर होने वाले परिवर्तन को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

i) सत्व (विसर्जनीयस्य स:)— यदि विसर्ग (:) के बाद खर् प्रत्याहार के वर्ण (अर्थात् प्रत्येक वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स्) हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। परन्तु यदि विसर्ग (:) के बाद श् हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर श् आयेगा तथा यदि ट् या ठ् हो तो विसर्ग (:) का 'ष्' हो जाता है।

उदाहरण—

नम: + ते	**=**	**(: + ते = स्ते)**	**नमस्ते**
बालक: + तरति	=	(: + त = स्त)	बालकस्तरति
इत: + तत:	=	(: + त = स्त)	इतस्तत:
नि: + चल:	=	(: + च = श्च)	निश्चल:
शिर: + छेद:	=	(: + छे = श्छे)	शिरश्छेद:
धनु: + टङ्कार:	=	(: + ट = ष्ट)	धनुष्टङ्कार:

ii) षत्व— यदि विसर्ग (:) के पूर्व 'इ' या 'उ' हो तथा बाद में क्, ख् या प्, फ् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर ष् हो जाता है।

उदाहरण—

नि: + कपट: = (: + क = ष्क) निष्कपट:

नि: + फल: = (: + फ = ष्फ) निष्फल:

दु: + कर्म = (: + क = ष्क) दुष्कर्म

यदि नम: और पुर: के बाद क्, ख् या प्, फ् आए तो विसर्ग (:) का स् हो जाता है।

नम: + कार: (: + क = स्का) नमस्कार:

पुर: + कार: (: + क = स्का) पुरस्कार:

iii) विसर्ग का रुत्व-उत्व, गुण तथा पूर्वरूप (अतो रोरप्लुतादप्लुते)— यदि विसर्ग (:) से पहले ह्रस्व 'अ' हो तथा उसके पश्चात् भी ह्रस्व 'अ' हो तो विसर्ग को 'रु' आदेश, 'रु' के स्थान पर 'उ' आदेश, उसके बाद अ + उ के स्थान पर गुण 'ओ' तथा ओ + अ के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश करने पर 'ओ' ही रहता है। 'ओ' के बाद 'अ' की स्थिति अवग्रह के चिह्न (ऽ) के द्वारा दिखाई जाती है।

उदाहरण—

बाल: + अयम्

विसर्ग को उ आदेश ⟹ बाल् + अ + : + अयम् = बाल्
अ + उ + अयम्

अ + उ को ओ आदेश ⟹ बाल् + अ + उ + अयम् =
बाल् + ओ + अयम्

ओ + अ को ऽ परिवर्तितरूप ⟹ बालो + अयम् = बालोऽयम्

स: + अवदत् = सोऽवदत्
नृप: + अवदत् = नृपोऽवदत्
प्रथम: + अध्याय: = प्रथमोऽध्याय:

(हशि च)— यदि विसर्ग (:) से पहले अ हो तथा बाद में वर्गों के तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व् या ह्, हो तो विसर्ग के स्थान पर र, पुन: र् आदेश का उ, तदनन्तर अ + उ को गुण होकर 'ओ' हो जाता है।

उदाहरण—

तप: + वनम्	=	तप् + अ + (:) + वनम्
	=	तप् + अ + र् + वनम्
	=	तप् + अ + उ + वनम् (र् के स्थान पर उ)
	=	तप् + ओ + वनम् (अ + उ = ओ)
	=	तपोवनम्
मन: + रथ:	=	मनोरथ:
बाल: + गच्छति	=	बालो गच्छति

iv) **रुत्व (: = र्)**— यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर या घोष व्यञ्जन हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर र् हो जाता है।

उदाहरण—

मुनि: + अयम्	=	मुन् + इ + : + अयम्
	=	मुन् + इ + र् + अयम्
	=	मुनिरयम्
हरि: + आगच्छति	=	हरिरागच्छति
गुरु: + जयति	=	गुरुर्जयति

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत—

i) इत: + तत: — इतस्तत: / इतश्तत: ....

ii) दु: + कर्म — दुश्कर्म / दुष्कर्म ....

iii) शिव: + अवदत् — शिवावदत् / शिवोऽवदत् ....

iv) मुनि: + आगच्छति — मुनिरागच्छति / मुनिरगच्छित ....

v) मन: + रथ: — मनरथ: / मनोरथ: ....

vi) छात्र: + अयम् — छात्रोऽयम् / छात्रायम् ....

vii) प्रथम: + नाम — प्रथमो नाम / प्रथमोऽनाम ....

viii) कपि + चलति — कपिर्चलति / कपिश्चलति ....

प्र. 2. सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

i) कीटोऽपि — .... + अपि।

ii) भोजो नाम — .... + नाम।

iii) वर्षयोरुपरान्तम् — वर्षयो: + ... ।

iv) शिविर्जयति — .... + जयति ।

v) कैश्चित् — कै: + ... ।

vi) महापुरुषैरपि — .... + अपि।

vii) नमस्कार: — नम: + ... ।

viii) धनुष्टङ्कार: — .... + टङ्कार: ।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

i) **पितुरिच्छा** वर्तते।

.... + ...

ii) छात्र: **तपोवनम्** गच्छति।

.... + ...

iii) अध्यापक: उत्तमं छात्रं **पुरस्करोति**।

.... + ...

not to be republished © NCERT

iv) मन्दबुद्धिः सेवकः स्वामिनः **मनस्तापस्य** कारणमभवत्।

.... + ...

v) **निष्कपटः** जनः शोभते।

.... + ...

vi) **बालो गच्छति**।

.... + ...

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु संयोगं कृत्वा पदनिर्माणं कुरुत—

i) त् + र् + आयते = ...

ii) उ + ष् + ण् + अम् = ...

iii) म् + ल् + आनम् = ...

iv) ग् + ल् + आनि: = ...

v) नि + ष् + क +र् + ष् + अ: = ...

प्र. 2. रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) क्लेश: = ... + ... + एश:।

ii) स्वभाव: = स् + ... + अभाव:।

iii) कर्म = क् + अ + र् + ... + अ।

iv) उच्छ्वास: = उ + ... + ... + ... + आस:।

v) उल्लास: = उ + ... + ... + आस:।

प्र. 3. अधोलिखितानि यथापेक्षितं योजयत—

i) जननीजनकविहीनम् अनाथम् पश्यामि = ...

ii) सीता पुस्तकम् अपठत् = ...

iii) कुरु न त्वम् अनर्थम् = ...

iv) बालकम् अनाथम् पालय = ...

v) सर्वम् अहर्निशं मानय = ...

प्र. 4. सन्धिविच्छेदरूपं पूरयत—

i) वृक्षच्छायायाम् =...................... + छायायाम्

ii) नाववतु =...................... + अवतु

iii) वागर्थाविव = वाक् + ... + इव

iv) कोऽत्र = ... + अत्र

© NCERT not to be republished

v) वेत्तासि = वेत्ता + ...
vi) महोदय: = महा + ...
vii) सर्वैरत्र = ... + अत्र
viii) अभ्युदय: = अभि + ...
ix) तदर्थम् = तत् + ...
x) शरच्चन्द्र: =....................... + चन्द्र:

प्र. 5. सन्धिं कृत्वा लिखत—

i) जगत् + जननी = ...
ii) महा + ऐश्वर्यम् = ...
iii) न + अधीतम् = ...
iv) अह: + अह: = ...
v) जीवति + अनाथ: + अपि = ...
vi) गृहे + अपि = ...
vii) जगत् + माता = ...
viii) महान् + लिखति = ...
ix) द्वौ + एतौ = ...
x) यत् + भविष्य: + विनश्यति = ...

© NCERT not to be republished

0074CH04

चतुर्थ अध्याय

शब्दरूप सामान्य परिचय

© NCERT not to be republished

वाक्य की सबसे छोटी इकाई को शब्द कहते हैं। शब्दों के अनेक रूप (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) होते हैं। व्याकरण की भाषा में क्रियापदों को छोड़कर वाक्य के अन्य पदों को नाम कहा जाता है। इस प्रकार किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव (क्रिया) आदि का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। संस्कृत भाषा में प्रयोग करने के लिए इन शब्दों को 'पद' बनाया जाता है। संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों को पद बनाने हेतु इनमें प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। इन शब्दरूपों (पदों) का प्रयोग (पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में भिन्न-भिन्न रूपों में) होता है। इन्हें सामान्यतया शब्दरूप कहा जाता है।

संज्ञा आदि शब्दों में जुड़ने वाली विभक्तियाँ सात होती हैं। इन विभक्तियों के तीनों वचनों (एक, द्वि, बहु) में बनने वाले रूपों के लिए जिन विभक्ति-प्रत्ययों की पाणिनि द्वारा कल्पना की गई है, वे 'सुप्' कहलाते हैं। इनका परिचय इस प्रकार है—

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सु (स् = :)	औ	जस् (अस्)
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अस्)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भिः)
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
पञ्चमी	ङसि (अस्)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
षष्ठी	ङस् (अस्)	ओस् (ओः)	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस् (ओः)	सुप् (सु)

ये प्रत्यय शब्दों के साथ जुड़कर अनेक रूप बनाते हैं।

इन विभक्तियों के अतिरिक्त सम्बोधन के लिए भी प्रथमा विभक्ति के ही प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, किन्तु सम्बोधन एकवचन में प्रथमा एकवचन से रूपों में अन्तर होता है। रूप निर्देश से रूपभेद को स्पष्ट किया गया है—

शब्दों के विभिन्न रूपों में भेद होने के कारण 'संज्ञा' आदि शब्दों को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

1. संज्ञा शब्द
2. सर्वनाम शब्द
3. संख्यावाचक शब्द

संज्ञा शब्दों के अन्त में 'स्वर' अथवा व्यञ्जन होने के कारण इन्हें पुन: दो वर्गों में रखा जा सकता है—

स्वरान्त (अजन्त)

स्वरान्त (अजन्त) अर्थात् जिन शब्दों के अन्त में अ, आ, इ, ई आदि स्वर होते हैं, उन्हें स्वरान्त कहा जाता है। इनका वर्गीकरण इस प्रकार है—

अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, ऋकारान्त, एकारान्त, ओकारान्त तथा औकारान्त आदि।

यथा— बालक, गुरु, कवि, नदी, लता, पितृ, गो आदि।

व्यञ्जनान्त (हलन्त)

जिन शब्दों के अन्त में क्, च्, ट्, त् आदि व्यञ्जन होते हैं, उन्हें व्यञ्जनान्त कहा जाता है। ङ्, ञ्, ण्, य् इन व्यञ्जनों को छोड़कर प्राय: सभी व्यञ्जनों से अन्त होने वाले शब्द पाए जाते हैं। इनमें भी च्, ज्, त्, द्, ध्, न्, श्, ष्, स् और ह् व्यञ्जनों से अन्त होने वाले शब्द अधिकतर प्रयुक्त होते हैं। अत: इनकी गणना चकारान्त, जकारान्त, तकारान्त, दकारान्त, धकारान्त, नकारान्त, पकारान्त, भकारान्त, रकारान्त, वकारान्त, शकारान्त, षकारान्त, सकारान्त, हकारान्त आदि रूपों में की जाती है,

यथा— जलमुच्, भूभृत्, श्रीमत्, जगत्, राजन्, दिश्, पयस् आदि।

यहाँ अकारान्त पुँल्लिङ्ग 'बालक', आकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'बालिका', अकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'फल' और नकारान्त पुँल्लिङ्ग 'राजन्' शब्दों के विभिन्न विभक्तियों में रूप दिए जा रहे हैं—

1. अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'बालक'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालक:	बालकौ	बालका:
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकै:
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो:	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयो:	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ !	हे बालका:!

वृक्ष, अध्यापक, छात्र, नर, देव आदि सभी अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होंगे।

2. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'बालिका'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिका:
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिका:
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभि:
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्य:
पञ्चमी	बालिकाया:	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्य:
षष्ठी	बालिकाया:	बालिकयो:	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयो:	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके !	हे बालिके !	हे बालिका: !

लता, बाला, विद्या आदि सभी आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होंगे।

© NCERT not to be republished

3. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'फल'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलै:
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्य:
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्य:
षष्ठी	फलस्य	फलयो:	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयो:	फलेषु
सम्बोधन	हे फलम् !	हे फले!	हे फलानि!

टिप्पणी— अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के तृतीया विभक्ति से सप्तमी विभक्ति तक के रूप अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूपों की भाँति ही होते हैं। अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों (मित्र, वन, अरण्य, मुख, कमल, पुष्प आदि) के रूप भी इसी प्रकार होंगे।

4. नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'राजन्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजान:
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञ:
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:
पञ्चमी	राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:
षष्ठी	राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञो:	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजान:!

पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य शब्दों के रूप परिशिष्ट में दिए गए हैं। अत: अधोलिखित स्वरान्त, व्यञ्जनान्त एवं सर्वनाम शब्दों के रूप परिशिष्ट में द्रष्टव्य हैं—

(क) स्वरान्त— लता, मुनि, पति, भूपति, नदी, भानु, धेनु, मधु, पितृ, मातृ, गो, द्यौ, नौ और अक्षि।

(ख) व्यञ्जनान्त— भवत्, आत्मन्, विद्वस्, चन्द्रमस्, वाच्, गच्छत्, (शत्रन्त), पुम्, पथिन्, गिर्, अहन् और पयस्।

(ग) सर्वनाम— सर्व, यत्, तत्, एतत्, किम्, इदम् (सभी लिङ्गों में) अस्मद्, युष्मद्, अदस्, ईदृश्, कतिपय, उभ और कीदृश्।

(घ) संख्याशब्द— एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पञ्चन् आदि।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठके प्रदत्तपदानां समुचितविभक्तिप्रयोगेण वाक्यानि पूरयत—

i) .... जलं पवित्रं वर्तते। (गङ्गा, षष्ठी, एकवचन)

ii) .... इदं कार्यं कृतम्। (बालिका, तृतीया, बहुवचन)

iii) .... प्रातः भानुः उदेति। (गगन, सप्तमी, एकवचन)

iv) .... दुग्धं मधुरं भवति। (धेनु, षष्ठी, एकवचन)

v) .... नौकया तरति। (नदी, द्वितीया, एकवचन)

vi) .... वचांसि सम्माननीयानि। (विद्वस्, षष्ठी, बहुवचन)

vii) सः .... उपगम्य किं करोति? (भवत्, पुँल्लिङ्ग, द्वितीया, एकवचन)

viii) ....बालकेन पुष्पं त्रोटितम्। (गच्छत्, तृतीया, एकवचन)

ix) .... बालकेभ्यः आचार्यः पुस्तकानि आनयत्। (एतत् पुँल्लिङ्ग, चतुर्थी, बहुवचन)

x) .... बालिकाः उद्याने क्रीडन्ति। (तत्, स्त्री, प्रथमा, बहुवचन)

प्र. 2. कोष्ठके प्रदत्तपदेभ्यः समुचितं पदं चित्वा वाक्यानि पूरयत—

i) .... उत्तमकार्याणि कुर्मः। (वयम्/यूयम्/ते)

ii) .... प्रकाशः ग्रीष्मकाले प्रचण्डः। (भानुना/भानोः/भानुम्)

iii) .... शीतलता ग्रीष्मकाले सर्वेभ्यः रोचते। (चन्द्रमसे/चन्द्रमसा/चन्द्रमसः)

iv) .... बहवः गुणाः सन्ति। (मधु/मधुने/मधुनि)

v) .... तपसः फलं लभन्ते। (मुनिः/मुनी/मुनयः)

vi) उत्तमबालकाः .... सेवन्ते। (मातरम्/मात्रे/मातरि)

vii) .... कार्ये कः क्षमः ? (अस्मात्/ अस्य/अस्मिन्)

viii) विद्या .... शोभते, नहि धनम्। (राज्ञः/राजसु/राज्ञाम्)

ix) .... बालकान् अत्र आह्वय। (सर्वेषाम्/सर्वैः/सर्वान्)

x) .... सन्मार्गं प्रदर्शयन्ति। (साधुः/साधू/साधवः)

© NCERT not to be republished

पञ्चम अध्याय

धातुरूप सामान्य परिचय

जिस शब्द द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं और क्रियापद के मूलरूप को धातु कहा जाता है। उदाहरणार्थ— रामः पुस्तकं पठति। इस वाक्य में राम कर्ता है और उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। यहाँ 'पठ्' धातु के द्वारा पढ़ना क्रिया का होना प्रकट होता है। जिससे 'पठति' रूप बना है।

- संस्कृत साहित्य में विभिन्न अर्थों को बताने के लिए अनेक धातुएँ हैं। इनका विभाजन 10 गणों में किया गया है।

1. भ्वादिगण
2. अदादिगण
3. जुहोत्यादिगण
4. दिवादिगण
5. स्वादिगण
6. रुधादिगण
7. तुदादिगण
8. तनादिगण
9. क्र्यादिगण
10. चुरादिगण

गणों के नामकरण का आधार उस गण में आने वाली प्रथम धातु है, जैसे— 'भ्वादिगण' का आधार उसमें सर्वप्रथम आनेवाली 'भू' धातु है (भू + आदि)। 'चुरादिगण' का आधार सर्वप्रथम आने वाली 'चुर्' धातु है। इसी प्रकार अन्य गणों का नामकरण भी उनके प्रथम धातु पर ही आधारित है।

© NCERT not to be republished

इसके अतिरिक्त प्रत्येक गण में तीन प्रकार की धातुएँ पाई जाती हैं—

i) परस्मैपदी

ii) आत्मनेपदी

iii) उभयपदी

परस्मैपदी धातुओं के वर्तमानकाल में 'ति', 'त':, 'अन्ति' (पठति, पठत:, पठन्ति) रूप पाया जाता है और आत्मनेपदी धातुओं में 'ते', 'इते', 'अन्ते' (सेवते, सेवेते, सेवन्ते)। पठ्, लिख्, गम् आदि धातुओं का परस्मैपद में प्रयोग होता है, जब कि 'सेव्', 'मुद', 'लभ्' आदि धातुओं का आत्मनेपद में प्रयोग किया जाता है। इनके अतिरिक्त कुछ धातुएँ ऐसी भी हैं जो उभयपदी हैं, जिनमें दोनों ही प्रकार के रूप पाए जाते हैं। इनमें 'कृ', 'ब्रू', 'पच्' आदि धातुएँ उल्लिखित की जा सकती हैं कृ (प.) करोति, (आ.) कुरुते। उभयपदी धातुओं का यदि क्रिया फल कर्तृगामी हो, तो आत्मनेपद एवं परगामी हो तो परस्मैपद का प्रयोग किया जाता है।

- काल एवं विधि आदि अर्थों के आधार पर संस्कृत व्याकरण में दस लकार पाए जाते हैं—

1. लट् लकार
2. लिट् लकार
3. लुट् लकार
4. लृट् लकार
5. लेट् लकार
6. लोट् लकार
7. लङ् लकार
8. लिङ् लकार (विधिलिङ् + आशीर्लिङ्)
9. लुङ् लकार
10. लृङ् लकार।

लट् लकार— वर्तमानकाल को व्यक्त करने के लिए लट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— राम: पाठं पठति।
छात्र: गुरुं सेवते।

लिट् लकार— लिट् लकार का प्रयोग ऐसी घटना का वर्णन करने के लिए होता है जो हमारी आँखों के सामने न घटी हो और ऐतिहासिक भी हो।

यथा— राम: रावणं **जघान।**

लुट् लकार— भविष्य काल की क्रिया को व्यक्त करने के लिए लुट् लकार का प्रयोग किया जाता है। किन्तु यह काल अद्यतन 'आज का' नहीं होना चाहिए।

यथा— श्व: प्रधानमंत्री रूसदेशं **गन्ता।**

लृट् लकार— सामान्य भविष्यत् काल की घटनाओं को व्यक्त करने के लिए लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— स: लेखं **लेखिष्यति।**

लेट् लकार— अनेक कालों तथा अनेक मनोभावों को प्रकट करने वाले इस लकार का प्रयोग वेद में ही पाया जाता है। लौकिक संस्कृत में इसका अभाव है।

लोट् लकार— आज्ञा देने के भाव को प्रकट करने के लिए लोट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— स: गृहकार्यं करोतु।

लङ् लकार— अनद्यतन भूतकाल की क्रिया को बताने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— राम: पाठम् **अपठत्।**

विधिलिङ्— 'चाहिए', 'करे' आदि विध्यात्मक भावों को प्रकट करने के लिए विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है।

यथा— स: लेखं **लिखेत्।**

लिङ् का एक भेद **आशीर्लिङ्** भी है, जिसका प्रयोग आशीर्वाद देने के लिए होता है।

यथा— त्वं चिरायु: **भूया:।**

© NCERT not to be republished

लुङ् लकार— सामान्य भूतकाल की क्रिया को व्यक्त करने के लिए लुङ्लकार का प्रयोग किया जाता है।

यथा— पुरा राजा नल: **अभूत्।**

लृङ् लकार— भाषा में कभी ऐसी स्थिति भी आती है जब किसी एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया में सफलता नहीं मिलती। वैसी स्थिति में लृङ्लकार का प्रयोग होता है।

यथा— यदि वर्षा अभविष्यत् तर्हि दुर्भिक्षं **नाभविष्यत्।**

परस्मैपदी क्रियाओं में लगने वाले नौ प्रत्यय हैं जो निम्नलिखित हैं—

पुरुष	*एकवचन*	*द्विवचन*	*बहुवचन*
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी क्रियाओं में भी नौ प्रत्यय होते हैं—

पुरुष	*एकवचन*	*द्विवचन*	*बहुवचन*
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्

छात्रों की सुविधा के लिए माध्यमिक स्तर को दृष्टि में रखते हुए पाँच लकारों में प्रयोग होने वाले प्रत्यय यहाँ दिए जा रहे हैं। इनकी सहायता से छात्रों को धातुरूपों को याद रखने में सहायता मिलेगी।

लट् लकार (वर्तमानकाल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए. व.	*द्वि. व.*	*ब. व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पुरुष	ति	त:	अन्ति	ते	इते	अन्ते
मध्यम पुरुष	सि	थ:	थ	से	इथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	मि	व:	म:	इ	वहे	महे

लङ् लकार (भूतकाल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए.व.	*द्वि. व.*	*ब. व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्	त	इताम्	अन्त
मध्यम पुरुष	:	तम्	त	था:	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम	इ	वहि	महि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए. व.	*द्वि. व.*	*ब. व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पुरुष	स्यति	स्यत:	स्यन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथ:	स्यथ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्याव:	स्याम:	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए. व.	*द्वि. व.*	*ब. व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्
मध्यम पुरुष	अ	तम्	त	स्व	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

विधिलिङ् (चाहिए के योग में)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए. व.	*द्वि. व.*	*ब. व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पुरुष	इत्	इताम्	इयु:	ईत	ईयाताम्	ईरन्
मध्यम पुरुष	इ:	इतम्	इत	ईथा:	ईयाथाम्	ईध्वम्
उत्तम पुरुष	इयम्	इव	इम	ईय	ईवहि	ईमहि

परस्मैपदी पठ् और आत्मनेपदी सेव् धातुओं के सभी पुरुषों और वचनों में रूप इस प्रकार बनते हैं—

लट् लकार (वर्तमान काल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए. व.	*द्वि. व.*	*ब. व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए.व.	*द्वि.व.*	*ब.व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व.*
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	अपठ:	अपठतम्	अपठत	असेवथा:	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए.व.	*द्वि.व.*	*ब.व*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पु.	पठिष्यति	पठिष्यत:	पठिष्यन्ति	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथ:	पठिष्यथ	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पु.	पठिष्यामि	पठिष्याव:	पठिष्याम:	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए.व.	*द्वि.व.*	*ब.व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व*
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

© NCERT not to be republished

विधिलिङ् (चाहिए के योग में)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			*आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय*		
	ए.व.	*द्वि.व.*	*ब.व.*	*ए.व.*	*द्वि.व.*	*ब.व.*
प्रथम पु.	पठेत्	पठेताम्	पठेयु:	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पु.	पठे:	पठेतम्	पठेत	सेवेथा:	सेवेयाथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पु.	पठेयम्	पठेव	पठेम	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य धातुओं के पाँचों लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् और लृट्) सभी पुरुषों और वचनों के रूप परिशिष्ट में दिए गए हैं। उन धातुओं को वहाँ से पढ़ें और समझें।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठके प्रदत्तधातोः निर्दिष्टलकारे समुचितप्रयोगेण वाक्यानि पूरयत—

i) बालकाः पुस्तकानि .... । (पठ्-लट्)
ii) पुस्तकानि पठित्वा ते विद्वांसः .... । (भू-लृट्)
iii) यूयम् उद्याने कदा .... । (क्रीड्-लङ्)
iv) किम् आवाम् अद्य .... । (भ्रम्-लोट्)
v) त्वम् ध्यानेन पाठं .... । (पठ्-विधिलिङ्)
vi) साधवः तपः .... । (तप्-लट्)
vii) वयम् उत्तमान् अङ्कान् .... । (लभ्-लृट्)
viii) नाटकं दृष्ट्वा सर्वे .... । (मुद्-लङ्)
ix) पितरं वार्धक्ये पुत्रः अवश्यं .... । (सेव्-लोट्)
x) हे प्रभो ! संसारे कोऽपि भिक्षां न .... । (याच्-विधिलिङ्)

प्र. 2. कोष्ठकात् समुचितं क्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत—

i) अद्य युवाम् विद्यालयं किमर्थं न ....? (अगच्छताम्/ अगच्छतम्/अगच्छत)
ii) पुरा जनाः संस्कृतभाषया .... । (भाषन्ते/भाषामहे/ अभाषन्त)
iii) यूयम् कं पाठम् .... ? (अपठत/ अपठत्/ अपठन्)
iv) जीवाः सर्वेऽत्र .... भावयन्तः परस्परम् । (मोदताम्/ मोदेताम्/ मोदन्ताम्)
v) कक्षायाम् सर्वे ध्यानेन .... । (पठतु/ पठताम्/ पठन्तु)
vi) प्रभो मह्यम् बुद्धिम् .... । (यच्छ/ यच्छतम्/ यच्छत)
vii) वयं सदैव सुधीराः सुवीराः च .... । (भवेव/ भवेम/ भवेयम्)
viii) त्वं सायं कुत्र .... ? (गमिष्यसि/ गमिष्यथः/ गमिष्यथ)
ix) विद्वान् सर्वत्र .... । (पूज्यन्ते/ पूज्येते/ पूज्यते)
x) अद्यत्वे समाचारपत्रस्य महत्त्वं सर्वे .... । (जानाति/ जानन्ति/ जानासि)

not to be republished © NCERT

0074CH06

षष्ठ अध्याय

उपसर्ग

धातु रूपों तथा धातुओं से निष्पन्न शब्दरूपों से पूर्व प्रयुक्त होकर उनके अर्थ का परिवर्तन करने वाले शब्दों को उपसर्ग कहते हैं—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्।।

उपसर्गों के जुड़ने से पद का अर्थ बदल जाता है, यथा— हार शब्द का अर्थ है— 'माला', परन्तु जब उसमें 'प्र' उपसर्ग लगता है तो शब्द बनता है 'प्रहार' और उसका अर्थ होता है— मारना। इसी प्रकार 'आ' उपसर्ग लगने पर 'आहार' बनता है, जिसका अर्थ है— भोजन। इसी प्रकार यदि 'हार' शब्द में 'सम्' उपसर्ग जुड़ता है तो 'संहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ है नष्ट करना, परन्तु इसी शब्द में 'वि' उपसर्ग लगने पर 'विहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है— घूमना-फिरना। इसी तरह 'परि' उपसर्ग जुड़कर 'परिहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है— सुधार करना/त्याग करना। इस प्रकार हमने देखा कि अलग-अलग उपसर्गों के जुड़ने से शब्दों के अर्थों में परिवर्तन आ जाता है। उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

उपसर्गप्रयोगेण शब्दनिर्माणम्—	**एकस्य पदस्य वाक्यप्रयोगः**
1. **प्र** — प्रभवति, प्रकर्षः, प्रयत्नः, प्रतिष्ठा	गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
2. **परा** — पराजयते, पराभवति,	सैनिकः शत्रून् पराजयते।
3. **अप** — अपहरति, अपकरोति,	चौरः धनम् अपहरति।
4. **सम्** — संस्करोति, सङ्गच्छते,	अध्यापकः छात्रं संस्करोति।

5.	**अनु** — अनुगच्छति, अनुकरोति	शिष्य: गुरुम् अनुगच्छति।
6.	**अव** — अवगच्छति, अवतरति,	राम: भवन्तम् अवगच्छति। अवजानाति वा।
7.	**निर्** — निर्गच्छति, निराकरोति	प्राचार्य: कार्यालयात् निर्गच्छति।
8.	**निस्** — निष्कारणम्, निस्सरति	सर्प: बिलाद् निस्सरति।
9.	**दुस्** — दुस्त्याज्य:, दुष्प्रयोजनम्	स्वभाव: दुस्त्याज्य: भवति।
10.	**दुर्** — दुर्बोध्य:, दुर्लभ:	अयं गूढविषय: दुर्बोध्य: अस्ति।
11.	**वि** — विजयते, विहरति	धर्म: सदा विजयते।
12.	**आङ्** — आकण्ठम्, आजीवनम्	आकण्ठं जलं पीतम्।
13.	**नि** — निगदति, निपतति	पुत्र: पितरं निगदति।
14.	**अधि** — अधिराजते, अधिशेते	विद्वान् सर्वत्र अधिराजते।
15.	**अति** — अतिवाद:, अत्याचार:	अतिवादो न कर्तव्य:।
16.	**सु** — सुपुत्रेण, सुशोभते	उद्याने पुष्पाणि सुशोभन्ते।
17.	**उत्** — उड्डयते, उत्पतित:	पक्षिण: आकाशे उड्डयन्ते।
18.	**अभि** — अभिगच्छति, अभ्यागत:	अभ्यागत: सर्वै: सदा पूजनीय:।
19.	**प्रति** — प्रत्युपकार:, प्रत्यवदत्	पुत्री मातरं प्रत्यवदत्।
20.	**परि** — परित्यजामि, परिवर्तनम्	अहं दुष्टं परित्यजामि।
21.	**उप** — उपगच्छति, उपहरति	शिष्य: अध्ययनार्थं गुरुम् उपगच्छति।
22.	**अपि** — अपिदधाति	द्वारपाल: द्वारम् अपिदधाति (पिदधाति)।

© NCERT not to be republished

किसी भी धातु में उपसर्ग जुड़ने से अर्थ-परिवर्तन होता जाता है, यथा—

*√गम् — जाना

आ + √गम् ⟹ आगच्छति — आना

उप + √गम् ⟹ उपगच्छति — पास जाना

अनु + √गम् ⟹ अनुगच्छति — पीछे जाना

अव + √गम् ⟹ अवगच्छति — समझना

यहाँ हमें यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जब हमें किसी उपसर्ग युक्त धातु का वाक्य में प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है, तब धातुरूप के सामान्य प्रयोग में ही पदनिर्माण करने के पश्चात् निर्मित पद में उपसर्ग को सन्धि-नियमों के अनुसार जोड़ना चाहिए, यथा—

लकार	**धातुरूप**	**उपसर्ग + धातुरूप**
लट् गम्	गच्छति	अनुगच्छति
लृट्	गमिष्यति	अनुगमिष्यति
लङ्	अगच्छत्	अनुअगच्छत् - अन्वगच्छत्
(यण् सन्धि)		
लोट्	गच्छतु	अनुगच्छतु
विधिलिङ्	गच्छेत्	अनुगच्छेत्

* *'√' चिह्न धातु का संकेतक है। √गम् अर्थात् 'गम्' धातु।*

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गान् धातून् च पृथक् कृत्वा लिखत—

		उपसर्ग	धातु	क्रियापद
i)	उत्तिष्ठतु	....	....	....
ii)	निरगच्छन्	....	....	....
iii)	निस्सरतु	....	....	....
iv)	संवदन्ति	....	....	....
v)	प्रत्यवदत्	....	....	....
vi)	सुशोभते	....	....	....
vii)	विशिष्यते	....	....	....
viii)	अन्वकरोत्	....	....	....
ix)	प्रसीदामि	....	....	....
x)	अवागच्छत्	....	....	....
xi)	उपविशाम:	....	....	....
xii)	उत्थास्याम:	....	....	....
xiii)	उन्नयनम्	....	....	....
xiv)	अपाकुर्वन्	....	....	....
xv)	विजयते	....	....	....
xvi)	परितुष्यति	....	....	....

प्र.2. कोष्ठकात् शुद्धपदं चित्वा रिक्तस्थाने लिखत—

i) हे प्रभो ! मयि .... । (प्रासीदतु/प्रसीदतु)

ii) गुरु: शिष्यस्य अज्ञानम् .... । (उपहरति/अपहरति)

iii) वानरा: जनान् .... । (अनुकुर्वन्ति/अन्वकुर्वन्ति)

iv) अहं संस्कृतम् .... । (अवजानामि/अवाजानामि)

v) .... सत्यम् एव वदनीयम्। (आजीवनम्/आजीवन:)

vi) अध्यापक: प्रश्नान् पृच्छति। छात्रा: ....। (प्रतिवदन्ति/संवदन्ति)

vii) कामात् क्रोध: ———————— । (पराभवति/उद्भवति)

© NCERT not to be republished

viii) सभायाम् विद्वांसः एव .... । (सुशोभन्ते/सुशोभन्ति)

ix) चौरः रात्रौ धनम् .... । (व्यहरत्/अहरत्)

x) माता पुत्रः च परस्परम् .... । (प्रतिवदतः/संवदतः)

xi) गुरुः आश्रमात् .... । (प्रविशति/निर्गच्छति)

xii) नागरिकाः एव स्वदेशम् .... । (उद्गयन्ति/उन्नयन्ति)

xiii) वयं चलचित्रं द्रष्टुम् अत्र .... । (अवागच्छाम/आगच्छाम)

xiv) माता पुत्रम् .... । (संस्करोति/समकरोति)

xv) नदी पर्वतात् .... । (प्रवहति/उद्भवति)

प्र. 3. i) **हारः, योगः** इति शब्दाभ्यां सह अधोलिखितान् उपसर्गान् संयुज्य प्रत्येकं पदद्वयस्य निर्माणं कुरुत। निर्मितैः पदैः च सार्थकवाक्यानि रचयत—

उपसर्गाः— आ, वि, प्र, सु, सम्।

ii) **'भू' हृ,** इति एताभ्याम् धातुभ्यां प्राक् अधोलिखितान् उपसर्गान् संयुज्य प्रत्येकं पदद्वयस्य निर्माणं कुरुत। निर्मितैः पदैः च सार्थकवाक्यानि रचयत—

उपसर्गाः— प्र, अनु, सम्, अप, दुर्।

© NCERT not to be republished

0974CH07

अव्यय

संस्कृत के वे शब्द जो सर्वदा एक जैसे ही रहते हैं (जिनमें विभक्ति, वचन तथा लिङ्ग के आधार पर कोई परवर्तन नहीं होता है।) उन्हें अव्यय कहते हैं—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अव्यय	**अर्थ**
अचिरम्	शीघ्र ही
यावत्	जब तक
तावत्	तब तक
सहसा	अचानक
श्वः	आने वाला कल
ह्यः	बीता हुआ कल
शनैः शनैः	धीरे-धीरे
सम्प्रति/साम्प्रतम्/अधुना/इदानीम्	इस समय
अत्र	यहाँ
अत्यन्तम्	बहुत
अथ	आरम्भ या इसके बाद
अलम्	निषेधार्थक (योगे तृतीया वि.) पर्याप्त, समर्थ (योगे चतुर्थी विभक्ति)
अद्य	आज

© NCERT not to be republished

अथवा	या
अपि	भी
अन्यथा	नहीं तो
अत:	इसलिए
अतीव	बहुत अधिक
आम्	हाँ
इतस्तत:	इधर-उधर
इति	समाप्त, ऐसा
उच्चै:	जोर-जोर से, ऊँचे
एव	ही
एकदा	एक बार
एवम्	इस प्रकार, ऐसे
किम्	क्या
किन्तु	परन्तु, लेकिन
कदा	कब
कुत:	कहाँ से
कुत्र/ क्व/ क्वचित्	कहाँ
च	और
अभित:	दोनों ओर
परित:	चारों ओर
सर्वत:	सभी ओर
उभयत:	दोनों ओर
चेत्	यदि
चिरम्	देर से, देर तक
तत्र	वहाँ
इत:	इधर से, यहाँ से
तत:	उसके बाद, वहाँ से
तथापि	फिर भी

© NCERT not to be republished

तदा, तदानीम्	तब
तर्हि	तो
तु	तो
तावत्	तब तक
तूष्णीम्	चुप
दिवा	दिन
न	नहीं
नीचै:	नीचे
नूनम्	निश्चय ही
नो चेत्	नहीं तो
पुन:	फिर
प्रात:	सवेरे
पश्चात्	बाद
प्रभृति	से, लेकर
परन्तु	किन्तु, लेकिन
पुरा	पुराने समय में, पहले
सायम्	शाम
श्व:	कल (आने वाला)
ह्य:	कल (बीता हुआ)
सह	साथ
स्वयम्	अपने आप
सहसा	अचानक
स्म	था, थी, थे
सर्वत्र	सब जगह
अथ किम्	और क्या
तथा	वैसे
परस्परम्	आपस में
बहि:	बाहर

© NCERT not to be republished

बहुधा	अक्सर
बाढम्	हाँ
मा	नहीं
मुहुर्मुहु:, भूय:, वारं वारम्	बार-बार
यत्	कि
यत्र	जहाँ
यदि	अगर
यद्यपि	अगर
यावत्	जब तक
यत:	जहाँ से
यदा	जब
वा	या/ अथवा
विना	बिना
वृथा	व्यर्थ
शनै:	धीरे
सर्वदा, सदा, सदैव	नित्य
हि/ यत:/ यतोहि	क्योंकि
खलु	निश्चय ही
ईषत्	थोड़ा ही
जातु	कभी
धिक्	धिक्कार
नक्तम्	रात
प्रसह्य	बलात्
नम:	नमस्कार, प्रणाम
पुर:, पुरस्तात्, पुरत:	सामने

वाक्येषु केषाञ्चित् अव्ययपदानां प्रयोगान् पश्यत—

कच्छप: **शनै: शनै:** चलति।

अचिरं गृहं गच्छ।

© NCERT not to be republished

अहं **श्वः** वाराणसीं गमिष्यामि।

ह्यः मम गृहे उत्सवः आसीत्।

सहसा निर्णयः न करणीयः।

इदानीम् अहं संस्कृत पठामि।

यद्यपि अद्य अवकाशः अस्ति तथापि अहं कार्यमुक्तः नास्मि।

अथ रामायणकथा आरभ्यते।

अत्र आगच्छ।

अहं **कुत्रापि** न गमिष्यामि।

कुक्कुरः **इतस्ततः** भ्रमति।

यत्र-यत्र धूमः **तत्र-तत्र** अग्निः।

अधुना गल्पं न करणीयम्।

नक्तम् दधि न भुञ्जीत।

कक्षायां **तूष्णीम्** तिष्ठ।

पुरा अशोकः राजा आसीत्।

तौ **परस्परम्** आलपतः।

अद्य प्रभृति अहं धूमपानं न करिष्यामि।

शीघ्रं कार्यं समापय **अन्यथा** विलम्बः भविष्यति।

वृथा कलहम् **मा** कुरु।

यदा अहं गमिष्यामि तदा सः **अत्र** आगमिष्यति।

ईषत् हसित्वा सः तस्य उपहासं कृतवान्।

अहं त्वाम् **भूयोभूयः** नमामि।

सः **मुहुर्मुहुः** किम् पश्यति ?

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि यकार एवं तकार वाले, जैसे कि— यद्यपि तथापि, यथा-तथा, यदि-तर्हि, यत्र-तत्र, यावत्-तावत्, यदा-तदा इत्यादि अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग प्रायशः एक साथ ही करना चाहिए, अन्यथा वाक्य अपूर्ण ही रहता है।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितैः अव्ययैः (मंजूषातः गृहीत्वा) रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) सः .... वनं गतवान्।
ii) सः .... गच्छति ?
iii) गजः .... चलति।
iv) सः .... स्वपिति।
v) सिंहः .... गर्जति।
vi) सः .... विजेष्यते।
vii) परिश्रमं कुरु, ...अनुत्तीर्णः भविष्यसि।
viii) गृहात् .... मा गच्छ।
ix) सः .... माम् उद्वेजयति।
x) कोलाहलं .... कुरु।

मञ्जूषा

मा, बहिः, मुहुर्मुहुः, अन्यथा, एकदा,
शनैः, शनैः, चिरम्, नूनम्, उच्चैः, कुत्र

प्र. 2. अधोलिखितेषु वाक्येषु अव्ययपदं चित्वा लिखत—

i) यावत् परीक्षाकालः नायाति तावत् परिश्रमं कुरु। ....
ii) अस्माभिः सर्वदा सत्यं वक्तव्यम्। ....
iii) कालः वृथा न यापनीयः। ....
iv) अहं सम्प्रति गृहं गन्तुम् इच्छामि। ....
v) त्वं कुतः समायातः ?....................................
vi) अहं श्वः ग्रामं गमिष्यामि। ....
vii) तौ परस्परम् आलपतः। ....
viii) अद्यप्रभृति अहं धूमपानं न करिष्यामि। ....
ix) धनं विना जीवनं वृथा भवति। ....
x) अथ रामायणकथा आरभ्यते। ....

© NCERT not to be republished

प्र. 3. कोष्ठकेभ्यः शुद्धम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत्—

i) अहम् .... भ्रमणाय गमिष्यामि। (श्वः/ह्यः)

ii) त्वम् कस्य .... गच्छसि ? (परितः/पुरतः)

iii) विद्यालयम् .... उद्यानम् अस्ति। (परितः/ एव)

iv) सः यदा आगमिष्यति .... अहं गमिष्यामि। (तदैव/तथैव)

v) परिश्रमं कुरु.....................अनुत्तीर्णः भविष्यसि। (सर्वदा/ अन्यथा)

vi) त्वं .... कुत्र गच्छसि ? (जातु / साम्प्रतम्)

vii) यूयम् .... ध्यानेन पठत । (बाढम् / नूनम्)

viii) श्यामः .... पठति श्यामा न । (एव/ विना)

ix) छात्राः पुस्तकम् .... न शोभन्ते । (यदि / विना)

x) यथा वप्स्यसि .... फलं प्राप्स्यसि। (तदा / तथा)

© NCERT not to be republished

0974CH08

अष्टम अध्याय

प्रत्यय

किसी भी धातु या शब्द के पश्चात् जुड़ने वाले शब्दांशों को प्रत्यय कहा जाता है।

- धातुओं में जुड़ने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं। ये प्रत्यय तिङ् प्रत्ययों से भिन्न होते हैं।
- संज्ञा शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं।
- पुँल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए शब्दों में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों को स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

1. कृत् प्रत्यय

जिन प्रत्ययों को धातुओं में जोड़कर संज्ञा, विशेषण या अव्यय आदि पद बनाए जाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।

i) अव्यय बनाने के लिए धातुओं में 'क्त्वा', 'ल्यप्', 'तुमुन्' प्रत्ययों का योग किया जाता है।

ii) धातु से विशेषण बनाने के लिए 'शतृ', 'शानच्', 'तव्यत्', 'अनीयर्', 'यत्' आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है।

iii) भूतकालिक क्रिया के प्रयोग के लिए 'क्त', 'क्तवतु' एवं 'करना चाहिए'— इस अर्थ के लिए क्रिया के वाचक 'तव्यत्', 'अनीयर्' और 'यत्' प्रत्ययों का प्रयोग करते हैं।

iv) धातु से संज्ञा बनाने हेतु 'तृच्', 'क्तिन्', 'ण्वुल्', 'ल्युट्' आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है।

कतिपय प्रमुख कृत् प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

© NCERT not to be republished

क्त्वा प्रत्यय

वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व किए गए कार्य में पूर्वकालिक क्रिया को व्यक्त करने के लिए धातु में क्त्वा प्रत्यय का योग किया जाता है।

यथा— मयूर: मेघं दृष्ट्वा नृत्यति। यहाँ दृष्ट्वा में 'दृश्' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय का योग किया गया है। यह क्रिया नर्तन क्रिया की पूर्वकालिक क्रिया है।

उदाहरण—

कृ + क्त्वा	= कृत्वा	= करके, कार्यं **कृत्वा** गृहं गच्छ।
गम् + क्त्वा	= गत्वा	= जाकर, आपणं **गत्वा** फलम् आनय।
नम् + क्त्वा	= नत्वा	= नमन करके, सरस्वतीं देवीं **नत्वा** पाठं पठ।
पा + क्त्वा	= पीत्वा	= पीकर, दुग्धं **पीत्वा** शयनं कुरु।
श्रु + क्त्वा	= श्रुत्वा	= सुनकर, **वार्तां श्रुत्वा** आगतोऽस्मि।
दृश् + क्त्वा	= दृष्ट्वा	= देखकर, बहि: **दृष्ट्वा** आगच्छामि।
हन् + क्त्वा	= हत्वा	= मारकर, राम: रावणं **हत्वा** सीतां प्राप्नोत्।
प्रच्छ् + क्त्वा	= पृष्ट्वा	= पूछकर, गुरुं **पृष्ट्वा** आगच्छामि।
त्यज् + क्त्वा	= त्यक्त्वा	= त्यागकर, सीतां वने **त्यक्त्वा** लक्ष्मण: आगत:।
स्पृश् + क्त्वा	= स्पृष्ट्वा	= छूकर, मम मित्रम् मां **स्पृष्ट्वा** गत: ।
ज्ञा + क्त्वा	= ज्ञात्वा	= जानकर, परीक्षाफलं **ज्ञात्वा** स: अति प्रसन्न: अस्ति।
पठ् + क्त्वा	= पठित्वा	= पढ़कर, अहं पुस्तकं **पठित्वा** ज्ञानं प्राप्स्यामि।
पत् + क्त्वा	= पतित्वा	= गिरकर, अश्व: **पतित्वा** उत्थित:।
पूज् + क्त्वा	= पूजयित्वा	= पूजकर, देवीं **पूजयित्वा** मेलापकं गमिष्यामि।

'क्त्वा' प्रत्ययान्त शब्दों का भी अव्यय के रूप में प्रयोग होता है, क्योंकि ये अव्यय होते हैं। इनके रूप में परिवर्तन नहीं होता है।

ल्यप् प्रत्यय

पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में 'ल्यप्' प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जहाँ पर धातु से पूर्व कोई उपसर्ग लगा होता है, वहाँ 'क्त्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय का

प्रयोग किया जाता है। 'ल्यप्' प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय के रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। इनके रूप में भी परिवर्तन नहीं होता है।

उदाहरण—

प्र + नम् + ल्यप्	= प्रणम्य	=	प्रणाम करके, गुरुं **प्रणम्य** सः पठति।
वि + ज्ञा + ल्यप्	= विज्ञाय	=	जानकर, वार्तां **विज्ञाय** त्वम् आगच्छ।
आ + गम् + ल्यप्	= आगत्य	=	आकर, गृहात् **आगत्य** सः पाटलिपुत्रं गतवान्।
आ + दा + ल्यप्	= आदाय	=	लाकर, किम् **आदाय** सः समायातः।
वि + स्मृ + ल्यप्	= विस्मृत्य	=	भूलकर, पाठं **विस्मृत्य** सः किंकर्तव्यविमूढः अभवत्।
वि + जि + ल्यप्	= विजित्य	=	जीतकर, शत्रून् **विजित्य** राजा प्रसन्नः अभवत्।
उत् + डी + ल्यप्	= उड्डीय	=	उड़कर, खगाः **उड्डीय** प्रसन्नाः भवन्ति।
आ + नी + ल्यप्	= आनीय	=	लाकर, शिष्यः शुल्कम् **आनीय** गुरवे दत्तवान्।
उप + कृ + ल्यप्	= उपकृत्य	=	उपकार करके, सज्जनाः **उपकृत्य** विस्मरन्ति।
प्र + आप् + ल्यप्	= प्राप्य	=	प्राप्त करके, छात्रः परीक्षाफलं **प्राप्य** प्रसन्नः जातः।
प्र + दा + ल्यप्	= प्रदाय	=	देकर, निर्धनेभ्यः धनं **प्रदाय** धनिकः गतः।
सं + स्पृश् + ल्यप्	= संस्पृश्य	=	स्पर्श करके, पितुः चरणं **संस्पृश्य** सः आशीर्वादं प्राप्तवान्।
उत् + तृ + ल्यप्	= उत्तीर्य	=	उत्तीर्ण करके, दशमकक्षाम् **उत्तीर्य** सः उच्चविद्यालये प्रवेशमलभत।

तुमुन् (तुम्)— (निमित्तार्थक) 'के लिए' अर्थात् क्रिया को करने के लिए इस अर्थ में धातु के साथ तुमुन् प्रत्यय लगता है।

© NCERT not to be republished

- जब दो क्रिया पदों का कर्ता एक होता है तथा एक क्रिया दूसरी क्रिया का प्रयोजन या निमित्त होती है तो निमित्तार्थक क्रिया पद में तुमुन् प्रत्यय होता है।

  यथा— सुरेश: पठितुं विद्यालयं गच्छति। वाक्य में 'पढ़ना' और 'जाना' दो क्रिया पद हैं, जिनमें पढ़ना क्रिया प्रयोजन है जिसके लिए सुरेश विद्यालय जाता है। अत: पठितुं में तुमुन् प्रत्यय है।

- समय, वेला आदि कालवाची शब्दों के योग में भी धातुओं से तुमुन् प्रत्यय होता है।

  यथा— स्नातुं वेलाऽस्ति।
  पठितुं समयोऽस्ति।

- तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। इनका रूप भी नहीं बदलता है।

उदाहरण—

गम् + तुमुन्	= गन्तुम्	= जाने के लिए, स: गृहं **गन्तुम्** उद्यत: अस्ति।
हन् + तुमुन्	= हन्तुम्	= मारने के लिए, मृगं **हन्तुं** सिंह: समुद्यत: अस्ति।
पा + तुमुन्	= पातुम्	= पीने के लिए, जलं **पातुं** स: नदीं गतवान्।
स्ना + तुमुन्	= स्नातुम्	= स्नान के लिए, स: **स्नातुं** तरणतालमगच्छत्।
दा + तुमुन्	= दातुम्	= देने के लिए, उत्तम: जन: ज्ञानं **दातुम्** इच्छुक: भवति।
प्रच्छ् + तुमुन्	= प्रष्टुम्	= पूछने के लिए, छात्र: प्रश्नं **प्रष्टुं** समुत्सुक: भवति।
दृश् + तुमुन्	= द्रष्टुम्	= देखने के लिए, चित्रं **द्रष्टुं** बालक: आगच्छत्।
हस् + तुमुन्	= हसितुम्	= हँसने के लिए, अहं **हसितुम्** इच्छामि।

खाद् + तुमुन्	= खादितुम्	= खाने के लिए, बालक: आम्रं **खादितुम्** इच्छति।
क्रीड् + तुमुन्	= क्रीडितुम्	= खेलने के लिए, शिशु: कन्दुकेन **क्रीडितुम्** इच्छति।
भाष् + तुमुन्	= भाषितुम्	= भाषण के लिए, स: **भाषितुम्** उत्थित:।
जीव् + तुमुन्	= जीवितुम्	= जीने के लिए, सर्वे **जीवितुम्** अभिलषन्ति।
कथ् + तुमुन्	= कथयितुम्	= कहने के लिए, कथां **कथयितुं** स: आगच्छत्।

- **शक्** (सकना), **इष्** (चाहना) इत्यादि धातुओं के साथ भी पूर्व क्रिया में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है, जैसे— मैं पढ़ सकती हूँ/सकता हूँ या मैं पढ़ना चाहती हूँ/चाहता हूँ, इन वाक्यों में (पढ़ना और सकना) (पढ़ना और चाहना) ये दो-दो क्रियाएँ हैं, अत: पढ़ना क्रिया में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है,

  यथा— अहं पठितुं शक्नोमि।
  अहं पठितुम् इच्छामि।
  बालक: तर्तुं शक्नोति।
  सा गातुं शक्नोति।
  त्वं किं कर्तुं शक्नोषि।
  ते चलितुं न शक्नुवन्ति।
  वयं धावितुं न शक्नुम:।

- तुमुन् का प्रयोग करते हुए इच्छुक अर्थ वाले संज्ञा पद भी बनाए जा सकते हैं, **यथा**— गन्तुकाम:, पठितुकाम:, बद्धुकाम:, चलितुकाम:, लेखितुकामा, हसितुकामा, वक्तुकामा इत्यादि।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. प्रत्ययं संयुज्य वियुज्य वा लिखत—

i) दृश् + क्त्वा = ...
ii) प्रणम्य = ...
iii) उपविश्य = ...
iv) सोढुम् = ...
v) सह् + क्त्वा = ...
vi) आ + नी + ल्यप् = ...

प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठके प्रदत्तधातुषु क्त्वा/ल्यप्/तुमुन् प्रत्यययोगेन निष्पन्नपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत—

यथा— सः पुस्तकम् **आदाय** (आ + दा + ल्यप्) गच्छति।
सः पुस्तकं **दत्त्वा** (दा + क्त्वा) क्रीडति।

i) रामः कन्दुकम् .... (आ + नी + ल्यप्) क्रीडति।
ii) श्यामः कन्दुकम् .... (नी + क्त्वा) गच्छति।
iii) रामः कन्दुकम् .... (ग्रह् + तुमुन्) श्यामम् अनुधावति।
iv) श्यामः .... (वि + हस् + ल्यप्) कन्दुकम् ददाति।
v) रामः कन्दुकम् .... (प्र + आप् + ल्यप्) पुनः प्रसन्नः भवति।

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य स्थूलपदेषु धातून् प्रत्ययान् च वियुज्य लिखत—

यथा— बालकः गुरुं **नत्वा** गच्छति। **नम् + क्त्वा**

i) सः अत्र **आगत्य** पठति। ....
ii) त्वं कुत्र **गत्वा** क्रीडसि। ....
iii) बालकः **विहस्य** वदति। ....
iv) त्वं पुस्तकं **क्रेतुम्** गच्छसि। ....
v) छात्रः **पठितुं** विद्यालयं गच्छति। ....
vi) नायकः निर्देशकं **द्रष्टुं** गच्छति। ....

प्र. 4. क्त्वाप्रत्ययस्य प्रयोगेण वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका उद्यानं गच्छति। तत्र क्रीडिष्यति।

© NCERT not to be republished

बालिका उद्यानं गत्वा तत्र क्रीडिष्यति।

i) अहं विद्यालयं गच्छामि। अहं पठिष्यामि।

ii) सीता पुस्तकं पठति। सा ज्ञानं प्राप्स्यति।

iii) स: आपणं गच्छति। स: पुस्तकं क्रेष्यति।

iv) रमेश: पुस्तकालयमगच्छत्। स: समाचारपत्रं पठति।

v) देवदत्त: पाकशालामगच्छत्। स: भोजनं करोति।

प्र. 5. तुमुन्प्रत्ययस्य योगेन वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका क्रीडिष्यति। सा उद्यानं गच्छति।

बालिका क्रीडितुम् उद्यानं गच्छति।

i) अहम् पठिष्यामि। अहं पुस्तकं क्रीणामि।

ii) बालिका परीक्षायाम् उत्तमानि अङ्कानि प्राप्स्यति। सा परिश्रमेण पठति।

iii) निशा क्रीडिष्यति। सा आपणात् कन्दुकमानयति।

iv) माता भोजनं पचति। सा शाकमानयत्।

v) आचार्य: पाठयति। स: कक्षामगच्छत्।

© NCERT not to be republished

शतृ-शानच् प्रत्यय

- एक कार्य को करते हुए जब (साथ ही साथ) अन्य कार्य भी किया जा रहा हो तो करता हुआ/करती हुई, चलता हुआ/चलती हुई, पढ़ता हुआ/पढ़ती हुई इत्यादि अर्थों को बताने के लिए परस्मैपदी धातुओं में शतृ प्रत्यय तथा आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
- शतृ के 'श्' और 'ऋ' का लोप होकर धातु में 'अत्' जुड़ता है। तथा 'शानच्' के 'श्' का और 'च्' का लोप होकर 'आन' के पहले 'म्' का आगम हो जाता है। इस प्रकार धातु के साथ 'मान' जुड़ता है।
- शतृ-शानच् प्रत्ययों से बने हुए शब्द विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं। अत: इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपु.*
पठ् + शतृ (अत्)	पठन्	पठन्ती	पठत्
लिख् + शतृ	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
हस् + शतृ	हसन्	हसन्ती	हसत्
सेव् + शानच् (मान)	सेवमान:	सेवमाना	सेवमानम्
मुद् + शानच्	मोदमान:	मोदमाना	मोदमानम्
वृत् + शानच्	वर्तमान:	वर्तमाना	वर्तमानम्

- वाक्य में प्रयोग करते हुए शतृ–शानच् प्रत्ययान्त शब्दों में उसी लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन का प्रयोग होता है, जो विशेष्य का होता है।

यथा— पिता **गच्छन्तं पुत्रं** भोजनाय कथयति।

इस वाक्य में पिता किस प्रकार के पुत्र को भोजन के लिए कह रहा है। इसके उत्तर में 'जाते हुए पुत्र' को है। अत: 'पुत्रम्' के विशेषण रूप में 'गच्छत्' शब्द में भी द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होकर 'गच्छन्तम्' पद बना।

इसी प्रकार अन्य वाक्य भी समझे जा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

यथा— विद्यालयं गच्छन्तीभि: बालाभि: मार्गे कपोता: दृष्टा:।
माता सेवमानाय पुत्राय आशी: ददाति।
मोदमानस्य जनस्य प्रसन्नताया: किं कारणमस्ति?
स: उच्चै: पश्यन् पतति।
चलन्ती बालिका मार्गं पृच्छति।
सा कं पश्यन्ती गच्छति?

		पुं.	स्त्री.	नपुं.
गम् + शतृ = गच्छत्	जाता हुआ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
दृश् + शतृ = पश्यत्	देखता हुआ	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
दा + शतृ = ददत्	देता हुआ	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्
पा + शतृ = पिबत्	पीता हुआ	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
भू + शतृ = भवत्	होता हुआ	भवन्	भवन्ती	भवत्
पच् + शतृ = पचत्	पकाता हुआ	पचन्	पचन्ती	पचत्
प्रच्छ् + शतृ= पृच्छत्	पूछता हुआ	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्
नी + शतृ = नयत्	ले जाता हुआ	नयन्	नयन्ती	नयत्
नृत् + शतृ = नृत्यत्	नाचता हुआ	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्
चुर् + शतृ = चोरयत्	चुराता हुआ	चोरयन्	चोरयन्ती	चोरयत्
गण् + शतृ = गणयत्	गिनता हुआ	गणयन्	गणयन्ती	गणयत्
मिल् + शतृ= मिलत्	मिलता हुआ	मिलन्	मिलन्ती	मिलत्
यज् + शतृ = यजत्	यजन करता हुआ	यजन्	यजन्ती	यजत्
पाल् + शतृ= पालयत्	पालन करता हुआ	पालयन्	पालयन्ती	पालयत्
गृह् + शतृ = गृह्णत्	ग्रहण करता हुआ	गृह्णन्	गृह्णन्ती	गृह्णत्

© NCERT not to be republished

शानच् (आन, मान)

उदाहरण—

				पुं.	स्त्री.	नपुं.
यज् + शानच्	=	यजमान	यजन करता हुआ	यजमान:	यजमाना	यजमानम्
लभ् + शानच्	=	लभमान	प्राप्त करता हुआ	लभमान:	लभमाना	लभमानम्
सह् + शानच्	=	सहमान	सहन करता हुआ	सहमान:	सहमाना	सहमानम्
जन् +शानच्	=	जायमान	पैदा होता हुआ	जायमान:	जायमाना	जायमानम्
शीङ् + शानच्	=	शयान	सोता हुआ	शयान:	शयाना	शयानम्
वृध् + शानच्	=	वर्धमान	बढ़ता हुआ	वर्धमान:	वर्धमाना	वर्धमानम्

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. प्रत्ययान् संयुज्य यथानिर्दिष्टं लिखत—

i) पठ् + शतृ (पुं.) ....
ii) लिख् + शतृ (स्त्री.) ....
iii) सेव् + शानच् (स्त्री.) ....
iv) सह् + शानच् (पुं.) ....
v) वृत् + शानच् (पुं.) ....
vi) हस् + शतृ (स्त्री.) ....

प्र. 2. यथानिर्दिष्टं परिवर्तनं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत—

यथा— लिखन् बालकः पठति (स्त्रीलिङ्ग)
लिखन्ती बालिका पठति।

i) क्रीडन् बालकः पतति। (स्त्रीलिङ्गे) ....
ii) उपविशन् छात्रः हसति। (स्त्रीलिङ्गे) ....
iii) धावन्ती बालिका क्रन्दति। (पुँल्लिङ्गे) ....
iv) सः चलन् खादति। (स्त्रीलिङ्गे) ....
v) अहम् नृत्यन् न गायामि। (स्त्रीलिङ्गे) ....
vi) त्वम् याचमाना न शोभसे। (पुँल्लिङ्गे) ....
vii) ते गच्छन्तः वार्तां कुर्वन्ति। (स्त्रीलिङ्गे) ....
viii) ते धावन्त्यौ भ्रमतः। (पुँल्लिङ्गे) ....

प्र. 3. शतृप्रत्ययान्तस्य गच्छत्, गच्छन्ती शब्दयोः रूपाणि दृष्ट्वा पठत्, लिखत्, पठन्ती, लिखन्ती च इत्यादीनां शब्दानां रूपलेखनस्य अभ्यासं कुरुत—

उदाहरण—

(क) गच्छत् (पुँल्लिङ्ग)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः

चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
पञ्चमी	गच्छत:	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
षष्ठी	गच्छत:	गच्छतो:	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतो:	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्त:!

(ख) गच्छन्ती (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्य:
द्वितीया	गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्ती:
तृतीया	गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभि:
चतुर्थी	गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
पञ्चमी	गच्छन्त्या:	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
षष्ठी	गच्छन्त्या:	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
सप्तमी	गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्यो:	गच्छन्तीषु
सम्बोधन	हे गच्छन्ति!	हे गच्छन्त्यौ!	हे गच्छन्त्य:!

प्र. 4. कोष्ठके प्रदत्तशब्दानाम् उचितप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) .... बालिकाया: पुस्तकम् कुत्र अस्ति ? (पठन्ती)

ii) .... शिष्याम् आचार्या किंचिद् वदति। (हसन्ती)

iii) .... छात्रै: हस्यते। (गच्छत्)

iv) .... कलिकानाम् सौन्दर्यं अपूर्वं वर्तते। (विकसन्ती)

v) .... बालकाय वस्त्रं दीयते। (याचत्)

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य शतृशानच्प्रत्ययौ प्रयुज्य वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका गच्छति/सा क्रीडति।

गच्छन्ती बालिका क्रीडति।

i) बालक: पठति। स: पाठं स्मरति।

ii) शिशु: चलति। स: हसति।

iii) रमा पठति। सा लिखति।

iv) साधु: उपदिशति। / स: ज्ञानवार्तां करोति।

v) याचक: याचते। स: मार्गे चलति।

© NCERT not to be republished

भूतकालिक क्त (त) क्तवतु

- भूतकालिक क्रिया के अर्थ में धातु से 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्यय का योग किया जाता है। 'क्त' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म अर्थ में, अकर्मक धातुओं से भाव अर्थ में तथा 'क्तवतु' प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है। गत्यर्थक तथा अकर्मक धातुओं से कर्ता अर्थ में 'क्त' प्रत्यय होता है।

कुछ धातुओं के क्त-क्तवतु प्रत्यययुक्त पद निम्नलिखित हैं—

क्त प्रत्यय

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपुं.*
गम् + क्त	गत:	गता	गतम्
कृ + क्त	कृत:	कृता	कृतम्
पा + क्त	पीत:	पीता	पीतम्
श्रु + क्त	श्रुत:	श्रुता	श्रुतम्
क्री + क्त	क्रीत:	क्रीता	क्रीतम्
भक्ष + क्त	भक्षित:	भक्षिता	भक्षितम्
इष् + क्त	इष्ट:	इष्टा	इष्टम्
सेव् + क्त	सेवित:	सेविता	सेवितम्
दृश् + क्त	दृष्ट:	दृष्टा	दृष्टम्
त्रस् + क्त	त्रस्त:	त्रस्ता	त्रस्तम्

क्तवतु प्रत्यय

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपुं.*
गम् + क्तवतु	गतवान्	गतवती	गतवत्
कृ + क्तवतु	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
पा + क्तवतु	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
श्रु + क्तवतु	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्

© NCERT not to be republished

क्री + क्तवतु	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
भक्ष् + क्तवतु	भक्षितवान्	भक्षितवती	भक्षितवत्
इष् + क्तवतु	इष्टवान्	इष्टवती	इष्टवत्
सेव् + क्तवतु	सेवितवान्	सेवितवती	सेवितवत्
दृश् + क्तवतु	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
क्षिप् + क्तवतु	क्षिप्तवान्	क्षिप्तवती	क्षिप्तवत्
ग्रह् + क्तवतु	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
चिन्त् + क्तवतु	चिन्तितवान्	चिन्तितवती	चिन्तितवत्
चुर् + क्तवतु	चोरितवान्	चोरितवती	चोरितवत्
ज्ञा + क्तवतु	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्

- क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी तीनों लिङ्गों में चलते हैं।
- भूतकाल की क्रिया के लिए क्तवतु प्रत्ययों के प्रयोग का छात्रोपयोगी लाभ यह है कि वाक्य में क्रिया को पुरुषानुसार नहीं बदलना पड़ता—

यथा— राम: अगच्छत् — राम: गतवान्
रमा अगच्छत् — रमा गतवती
अहम् अगच्छम् — अहम् गतवान् / गतवती
त्वम् अगच्छ: — त्वम् गतवान् / गतवती

- क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग में भवत्, स्त्रीलिङ्ग में नदी तथा नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान चलते हैं।

पुं. — गतवान् गन्तवन्तौ गतवन्त:
(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

स्त्री. — गतवती गतवत्यौ गतवत्य:
(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

नपुं. — गतवत् गतवती गतवन्ति
(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

© NCERT not to be republished

यथा—

छात्र: गतवान्।	छात्रा गतवती।	मित्रम् गतवत्।
छात्रौ गतवन्तौ।	छात्रे गतवत्यौ।	मित्रे गतवती।
बाला: गतवन्त:।	बालिका: गतवत्य:।	मित्राणि गतवन्ति।

- क्त प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में अर्थात् कर्मवाच्य में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया के लिङ्ग वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

यथा— रामेण घट: पूरित:।
रमया घट: पूरित:।
तेन पुस्तकं पठितम्।
तया पुस्तकानि पठितानि।
मित्रेण भोजनं कृतम्।
छात्रै: कथा पठिता।
आचार्यै: छात्रा: पाठिता:।

- क्त प्रत्यययुक्त शब्दों का प्रयोग जब भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है तब क्त प्रत्ययान्त शब्द में लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन का प्रयोग विशेष्य के अनुसार होता है।

यथा— छात्र: पठितं पाठं गृहे पुन: पुन: पठति।
छात्र: कक्षायां पठितान् पाठान् गृहे स्मरति।
बाल: पठितां हास्यकथां स्मृत्वा हसति।
आचार्य: पठितानां पाठानां पुनरावृत्तिं कर्तुं कथयति।

- जाना, चलना इत्यादि अर्थ की धातुओं, अकर्मक धातुओं तथा श्लिष्ट, शी, स्था, आस्, सह् इत्यादि धातुओं से क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य में भी होता है, अर्थात् इन धातुओं का वाक्य में अकर्मक प्रयोग होने पर क्त प्रत्यय का प्रयोग होते हुए भी कर्त्ता में प्रथमा का प्रयोग भी किया जा सकता है।

यथा— तेन गतम् / स: गत:।
तेन सुप्तम् / स: सुप्त:।

not to be republished © NCERT

स: ग्रामं प्राप्त:।

स: गृहं गत:।

स: वृक्षमारूढ:।

हरि: वैकुण्ठमधिष्ठित:।

- क्त प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में कर्ता प्राय: तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया, लिङ्ग एवं वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. क्त-क्तवतुप्रत्ययसंयोजनेन पदानि रचयित्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत—

i) बालकेन .... (हस् + क्त)

ii) बालक: .... (हस् + क्तवतु)

iii) शिक्षकेण छात्र: पठनाय .... (कथ् + क्त)

iv) शिक्षका: छात्रान् पठनाय .... (कथ् + क्तवतु)

v) पुत्री पितरम् पुस्तकम् .... (याच् + क्तवतु)

vi) माता सुतायै भोजनं .... (दा + क्तवतु)

vii) मम जनकेन भिक्षुकाय रूप्यकाणि .... (दा + क्त)

viii) छात्रेण ऋषे: ज्ञानोपदेश: .... (श्रु + क्त)

प्र. 2. स्तम्भयो: यथोचितं योजयत—

अ	**ब**
अहम् जलम्	पठितानि
सा पुस्तकम्	पचितवन्त:
त्वम् पाठम्	पीतवान् / पीतवती
मया पुस्तकानि	पठितवती
यूयम् भोजनं	लिखितवान्

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिकक्रियाणां स्थाने क्तवतुप्रत्ययप्रयोगेण वाक्यपरिवर्तनं कुरुत—

यथा— अध्यापक: उद्दण्डं छात्रम् अदण्डयत्।
अध्यापक: उद्दण्डं छात्रं दण्डितवान्।

i) छात्र: कक्षायाम् उच्चै: अहसत्।

ii) माता भोजनम् अपचत्।

iii) काक: घटे पाषाणखण्डानि अक्षिपत्।

iv) छात्रा: बसयानस्य प्रतीक्षायाम् अतिष्ठन्।

v) कन्या: उद्याने अक्रीडन्।

प्र. 4. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिकक्रियाणां स्थाने वाक्यपरिवर्तनं कुरुत—

यथा— अध्यापक: छात्रम् पठनाय अकथयत्।
अध्यापकेन छात्र: पठनाय कथित:।

i) वानर: मकराय जम्बूफलानि अयच्छत्।
ii) मकर: वानरं गृहं चलितुम् अकथयत्।
iii) नकुल: सर्पम् अमारयत्।
iv) श्याम: लेखम् अलिखत्।
v) रमा कथाम् अपठत्।

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य अशुद्धवाक्यानि शुद्धीकृत्य लिखत—

यथा— बालकेन जलं पीतवान्
i) बालक:जलं पीतवान्।
ii) बालकेन जलं पीतम्।

i) मोहनेन पुस्तकं नीतवान्।
i) ....
ii) ....

ii) गीता पाठं पठितम्।
i) ....
ii) ....

iii) आचार्येण शिष्य उपदिष्टवान्।
i) ....
ii) ....

iv) कन्या गृहे क्रीडितम्।
i) ....
ii) ....

v) स: भोजनम् कृतम् ।
i) ....
ii) ....

© NCERT not to be republished

तव्यत् (तव्य) तथा अनीयर् (अनीय)

'चाहिए' या 'योग्य' के अर्थों में धातु में 'तव्यत्' (तव्य) तथा 'अनीयर्' (अनीय) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

गम्	+	तव्यत्	=	गन्तव्यम्
पठ्	+	तव्यत्	=	पठितव्यम्
हस्	+	तव्यत्	=	हसितव्यम्
रक्ष्	+	तव्यत्	=	रक्षितव्यम्
जि	+	तव्यत्	=	जेतव्यम्
दा	+	तव्यत्	=	दातव्यम्
कृ	+	तव्यत्	=	कर्तव्यम्
चुर्	+	तव्यत्	=	चोरयितव्यम्
दृश्	+	तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्
स्मृ	+	तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्
गम्	+	अनीयर्	=	गमनीयम्
पठ्	+	अनीयर्	=	पठनीयम्
हस्	+	अनीयर्	=	हसनीयम्
रक्ष्	+	अनीयर्	=	रक्षणीयम्
जि	+	अनीयर्	=	जयनीयम्
दा	+	अनीयर्	=	दानीयम्
कृ	+	अनीयर्	=	करणीयम्
चुर्	+	अनीयर्	=	चोरणीयम्
दृश्	+	अनीयर्	=	दर्शनीयम्
स्मृ	+	अनीयर्	=	स्मरणीयम्
स्ना	+	अनीयर्	=	स्नानीयम्
श्रु	+	अनीयर्	=	श्रवणीयम्
लिख्	+	अनीयर्	=	लेखनीयम्

© NCERT not to be republished

- वाक्य में तव्यत् तथा अनीयर् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के योग में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। अर्थात् इनका सकर्मक धातुओं के योग में कर्मवाच्य में अथवा अकर्मक धातुओं के योग में भाव में ही प्रयोग किया जाता है।
- सकर्मक धातुओं से तव्यत् प्रत्यय लगने पर बने शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

यथा— मया ग्रन्थ: पठितव्य: ।
मया कथा पठितव्या ।
मया पुस्तकं पठितव्यम् ।

- इन प्रत्ययों में कर्ता में तृतीया एवं कर्म में प्रथमा का प्रयोग होता है तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

यथा— बालकेन पाठ: पठितव्य: ।
बालकेन कथा पठितव्या ।
बालकेन पुस्तकम् पठितव्यम् ।

- क्रिया के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में तथा विशेषण के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'योग्य' के अर्थ में होता है।

यथा— छात्रेण पठितव्य: पाठ: पठितव्य: ।

इस वाक्य में 'पाठ:' से पूर्व प्रयुक्त 'पठितव्य:' विशेषण के रूप में है तथा पश्चात् प्रयुक्त पठितव्य: क्रिया रूप में है, अत: इसका अर्थ हुआ— छात्र के द्वारा पढ़ने योग्य पाठ को पढ़ा जाना चाहिए।

एवमेव श्रावणीया कथा श्रावयितव्या।
सुनाने योग्य कहानी सुनानी चाहिए।

यत्-ण्यत्-क्यप् प्रत्यय

इन तीनों प्रत्ययों का 'य' ही शेष रहता है तथा तीनों एक ही अर्थ 'चाहिए' अथवा 'योग्य' के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। परन्तु इनके प्रयोग स्थल भिन्न-भिन्न होते हैं।

यत्— अधिकांशत: अजन्त धातुओं के साथ 'यत्' प्रत्यय प्रयुक्त होता है और धातु के 'इकार' को 'ए' और उसको 'अय्' आदेश तथा 'उकार' को 'ओ' और उसको 'अव्' हो जाता है।

उदाहरण—

	पुं.	स्त्री.	नपुं.
जि+ यत्	जेय:	जेया	जेयम्
गै+ यत्	गेय:	गेया	गेयम्
चि+यत्	चेय:	चेया	चेयम्
श्रु+ यत्	श्रव्य:	श्रव्या	श्रव्यम्
दा+ यत्	देय:	देया	देयम्
भू+ यत्	भव्य:	भव्या	भव्यम्
नी+ यत्	नेय:	नेया	नेयम्
स्था+यत्	स्थेय:	स्थेया	स्थेयम्

ण्यत्— अधिकांशत: ऋकारान्त तथा हलन्त धातुओं से परे 'चाहिए' तथा 'योग्य' अर्थ को बताने के लिए 'ण्यत्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और ण्यत् से पूर्व 'ऋ' की वृद्धि हो जाती है। हलन्त धातु की उपधा में यदि 'अ' हो तो उसे वृद्धि करने पर दीर्घ 'आ' हो जाता है। यदि उपधा में इ, उ या ऋ हो तो क्रमश: ए, और ओ 'अर्' हो जाते हैं। इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरण—

	पुं.	स्त्री.	नपुं.
स्मृ+ण्यत् (य)	स्मार्य:	स्मार्या	स्मार्यम्
लिख्+ण्यत् (य)	लेख्य:	लेख्या	लेख्यम्
पठ्+ण्यत् (य)	पाठ्य:	पाठ्या	पाठ्यम्
त्यज्+ण्यत् (य)	त्याज्य:	त्याज्या	त्याज्यम्
वच्+ण्यत् (य)	वाच्य:	वाच्या	वाच्यम्
कृ+ण्यत् (य)	कार्य:	कार्या	कार्यम्
हृ+ण्यत् (य)	हार्य:	हार्या	हार्यम्
सेव् + ण्यत् (य)	सेव्य:	सेव्या	सेव्यम्
चुर् + ण्यत् (य)	चौर्य:	चौर्या	चौर्यम्
ग्रह् + ण्यत् (यि)	ग्राह्य:	ग्राह्या	ग्राह्यम्

क्यप्— √इ (जाना), √स्तु (स्तुति करना), √शास् (कहना), √वृ (वरण करना), √दृ (आदर करना) आदि कुछ धातुओं से 'क्यप्' प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय के योग से धातु में 'गुण' या वृद्धि नहीं होती तथा ह्रस्व स्वरान्त धातु के बाद 'त्' आगम होता है।

उदाहरण—

इ + क्यप् = इत्य (जिस के पास जाना चाहिए)

शास् + क्यप् = शिष्य (जिसे उपदेश देना/कहना चाहिए)

स्तु + क्यप् = स्तुत्य (स्तुति के योग्य)

वृ + क्यप् = वृत्य (वरण करने/चुनने योग्य) इत्यादि।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठके दत्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् संयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) रामस्य चरित्रं सर्वैः .... (अनु + कृ + अनीयर्)

ii) बालैः कन्दुकम् .... (क्रीड् + तव्यत्)

iii) अस्माभिः गुरूपदेशः .... (श्रु + तव्यत्)

iv) मया नौका .... (आ + रुह् + अनीयर्)

v) कः अत्र आगत्य .... (लिख् + तव्यत्) लेखं लेखिष्यति ?

प्र. 2. कृ— कर्तव्यम्, करणीयम् इति उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितैः धातुभिः द्वे द्वे पदे रचयत—

i)	गम्	....	....
ii)	स्मृ	....	....
iii)	नी	....	....
iv)	दृश्	....	....
v)	दा	....	....

प्र. 3. स्तम्भौ यथोचितं योजयत—

अ	ब
दुग्धम्	रक्षणीयाः
पुस्तकानि	आरोहणीया
ईश्वरः	पातव्यम्
नौका	अध्येतव्याः
वृक्षाः	पठितव्यानि
कथा	स्मरणीयः
ग्रन्थाः	लेखितव्याः
लेखाः	श्रवणीया

प्र. 4. यथास्थानं प्रकृतिप्रत्यययोगं विभागं वा कुरुत—

i) पेयम् ....
ii) दा + यत् ....
iii) सेव्यम् ....
iv) कृ + ण्यत् ....
v) कर्त्तव्य: ....
vi) प्र + आप् + तव्यत् ....
vii) स्मरणीय: ....
viii) हस् + अनीयर् ....
ix) लेखनीयम् ....
x) प्रच्छ् + तव्यत् ....

प्र. 5. शुद्धपदेन वाक्यपूर्तिं कुरुत—

i) जलम् .... (पातव्यम्/पीतव्यम्)
ii) पाठ: .... (पठितव्य:/पठितव्यम्)
iii) शत्रु: .... (जेतव्य:/जितव्य:)
iv) असत्यवचनम् .... (त्याज्यम्/त्याज्य:)
v) अपेयं जलम् .... (त्याग्यम्/त्याज्यम्)
vi) धनम् .... (लभ्यम्/लभियम्)

© NCERT not to be republished

णिनि (इन्)

- कर्ता अर्थ में ग्रह् आदि धातुओं से 'णिनि' (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

ग्रह् + णिनि	=	ग्राहिन्	=	ग्राही
स्था + णिनि	=	स्थायिन्	=	स्थायी
शाल + णिनि	=	शालिन्	=	शाली
दा + णिनि	=	दायिन्	=	दायी

कर्तृवाचक (ण्वुल् तथा तृच्)

- कर्ता अर्थ में किसी भी धातु से 'ण्वुल्' (वु) तथा 'तृच्' (तृ) प्रत्ययों का योग किया जाता है। 'वु' का अक हो जाता है। ण्वुल् के लगने पर धातु के अंत में स्थित स्वर की वृद्धि होती है तथा उपधा स्थित लघु वर्ण का गुण होता है।

उदाहरण—

पच् + ण्वुल् (अक)	=	पाचक:
श्रु + ण्वुल् (अक)	=	श्रावक:
पठ् + ण्वुल् (अक)	=	पाठक:
नृत् + ण्वुल् (अक)	=	नर्तक:
लिख् + ण्वुल् (अक)	=	लेखक:
सिच् + ण्वुल् (अक)	=	सेचक:
प्र + आप् + ण्वुल् (अक)	=	प्रापक:
त्रस् + ण्वुल् (अक)	=	त्रासक:
नी + ण्वुल् (अक)	=	नायक:
ग्रह् + ण्वुल् (अक)	=	ग्राहक:
हन् + तृच् = हन्तृ	=	हन्ता
जि + तृच् = जेतृ	=	जेता
श्रु + तृच् = श्रोतृ	=	श्रोता

© NCERT not to be republished

नी + तृच् = नेतृ	=	नेता
दा + तृच् = दातृ	=	दाता
कृ + तृच् = कर्तृ	=	कर्ता
कथ् + तृच् = कथयितृ	=	कथयिता
वच् + तृच् = वक्तृ	=	वक्ता

क्तिन् (ति)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु के साथ 'क्तिन्' (ति) प्रत्यय का प्रयोग होता है। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग होते हैं। इनके रूप 'मति' शब्द के रूपों की भाँति चलते हैं।

श्रु + क्तिन्	=	श्रुति:
भी + क्तिन्	=	भीति:
कृ + क्तिन्	=	कृति:
भज् + क्तिन्	=	भक्ति:
दृश् + क्तिन्	=	दृष्टि:
मन् + क्तिन्	=	मति:
बुध् + क्तिन्	=	बुद्धि:
वच् + क्तिन्	=	उक्ति:
प्र + आप् + क्तिन्	=	प्राप्ति:
स्तु + क्तिन्	=	स्तुति:

ल्युट् (यु = अन)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु से 'ल्युट्' (यु = अन) प्रत्यय का योग किया जाता है। इस प्रत्यय के (यु = अन) को धातु के साथ जोड़ा जाता है।
- ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द प्राय: नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, क्योंकि ल्युट् प्रत्यय का अर्थ 'भाव' होता है। इनके रूप 'फल' शब्द के रूपों की तरह चलते हैं।

उदाहरण—

भू + ल्युट् (यु = अन)	=	भवनम्

© NCERT not to be republished

पा + ल्युट् (यु = अन)	=	पानम्
श्रु + ल्युट् (यु = अन)	=	श्रवणम्
गम् + ल्युट् (यु = अन)	=	गमनम्
पठ् + ल्युट् (यु = अन)	=	पठनम्
लिख् + ल्युट् (यु = अन)	=	लेखनम्
दा + ल्युट् (यु = अन)	=	दानम्
भज् + ल्युट् (यु = अन)	=	भजनम्
हन् + ल्युट् (यु = अन)	=	हननम्
ग्रह् + ल्युट् (यु = अन)	=	ग्रहणम्
यज् + ल्युट् (यु = अन)	=	यजनम्
गण् + ल्युट् (यु = अन)	=	गणनम्
पाल् + ल्युट् (यु = अन)	=	पालनम्
सेव् + ल्युट् (यु = अन)	=	सेवनम्

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य पदेषु प्रयुक्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् लिखत—

	पदम्	प्रकृति:	प्रत्यय:
उदाहरण—	**गति:**	**गम्**	**क्तिन्**
i)	हसनम्	....	....
ii)	पाठक:	....	....
iii)	खाद्य:	....	....
iv)	दृश्य:	....	....
v)	भक्ति:	....	....
vi)	सौभाग्यशालिन्	....	....
(vii)	नेता	....	....
(viii)	गायक:	....	....

प्र. 2. अधोलिखितप्रत्ययानां प्रयोगेण पञ्च, पञ्च पदानि रचयित्वा स्वपुस्तिकासु लिखत— तृच्, क्तिन्, ण्वुल्, ल्युट्, यत्।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु क: प्रत्यय: प्रयुक्त: इति कोष्ठकेभ्य: चित्वा लिखत—

i) सज्जनानाम् **उक्ति:** पालनीया। (ल्युट्/क्तिन्) ....

ii) **सेचक:** क्षेत्रं सिञ्चति। (ल्युट्/ण्वुल्) ....

iii) **श्रावक:** कथां श्रावयति। (ल्युट्/ण्वुल्) ....

iv) भक्त: **भक्तिं** करोति। (ण्वुल्/क्तिन्) ....

प्र. 4. शुद्धरूपं चित्वा लिखत—

i) गम् + क्तिन् — गति: / गमति: ....

ii) दा + तृच् — दातृ / दानी ....

iii) नी + ण्वुल् — नाविक: / नायक: ....

iv) नृत् + ल्युट् — नर्तक: / नर्तनम् ....

v) दृश् + ल्युट् — दृश्यम् / दर्शनम् ....

© NCERT not to be republished

2. तद्धित प्रत्यय

- संज्ञा, विशेषण तथा कृदन्त आदि (प्रातिपदिक) शब्दों के साथ लगकर अर्थ परिवर्तन करने वाले प्रत्ययों को **तद्धित** प्रत्यय कहते हैं।
- तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों में कारक विभक्तियाँ लगती हैं।

विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने वाले तद्धित प्रत्यय अनेक हैं। कतिपय प्रमुख तद्धित प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

मतुप् (मत्)

'वाला' अर्थात् 'इसके पास है', इस अर्थ में स्वरान्त शब्दों से 'मतुप्' प्रत्यय का योग किया जाता है। 'उप्' का लोप होकर शब्दों से केवल 'मत्' जुड़ता है।

उदाहरण—

शक्ति + मतुप्	=	शक्तिमत् (शक्तिमान्), शक्तिवाला
श्री + मतुप्	=	श्रीमत् (श्रीमान्), श्रीवाला
धी + मतुप्	=	धीमत् (धीमान्), बुद्धिवाला
बुद्धि + मतुप्	=	बुद्धिमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिवाला
मधु + मतुप्	=	मधुमत् (मधुमान्), मधुवाला
इक्षु + मतुप्	=	इक्षुमत् (इक्षुमान्), गन्नेवाला
कीर्ति + मतुप्	=	कीर्तिमत् (कीर्तिमान्), कीर्तिवाला

वतुप् (वत्)

- 'वाला' या 'इससे युक्त' अर्थ में अकारान्त तथा अनेक हलन्त शब्दों से 'वतुप्' (वत्) प्रत्यय होता है।
- 'शब्दान्त' या 'उपधा' में अ/आ या म् होने पर मतुप् के स्थान पर 'वतुप्' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

धन + वतुप्	=	धनवत् (धनवान्), धनवाला
बल + वतुप्	=	बलवत् (बलवान्), बलवाला

© NCERT not to be republished

रूप + वतुप्	=	रूपवत् (रूपवान्), रूपवाला
विद्या + वतुप्	=	विद्यावत् (विद्यावान्), विद्यावाला
गुण + वतुप्	=	गुणवत् (गुणवान्), गुणवाला
लक्ष्मी + वतुप्	=	लक्ष्मीवत् (लक्ष्मीमान), लक्ष्मीवाला

- मतुप्, वतुप् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग में 'भवत्', स्त्रीलिङ्ग में 'नदी' तथा नपुंसकलिङ्ग में 'जगत्' शब्द के समान चलते हैं।

इनि (इन्)

- 'वाला' या 'युक्त' अर्थ में अकारान्त शब्दों से 'इनि' (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरण—

रथ + इनि	=	रथिन् (रथी), रथवाला या रथ से युक्त
दण्ड + इनि	=	दण्डिन् (दण्डी), दण्डवाला या दण्ड से युक्त
बल + इनि	=	बलिन् (बली), बलवाला या बल से युक्त
गुण + इनि	=	गुणिन् (गुणी), गुणवाला या गुण से युक्त
धन + इनि	=	धनिन् (धनी), धनवाला या धन से युक्त

- वाक्यों में इनि प्रत्यय युक्त शब्दों का आवश्यकतानुसार शब्दरूप बनाकर प्रयोग किया जाता है।

यथा— गुणी जन: शोभते। (प्रथमा, एकवचन)
गुणिन: सर्वत्र पूज्यन्ते। (प्रथमा, बहुवचन)
धनिन: अद्यत्वे अधिकं धनं लब्धुं यतन्ते। (प्रथमा, बहुवचन)
बलिना पुरुषेण सर्वत्र बलस्य एव प्रयोग: क्रियते। (तृतीया, एकवचन)

तरप् (तर)

- दो में किसी एक को बेहतर बताने के लिए 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण—

प्रशस्य + तरप्	=	प्रशस्यतर:	चतुर + तरप्	=	चतुरतर:
गुरु + तरप्	=	गुरुतर:	दीर्घ + तरप्	=	दीर्घतर:
लघु + तरप्	=	लघुतर:	सुन्दर + तरप्	=	सुन्दरतर:
पटु + तरप्	=	पटुतर:	स्थिर + तरप्	=	स्थिरतर:
कुशल + तरप्	=	कुशलतर:	तीव्र + तरप्	=	तीव्रतर:
उच्च + तरप्	=	उच्चतर:	मधुर + तरप्	=	मधुरतर:

यथा— रामलक्ष्मणयो: राम: प्रशस्यतर: आसीत्। अश्वगजयो: अश्व: तीव्रतर:। मोहनसोहनयो: मोहन: पटुतर:।

तमप् (तम)

- दो से अधिक में किसी एक की सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

उच्च + तमप्	=	उच्चतम:	मधुर + तमप्	=	मधुरतम:
गुरु + तमप्	=	गुरुतम:	दीर्घ + तमप्	=	दीर्घतम:
लघु + तमप्	=	लघुतम:	स्थिर + तमप्	=	स्थिरतम:
पटु + तमप्	=	पटुतम:	सुन्दर + तमप्	=	सुन्दरतम:
कुशल + तमप्	=	कुशलतम:	तीव्र + तमप्	=	तीव्रतम:

यथा— कक्षाया: छात्रेषु मोहन: पटुतम:, पशुषु अश्व: धावने तीव्रतम: इत्यादि

मयट् (मय)

- प्रचुरता के अर्थ में 'मयट्' (मय) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
- वस्तुवाचक शब्दों से (खाद्य वस्तुओं को छोड़कर) विकार अर्थ में भी मयट् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

शान्ति + मयट्	=	शान्तिमय:
आनन्द + मयट्	=	आनन्दमय:

© NCERT not to be republished

सुख + मयट्	=	सुखमय:
तेज: + मयट्	=	तेजोमय:
मृत् + मयट्	=	मृण्मय:
स्वर्ण + मयट्	=	स्वर्णमय:
लौह + मयट्	=	लौहमय:

अण् (अ)

- अपत्य (पुत्र या पुत्री) अर्थ में शब्द से अण् प्रत्यय का योग किया जाता है। अण् प्रत्यय करने पर आदि स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरण—

वसुदेव + अण्	=	वासुदेव:	मनु + अण्	=	मानव:
वशिष्ठ + अण्	=	वाशिष्ठ:	पुत्र + अण्	=	पौत्र:
विश्वामित्र + अण्	=	वैश्वामित्र:	कुरु + अण्	=	कौरव:
अश्वपति + अण्	=	आश्वपत:	दनु + अण्	=	दानव:
यदु + अण्	=	यादव:	पण्डु + अण्	=	पाण्डव:

यथा— वासुदेव: कृष्ण: पूज्य: अस्ति।

- भाव में भी अण् प्रत्यय होता है—

कुशल + अण्	=	कौशलम्
गुरु + अण्	=	गौरवम्
शिशु + अण्	=	शैशवम्
मृदु + अण्	=	मार्दवम्
लघु + अण्	=	लाघवम्

यथा— कर्मसु कौशलं शोभनम् अस्ति।

ठक् (इक)

- शब्दों से भाव अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। ठक् का 'इक' हो जाता है तथा शब्द के आदि स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरण—

वाच् + ठक्	=	वाचिक

© NCERT not to be republished

शरीर + ठक्	=	शारीरिक
धर्म + ठक्	=	धार्मिक
कर्म + ठक्	=	कार्मिक
नगर + ठक्	=	नागरिक
भूत + ठक्	=	भौतिक
अध्यात्म + ठक्	=	आध्यात्मिक

इतच् (इत)

- 'सहित' या 'युक्त' अर्थ में तारक आदि शब्दों से 'इतच्' प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरणम्—

तारक + इतच्	=	तारकित:	बुभुक्षा + इतच्	=	बुभुक्षित:
पिपासा + इतच्	=	पिपासित:	कण्टक + इतच्	=	कण्टकित:
कुसुम + इतच्	=	कुसुमित:	गर्व + इतच्	=	गर्वित:
क्षुधा + इतच्	=	क्षुधित:	व्याधि + इतच्	=	व्याधित:
अंकुर + इतच्	=	अंकुरित:	उत्कण्ठा + इतच्	=	उत्कण्ठित:
हर्ष + इतच्	=	हर्षित:	तरंग + इतच्	=	तरंगित:
दीक्षा + इतच्	=	दीक्षित:			

यथा— बुभुक्षित: किं न करोति पापम्।
क्षुधित: बालक: इतस्तत: भ्रमति।
पिपासित: काक: जलम् अन्वेषयति।

त्व तथा तल्

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों से 'त्व' और 'तल्' (ता) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

उदाहरण—

मूर्ख + त्व	=	मूर्खत्वम्	मूर्ख + तल्	=	मूर्खता
विद्वस् + त्व	=	विद्वत्वम्	विद्वस् + तल्	=	विद्वत्ता

© NCERT not to be republished

महत् + त्व	=	महत्त्वम्	महत् + तल्	=	महत्ता
पवित्र + त्व	=	पवित्रत्वम्	पवित्र + तल्	=	पवित्रता
पशु + त्व	=	पशुत्वम्	पशु + तल्	=	पशुता
गुरु + त्व	=	गुरुत्वम्	गुरु + तल्	=	गुरुता
लघु + त्व	=	लघुत्वम्	लघु + तल्	=	लघुता
मित्र + त्व	=	मित्रत्वम्	मित्र + तल्	=	मित्रता

- 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' शब्द की तरह चलते हैं।
- 'ता' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'रमा' शब्द की तरह चलते हैं।

यत्

- शरीर के अवयववाची शब्दों से 'होने वाला' इस अर्थ में 'यत्' प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरण—

कण्ठ + यत्	=	कण्ठे भवम्	कण्ठ्यम्
दन्त + यत्	=	दन्ते भवम्	दन्त्यम्
ओष्ठ + यत्	=	ओष्ठे भवम्	ओष्ठ्यम्

थाल् (था)

- किम् आदि सर्वनामों से 'प्रकार' अर्थ में 'थाल्' प्रत्यय का योग किया जाता है। थाल् का 'था' शेष रहता है।

उदाहरण—

यद् + थाल्	=	यथा
तद् + थाल्	=	तथा
सर्व + थाल्	=	सर्वथा
उभय + थाल्	=	उभयथा

तसिल्

- **प्रयाग + तसिल् = प्रयागत:**— पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में 'तसिल्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। तसिल् का केवल 'तस्' भाग बचता है। तसिल् प्रत्यय जोड़ने पर जो शब्द बनते हैं, वे अव्यय होते हैं। जब कोई वस्तु या व्यक्ति किसी स्थान से अलग होते हैं तो उस स्थान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— देवदत्त: 'प्रयागात् काशीं गच्छति' वाक्य में देवदत्त, प्रयाग से अलग हो रहा है। अत: प्रयाग में पञ्चमी हुई है। प्रयागात् के स्थान पर प्रयागत: (तसिल् प्रत्ययान्त) का भी प्रयोग हो सकता है।

यथा—

पञ्चमी पदानि	**तसिल् पदानि**	
ग्रामात्	ग्रामत:	ग्रामत: वनं दूरे नास्ति।
वृक्षात्	वृक्षत:	वृक्षत: पत्राणि पतन्ति।
वाराणस्या:	वाराणसीत:	वाराणसीत: प्रयाग: पश्चिमे वर्तते।
नवदिल्ल्या:	नवदिल्लीत:	नवदिल्लीत: हरिद्वारनगरम् उत्तरे वर्तते।
तस्मात्	तत:	तत: आगच्छति।
एतस्मात्	इत:	इत: गच्छति।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. निम्नलिखितप्रयोगान् ध्यानेन पठित्वा स्थूलपदेषु प्रकृति-प्रत्ययानां विभागं कुरुत—

i) कालिदास: **कीर्तिमान्** आसीत्। ....
ii) एतौ बालकौ **बलवन्तौ** स्त:। ....
iii) एते जना: **गुणवन्त:** सन्ति। ....
iv) धनी सर्वत्र **समादरं** प्राप्नोति। ....
v) बलिनौ **अन्यायं** न सहत:। ....
vi) **गुणिन:** आत्मश्लाघां न कुर्वन्ति। ....
vii) पिता आकाशात् **श्रेष्ठतर:**। ....
viii) धरित्री मातु: अपि **गंभीरतरा।** ....
ix) कदलीफलम् आम्रात् **मधुरतमम्।** ....
x) हिमालय: भारतस्य **उच्चतम:** पर्वत: अस्ति। ....

प्र. 2. प्रत्ययं संयुज्य पदनिर्माणं कुरुत—

i) श्री + मतुप् ....
ii) शक्ति + वतुप् ....
iii) धन + वतुप् ....
iv) बल + वतुप् ....
v) गुरु + तल् ....
vi) सुन्दर + मयट् ....
vii) पटु + तमप् ....
viii) मृत् + मयट् ....
ix) वसुदेव + अण् ....
x) धर्म + ठक् ....
xi) मित्र + तल् ....
xii) विद्वस् + त्व ....

प्र. 3. कोष्ठके दत्तै: पदै: रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) धर्मेन्द्र: बालाभ्याम् ....। (प्रशस्यतर:/ प्रशस्यतम:)
ii) ....राज्ञ: दशरथस्य राजगुरु: आसीत्। (वाशिष्ठ: / वशिष्ठ:)

iii) बालिकासु माया .... (चतुरतरा / चतुरतमा)
iv) पाण्डवानाम् ....दर्शनीयम् आसीत्। (युद्धकौशलम्/युद्ध कुशलम्)
v) .... आभूषणम् बहुमूल्यं भवति। (स्वर्णमयः / स्वर्णमयम्)
vi) रावणः .... आसीत् । (दानवः / दनुजः)
vii) .... जनः औषधिं सेवते। (व्याधितः / व्याधिः)
viii) बालिकासु चंद्रकला .... वदति (मधुरतरम् / मधुरतमम्)
ix) बालकेषु विजयस्य टङ्कणगतिः .... (तीव्रतरा / तीव्रतमा)

प्र. 4. विशेष्यविशेषणे परस्परं योजयत—

i)	कीर्तिमान्	—	मञ्जूषा
ii)	उत्तमम्	—	पुरुषः
iii)	उच्चतमः	—	कार्यम्
iv)	लौहमयी	—	पर्वतः

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत—

यथा—	धीमान् =	धी + मतुप्	
i)	मधुरतमः	....	....
ii)	तीव्रतरः	....	....
iii)	वासुदेवः	....	....
iv)	कार्मिकः	....	....
v)	दन्त्यम्	....	....
vi)	मृण्मयः	....	....
vii)	पिपासितः	....	....
viii)	लघुता	....	....
ix)	वीरतमः	....	....
x)	नदीतः	....	....

प्र. 6. अधोलिखितेषु शब्देषु तसिल्प्रत्ययं संयुज्य वाक्यरचनां कुरुत—

पर्वतः, नगरम्, भूमिः, भानुः, नदी।

प्र. 7. कोष्ठकेषु प्रदत्तेषु शब्देषु तसिल्प्रत्ययं संयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) छात्रः .... आगच्छति । (विद्यालय)
ii) देवदत्तः .... काशीं गच्छति। (मथुरा)
iii) वयं .... जलम् आहरामः। (नदी)
iv) सः .... गतः। (देवालय)

© NCERT not to be republished

3. स्त्री प्रत्यय

पुँल्लिङ्ग शब्दों में जिन प्रत्ययों को लगाकर स्त्रीलिङ्ग या स्त्रीवाचक शब्द बनाए जाते हैं, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

1. आ (टाप्, डाप्, चाप्)
2. ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)

आ (टाप्, डाप्, चाप्)

- अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिए टाप् 'आ' प्रत्यय लगाया जाता है।

  उदाहरण—

अश्व + टाप् (आ)	=	अश्वा
सुत + टाप् (आ)	=	सुता
सरल + टाप् (आ)	=	सरला
प्रथम + टाप् (आ)	=	प्रथमा

- यदि पुँल्लिङ्ग शब्द के अन्त में 'अक' हो तो 'आ' प्रत्यय लगने पर 'इक' हो जाता है।

  उदाहरण—

बालक + आ	=	बालिका
मूषक + आ	=	मूषिका
शिक्षक + आ	=	शिक्षिका
साधक + आ	=	साधिका
गायक + आ	=	गायिका
नायक + आ	=	नायिका

ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)

- ऋकारान्त एवं नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग शब्द में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगाया जाता है।

  उदाहरण—

कर्तृ + ई	=	कर्त्री

© NCERT not to be republished

दातृ + ई	=	दात्री
धातृ + ई	=	धात्री
तपस्विन् + ई	=	तपस्विनी
गुणिन् + ई	=	गुणिनी

- अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों तथा कतिपय जातिवाचक शब्दों में भी 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाया जाता है।

उदाहरण—

नद + ई	=	नदी
देव + ई	=	देवी
भयङ्कर + ई	=	भयङ्करी
गोप + ई	=	गोपी
महिष + ई	=	महिषी
शूकर + ई	=	शूकरी
ब्राह्मण + ई	=	ब्राह्मणी
मृग + ई	=	मृगी

- द्विगु समास का अन्तिम शब्द यदि अकारान्त है तो 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

त्रिलोक + ई	=	त्रिलोकी
पंचवट + ई	=	पंचवटी

- शतृ प्रत्ययान्त शब्दों को स्त्रीलिङ्ग में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

गच्छत् + ई	=	गच्छन्ती
वदत् + ई	=	वदन्ती
दर्शयत् + ई	=	दर्शयन्ती

- इसके अतिरिक्त भी 'ई' प्रत्यय के योग से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाए जाते हैं।

उदाहरण—

श्रीमत् + ई	=	श्रीमती

© NCERT not to be republished

भवत् + ई	=	भवती
गतवत् + ई	=	गतवती

- जाया अर्थ में पुँल्लिङ्ग शब्दों से (ङीष्) (ई) प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

इन्द्र + ङीष्	=	इन्द्राणी
वरुण + ङीष्	=	वरुणानी
भव + ङीष्	=	भवानी
मातुल + ङीष्	=	मातुलानी
रुद्र + ङीष्	=	रुद्राणी

- कुछ शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिए 'आ' और 'ई' दोनों प्रत्यय लगाए जाते हैं।

उदाहरण—

आचार्य-आचार्या (जो स्वयं पढ़ाती है) आचार्याणी (आचार्य की पत्नी), उपाध्याय-उपाध्याया-उपाध्यायानी एवमेव क्षत्रिय-क्षत्रिया-क्षत्रियाणी

ति प्रत्यय

- युवन् शब्द से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ति' प्रत्यय लगाया जाता है।

युवन् + ति	=	युवति:

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. निर्देशानुसारं लिङ्गपरिवर्तनं कुरुत—

i) बालक .... (स्त्री.)
ii) आराध्या .... (पुं.)
iii) प्रथमा .... (पुं.)
iv) साधक .... (स्त्री.)
v) आचार्या .... (पुं.)
vi) धातृ .... (स्त्री.)

© NCERT not to be republished

0974CH09

नवम अध्याय

समास परिचय

'समसनम्' इति समास:। इस प्रकार 'समास' शब्द का अर्थ है— संक्षेपण। अर्थात् दो या दो से अधिक पदों में प्रयुक्त विभक्तियों, समुच्चय बोधक 'च' आदि को हटाकर एक पद बनाना। **यथा**— गायने कुशला = गायनकुशला। इसी तरह राज्ञ: पुरुष: = राजपुरुष: पदों में विभक्ति-लोप, सीता च रामश्च = सीतारामौ में समुच्चय बोधक 'च' का लोप हुआ है। इसी प्रकार विद्या एव धनं यस्य स: = विद्याधन: पद में कुछ पदों का लोप कर संक्षेपण क्रिया द्वारा गायनकुशला, राजपुरुष:, सीतारामौ तथा विद्याधन: पद बनाए गए हैं।

कहीं-कहीं पदों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं भी होता है।

यथा— खेचर:, युधिष्ठिर:, वनेचर: आदि। ऐसे समासों को अलुक् समास कहते हैं। पदों की प्रधानता के आधार पर समास के मुख्यत: चार भेद होते हैं— (1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष (3) द्वन्द्व तथा (4) बहुव्रीहि। तत्पुरुष के दो उपभेद भी हैं— कर्मधारय एवं द्विगु। इस प्रकार सामान्य रूप से समास के छ: भेद हैं।

1. अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होने के साथ ही साथ प्रधान भी होता है। समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है तथा नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, यथा—

यथाशक्ति	=	शक्तिम् अनतिक्रम्य
निर्विघ्नम्	=	विघ्नानाम् अभाव:
उपगङ्गम्	=	गङ्गाया: समीपम्
अनुरूपम्	=	रूपस्य योग्यम्

© NCERT not to be republished

प्रत्येकम्	=	एकम् एकम् इति
प्रतिगृहम्	=	गृहं गृहम् इति
निर्मक्षिकम्	=	मक्षिकाणाम् अभावः
उपनदम्	=	नद्याः समीपम्
प्रत्यक्षम्	=	अक्ष्णोः प्रति
परोक्षम्	=	अक्ष्णोः परम्

2. तत्पुरुष समास

इस समास में प्रायेण उत्तर पद की प्रधानता होती है। इसके दोनों पदों में अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पर दोनों पदों में समान विभक्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में पूर्वपद की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है। इसमें द्वितीया से सप्तमी तक की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है।

उदाहरण—

शरणम् आगतः	=	शरणागतः	द्वितीया तत्पुरुष
शरणं प्राप्तः	=	शरणप्राप्तः	
सुखं प्राप्तः	=	सुखप्राप्तः	
पित्रा युक्त	=	पितृयुक्तः	तृतीया तत्पुरुष
सर्पेण दष्टः	=	सर्पदष्टः	
शरेण विद्धः	=	शरविद्धः	
अग्निना दग्धः	=	अग्निदग्धः	
धनेन हीनः	=	धनहीनः	
विद्यया हीनः	=	विद्याहीनः	
भूताय बलिः	=	भूतबलिः	चतुर्थी तत्पुरुष
दानाय पात्रम्	=	दानपात्रम्	
यूपाय दारु	=	यूपदारु	
स्नानाय इदम्	=	स्नानार्थम्	
तस्मै इदम्	=	तदर्थम्	

© NCERT not to be republished

चौरात् भयम्	=	चौरभयम्	
रोगात् मुक्त:	=	रोगमुक्त:	
अश्वात् पतित:	=	अश्वपतित:	पञ्चमी तत्पुरुष
स्वर्गात् पतित:	=	स्वर्गपतित:	
सिंहात् भीत:	=	सिंहभीत:	
राज्ञ: पुरुष:	=	राजपुरुष:	
देवानां पति:	=	देवपति:	
नराणां पति:	=	नरपति:	षष्ठी तत्पुरुष
देवस्य पूजा	=	देवपूजा	
सुखस्य भोग:	=	सुखभोग:	
युद्धे निपुण:	=	युद्धनिपुण:	
कार्ये कुशल:	=	कार्यकुशल:	
शास्त्रे प्रवीण:	=	शास्त्रप्रवीण:	सप्तमी तत्पुरुष
जले मग्न:	=	जलमग्न:	
सभायां पण्डित:	=	सभापण्डित:	
न धार्मिक:	=	अधार्मिक:	
न सुखम्	=	असुखम्	नञ् तत्पुरुष
न आदि:	=	अनादि:	
न सत्यम्	=	असत्यम्	

तत्पुरुष समास के दो और भी भेद हैं— (i) समानाधिकरण तत्पुरुष अर्थात् कर्मधारय समास (ii) द्विगु समास।

i) कर्मधारय समास

इसके दोनों पदों में विभक्ति समान होती है। इसके तीन स्वरूप होते हैं—

(क) कभी-कभी विग्रह पदों में पूर्वपद विशेषण होता है तथा उत्तरपद विशेष्य होता है।

(ख) कभी-कभी पूर्वपद उपमान होता है और उत्तरपद उपमेय होता है।

© NCERT not to be republished

(ग) कभी-कभी दोनों पद विशेषण होते हैं।

उदाहरण—

नीलम् उत्पलम्	=	नीलोत्पलम्	कर्मधारय (विशेषण-विशेष्य)
विशाल: वृक्ष:	=	विशालवृक्ष:	
मधुरं फलम्	=	मधुरफलम्	
ज्येष्ठ: पुत्र:	=	ज्येष्ठपुत्र:	
कुत्सित: राजा	=	कुराजा	
सुन्दर: पुरुष:	=	सुपुरुष:	
महान् च असौ राजा	=	महाराज:	
घन इव श्याम:	=	घनश्याम:	कर्मधारय (उपमान-उपमेय)
कमलम् इव मुखम्	=	कमलमुखम्	
चन्द्र इव मुखम्	=	चन्द्रमुखम्	
नर: सिंह इव	=	नरसिंह:	
शीतं च उष्णम्	=	शीतोष्णम्	कर्मधारय (उभयपद-विशेषण)
रक्तश्च पीत:	=	रक्तपीत:	
आदौ सुप्त: पश्चादुत्थित:	=	सुप्तोत्थित:	

ii) द्विगु समास

जब कर्मधारय समास का पूर्वपद संख्यावाची हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं।

यह समास सामान्यत: (समूह) अर्थ में होता है। इसके विग्रह में प्रायेण षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। समस्त पद सामान्यतया नपुंसकलिङ्ग एक वचन में होता है।

उदाहरण—

सप्तानां दिनानां समाहार:	=	सप्तदिनम्
पञ्चानां पात्राणां समाहार:	=	पञ्चपात्रम्
त्रयाणां भुवनानां समाहार:	=	त्रिभुवनम्

© NCERT not to be republished

पञ्चानां रात्रीणां समाहार:	=	पञ्चरात्रम्
चतुर्णां युगानां समाहार:	=	चतुर्युगम्

- कभी-कभी द्विगु ईकारान्त स्त्रीलिङ्गी भी हो जाता है—

उदाहरण—

त्रयाणां लोकानां समाहार:	=	त्रिलोकी
पञ्चानां वटानां समाहार:	=	पञ्चवटी
सप्तानां शतानां समाहार:	=	सप्तशती
अष्टानां अध्यायानां समाहार:	=	अष्टाध्यायी

3. द्वन्द्व समास

जिस समस्त पद में दोनों पदों की प्रधानता होती है वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इसके विग्रह में 'च' का प्रयोग होता है, जैसे— लवश्च कुशश्च = लवकुशौ। यहाँ जितनी प्रधानता 'लव' की है उतनी ही प्रधानता 'कुश' की भी है। द्वन्द्व समास के दो रूप माने गए हैं— (1) इतरेतर द्वन्द्व (2) समाहार द्वन्द्व

i) **इतरेतर द्वन्द्व**— जिस समस्त पद में दोनों पदों का अर्थ अलग-अलग होता है, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। समस्त पद में संख्या के अनुसार द्विवचन या बहुवचन होता है, किन्तु लिङ्ग परिवर्तन परवर्ती या उत्तरवर्ती पद के अनुसार होता है।

उदाहरण—

पार्वती च परमेश्वरश्च	=	पार्वतीपरमेश्वरौ
रामश्च कृष्णश्च	=	रामकृष्णौ
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	=	धर्मार्थकाममोक्षा:
सीता च रामश्च	=	सीतारामौ
पुत्रश्च कन्या च	=	पुत्रकन्ये
राधा च कृष्णश्च	=	राधाकृष्णौ
धनञ्च जनश्च यौवनञ्च	=	धनजनयौवनानि

© NCERT not to be republished

ii) समाहार द्वन्द्व— जहाँ अनेक वस्तुओं का संग्रह दिखाया जाता है अर्थात् समूह की प्रधानता रहती है, वहाँ समाहार द्वन्द्व समास होता है।

उदाहरण—

आहारश्च निद्रा च भयं च इति, एतेषां समाहार = आहारनिद्राभयम्

पाणी च पादौ च = पाणिपादम्

यवाश्च चणकाश्च = यवचणकम्

पुत्रश्च पौत्रश्च = पुत्रपौत्रम्

द्वन्द्व समास के सन्दर्भ में विशेष बातें—

- ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त पद को समस्त पद में पहले रखा जाता है।

  यथा— वायुश्च सूर्यश्च = वायुसूर्यौ

- द्वन्द्व में स्वरादि और ह्रस्व अकारान्त पद को पहले रखा जाता है।

  यथा— ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ।

- कम स्वर वर्णों वाले पद को पहले रखा जाता है।

  यथा— रामश्च केशवश्च = रामकेशवौ।

- ह्रस्व स्वर वाले पद को पहले रखते हैं।

  यथा— कुशश्च काशश्च = कुशकाशम्

- श्रेष्ठ या पूज्य पदों का प्रयोग पहले होता है।

यथा— माता च पिता च = मातापितरौ (पिता की अपेक्षा माता अधिक पूजनीय है)

4. बहुव्रीहि समास

जिस समास में पूर्व तथा उत्तर दोनों पद प्रधान न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।

विग्रह करते समय इसमें 'यस्य स:' आदि लगाया जाता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण—

महान्तौ बाहू यस्य स:	=	महाबाहु: (विष्णु:)
दश आननानि यस्य स:	=	दशानन: (रावण:)
पीतम् अम्बरम् यस्य स:	=	पीताम्बर: (कृष्ण:)
चत्वारि मुखानि यस्य स:	=	चतुर्मुख: (ब्रह्मा)
चक्रं पाणौ यस्य स:	=	चक्रपाणि: (विष्णु:)
शूलं पाणौ यस्य स:	=	शूलपाणि: (शिव:)
चन्द्र इव मुखं यस्या: सा	=	चन्द्रमुखी (नारी)
पाषाणवत् हृदयं यस्य स:	=	पाषाणहृदय: (पुरुष:)
कमलम् इव नेत्रे यस्य स:	=	कमलनेत्र: (सुन्दर आँखों वाला)
चन्द्र: शेखरे यस्य स:	=	चन्द्रशेखर: (शिव:)

एकशेष

जहाँ अन्य पदों का लोप होकर एक ही पद शेष बचे, वहाँ एकशेष होता है। यह समास से भिन्न वृत्ति है।

उदाहरण— बालकश्च बालकश्च बालकश्च = बालका:।

एकशेष में पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग पदों में से पुँल्लिङ्ग पद ही शेष रहता है।

यथा— माता च पिता च = पितरौ

दुहिता च पुत्रश्च = पुत्रौ

not to be republished © NCERT

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य रिक्तस्थानानां पूर्तिः कोष्ठकात् समुचितैः समस्तपदैः कुरुत—

उदाहरण— तौ लवकुशौ वाल्मीके: आश्रमे पठत: । (लवकुशे/ लवकुशौ)

i) .... जन: नित्यकर्म कृत्वा प्रातराशं करोति। (विशालवृक्ष:/ सुप्तोत्थित:)

ii) त्रयाणां लोकानां समाहार: .... इति कथ्यते। (त्रिलोकी/ त्रिलोकम्)

iii) ऋषे: आश्रम: .... अस्ति। (प्रतिगृहम्/ उपगङ्गम्)

iv) तव .... मलिनम् अस्ति। (पाणिपादा:/ पाणिपादम्)

v) .... सैनिक: व्रणयुक्त: जात:। (स्वर्गपतित:/ अश्वपतित:)

vi) .... जीवनस्य उद्देश्या: सन्ति। (धर्मार्थकाममोक्षं/ धर्मार्थकाममोक्षा:)

प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानि आश्रित्य समस्तपदं विग्रहं वा लिखत—

यथा— भिक्षुक: प्रत्येकं गृहं गच्छति। एकम् एकम् इति

i) शरणम् आगत: तु सदैव रक्षणीय:। ....

ii) विद्यया हीन: छात्र: न शोभते। ....

iii) असत्यं तु त्याज्यं भवति। ....

iv) राम: महाराज: आसीत्। ....

v) सीता च राम: च वनम् अगच्छताम्। ....

vi) तडाग: नीलोत्पलै: सुशोभते। ....

प्र. 3. उदाहरणानि पठित्वा तदनुसारं विग्रहं समासनामानि च लिखत।

उदाहरण—

पाणी च पादौ च तेषां समाहार:— पाणिपादम् (समाहार द्वन्द्व)

माता च पिता च इति — मातापितरौ (इतरेतर द्वन्द्व)

माता च पिता च इति — पितरौ (एकशेष)

i)	ब्राह्मणौ	....
ii)	सुखदुःखम्	....
iii)	शिरोग्रीवम्	....
iv)	रामलक्ष्मणभरताः	....
v)	अजौ	....
vi)	बालकाः	....
vii)	शास्त्रप्रवीणः	....
viii)	नरसिंहः	....
ix)	प्रत्यक्षम्	....
x)	दशाननः	....

प्र. 4. अधोलिखितवाक्येषु समस्तपदं चित्वा तस्य विग्रहं लिखत—

	समस्तपदम्	**विग्रहम्**
i)	विष्णुः पीताम्बरं धारयति।	....
ii)	भवतः कार्यं निर्विघ्नं समापयेत्।	....
iii)	दुर्गासप्तशती पठितव्या।	....
iv)	शरविद्धः हंसः भूमौ पतितः।	....
v)	वृद्धः पुत्रपौत्रम् दृष्ट्वा प्रसीदति।	....
vi)	विष्णुः चक्रपाणिः कथ्यते।	....

© NCERT not to be republished

0974CH10

दशम अध्याय

कारक और विभक्ति

कारक

वाक्य में जिसके द्वारा क्रिया की सिद्धि हो, उसे कारक कहते हैं (क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्)।

किसी वाक्य में क्रिया के सम्पादन में सहायता करने वाले को कारक कहते हैं (क्रियां करोति निर्वर्तयतीति कारकम्)।

हे बालका: ! नृपस्य पुत्र: ययाति: स्वभवने कोषात् स्वहस्तेन याचकेभ्य: धनं ददाति

1.	क: ददाति?	ययाति: (कर्ता)	प्रथमा विभक्ति
2.	किं ददाति?	धनं (कर्म)	द्वितीया विभक्ति
3.	केन ददाति?	हस्तेन (करण)	तृतीया विभक्ति
4.	केभ्य: ददाति?	याचकेभ्य: (सम्प्रदान)	चतुर्थी विभक्ति
5.	कस्मात् ददाति?	कोषात् (अपादान)	पञ्चमी विभक्ति
6.	कुत्र ददाति?	स्वभवने (अधिकरण)	सप्तमी विभक्ति

यहाँ नृपति: आदि पदों का क्रिया के साथ सम्बन्ध है। अत: ये कारक हैं। संस्कृत में सम्बन्ध तथा सम्बोधन को क्रिया से सीधे सम्बद्ध न होने के कारण कारक नहीं माना जाता है। इस वाक्य में नृपस्य पद का ययाति: (कर्ता से) सम्बन्ध है, किन्तु क्रिया ददाति से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह हे बालका:! का भी क्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं है।

- इस तरह कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण— ये छ: कारक हैं।

© NCERT not to be republished

1. **कर्ता**— क्रिया को स्वतन्त्र रूप से करने वाले को कर्ता कहते हैं।

यथा— **गिरीशः** पुस्तकं पठति। यहाँ 'पठति' क्रिया को करने वाला 'गिरीश' है। अतएव यह कर्ता कारक है।

2. **कर्म**— क्रिया के सम्पादन में कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट को कर्म कहते हैं।

यथा— गिरीश: **पुस्तकं** पठति। यहाँ पठन क्रिया के सम्पादन में कर्ता 'गिरीश' के लिए 'पुस्तक' सर्वाधिक अभीष्ट है, अत: कर्मकारक है।

3. **करण**— क्रिया की सिद्धि में कर्ता के प्रमुख सहायक को करण कहते हैं।

यथा— गौरी **जलेन** मुखं प्रक्षालयति। यहाँ 'प्रक्षालन' क्रिया का प्रमुख सहायक जल है। अत: 'जल' करण कारक है।

4. **सम्प्रदान कारक**— जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, वहाँ सम्प्रदान कारक होता है।

यथा— वागीश: मित्राय लेखनीं ददाति। इस वाक्य में मित्र को लेखनी दी जा रही है, अत: 'मित्राय' सम्प्रदान कारक है। इसी तरह 'माता बालकाय फलम् आनयति' वाक्य में फल लाने का कार्य बालक के लिए हो रहा है, अत: 'बालकाय' सम्प्रदान कारक है।

5. **अपादान कारक**— जिससे कोई वस्तु अलग होती है, वह अपादान कारक होता है। 'वृक्षात्' पत्राणि पतन्ति। यहाँ पत्ते (पत्राणि) वृक्ष से अलग हो रहे हैं, अत: 'वृक्षात्' अपादान कारक है।

6. **अधिकरण कारक**— क्रिया का आधार अधिकरण है।

यथा— मुनि: **आसने** तिष्ठति। इस वाक्य में तिष्ठति क्रिया का आधार 'आसने' है, अत: आसने अधिकरण कारक है।

7. **सम्बन्ध और सम्बोधन**— जहाँ एक व्यक्ति अथवा वस्तु का दूसरे व्यक्ति अथवा वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो, वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

यथा— **रामस्य** पुत्र: कुश: गच्छति। यहाँ रामस्य पद में षष्ठी विभक्ति है

जिसका पुत्र कुश से सीधा सम्बन्ध है। अत: 'रामस्य' में सम्बन्धवाचक षष्ठी है। सोहनस्य पुस्तकम् अस्ति। यहाँ सोहन का पुस्तक से सीधा सम्बन्ध है, अत: 'सोहनस्य' में सम्बन्ध कारक है।

जिसे पुकारा जाए या सम्बोधित किया जाए, उसे सम्बोधन कहते हैं। जैसे—हे बालक! कोलाहलं मा कुरु। इस वाक्य में 'बालक' को सम्बोधित किया गया है, अत: सम्बोधन है। क्रिया से सीधा सम्बन्ध न रखने के कारण सम्बन्ध तथा सम्बोधन को संस्कृत में कारक नहीं माना जाता है।

विभक्ति

शब्दों में लगने वाली विभक्तियाँ सात हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी। इनके तीनों वचनों में अलग-अलग प्रत्यय लगते हैं। ये प्रत्यय 21 हैं, जिन्हें सुप् नाम से जाना जाता है। सुप् प्रत्ययों के लग जाने पर ही शब्द पद बनकर प्रयोग योग्य होते हैं तथा सुबन्त कहलाते हैं।

ये विभक्तियाँ दो तरह से प्रयोग की जाती हैं। कारक विभक्ति के रूप में तथा उपपद विभक्ति के रूप में।

- क्रिया के आधार पर (संज्ञादि शब्दों में) लगने वाली विभक्ति को कारक विभक्ति कहते हैं।
- अन्य पदों के आधार पर लगने वाली विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं।

प्रथमा विभक्ति (कर्ता)

- कर्तृवाच्य के कर्ता में और कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है।

यथा— मोहन: दुग्धं पिबति। यहाँ दूध पीने की क्रिया को करने वाला 'मोहन' है। अत: 'मोहन:' में प्रथमा विभक्ति है।

राम: पुस्तकं पठति। इस वाक्य में पुस्तक पठन की क्रिया को करने वाला **'राम'** है, जो प्रधान होने के कारण कर्ता है।

सोहनेन **ग्रन्थ:** पठ्यते। यह वाक्य कर्मवाच्य है, जिसमें कर्म (ग्रन्थ का पढ़ना) प्रधान है, अत: 'ग्रन्थ:' में प्रथमा विभक्ति हुई।

© NCERT not to be republished

- किसी शब्द के अर्थ, लिङ्ग एवं परिमाण को प्रकट करने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

  यथा— मोहनः, पुरुषः, लघुः, लता
- इति के योग में प्रथमा विभक्ति होती है।

  यथा— वयम् इमं कालिदास इति नाम्ना जानीमः।

द्वितीया विभक्ति

- वाक्य में कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट अर्थात् कर्म में द्वितीया विभक्ति लगती है।

वैष्णवी **चित्रं** पश्यति, इस वाक्य में वैष्णवी को चित्र देखना सर्वाधिक अभीष्ट है, अतः चित्र 'कर्म' संज्ञा है और उस में द्वितीया विभक्ति है। इसी प्रकार बालः **मोदकं** वाञ्छति। यहाँ पर बालक को मोदक अभीष्ट है, अतः वह कर्मसंज्ञक है।

- कर्तृवाच्य के वाक्यों के कर्म में द्वितीया विभक्ति लगती है।

यथा— वैष्णवी **चित्रं** रचयति, यहाँ 'चित्र' की रचना करना ही कर्ता का कर्म है, अतः चित्र में द्वितीया विभक्ति है।

अभितः (सामने), परितः (चारो तरफ), समया (पास), निकषा (पास), हा (खेद), प्रति (के ओर), उभयतः (दोनों तरफ), सर्वतः (सर्वत्र), धिक् (धिक्), उपरि (ऊपर), अधः (नीचे), विना (बिना), अन्तरा (बिना), अन्तरेण (बिना) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

i) ग्रामम् **अभितः** वृक्षाः सन्ति।
ii) नगरं **परितः** मार्गाः सन्ति।
iii) विद्यालयं **समया** उद्यानम् अस्ति।
iv) नदीं **निकषा** शीतलः समीरः वहति।
v) **हा!** बालघातिनम्।
vi) अहं मित्रं **प्रति** किमपि न कथयिष्यामि।
vii) मार्गम् **उभयतः** वृक्षाः सन्ति।
viii) आश्रमं **सर्वतः** वनानि सन्ति।
ix) **धिङ्** मूर्खम्।

x) मम गृहम् **उपरि** वायुयानं गच्छति।

xi) भूमिम् **अध:** जन्तव: सन्ति।

xii) पुत्रं **विना** माता दु:खिता अभवत्।

xiii) परिश्रमम् **अन्तरा** सुखं नास्ति।

xiv) हास्यम् **अन्तरेण** जीवनं निरर्थकम्।

अधि उपसर्ग पूर्वक शीङ् स्था, आस्, वस् धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

i) राजकुमार: **पर्यङ्कम्** अधिशेते।

ii) विष्णु: **वैकुण्ठम्** अधितिष्ठति।

iii) प्राचार्य: **उच्चासनम्** अध्यास्ते।

iv) मुनि: **वनम्** अधिवसति।

व्यवधान रहित कालवाची एवं मार्गवाची शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

i) छात्र: **द्वादशवर्षाणि** अपठत्।

ii) छात्र: **मासं** पुस्तकम् अपठत्।

iii) मथुरानगरम् इत: **क्रोशं** वर्तते।

iv) विद्यालयात् **क्रोशद्वयं** पर्वत: वर्तते।

निम्नलिखित के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

सेव् (सेवा करना)	—	पुत्र: **पितरं** सेवते।
आ + रुह् (चढ़ना)	—	बालक: **वृक्षम्** आरोहति।
(अनु) (पीछे)	—	पुत्र: **पितरम्** अनुगच्छति।
निन्द् (निन्दा करना)	—	दुष्ट: **सज्जनं** निन्दति।
रक्ष् (रक्षा करना)	—	रक्षका: **ग्रामं** रक्षन्ति।
गम् (जाना)	—	बालिका: **नगरं** गच्छन्ति।
दुह् (दुहना)	—	राधा **गां** पय: दोग्धि।
याच् (मागना)	—	पुत्री **मातरं** धनं याचते।
पच् (पकाना)	—	स: **तण्डुलान्** ओदनं पचति।

© NCERT not to be republished

दण्ड् (दण्ड देना)	—	राजा चौरं **शतं** दण्डयति।
प्रच्छ् (पूछना)	—	शिष्य: गुरुं **प्रश्नं** पृच्छति।
नी (ले जाना)	—	कृषक: **अजां ग्रामं** नयति।
चि (चुनना)	—	मालाकार: पादपं **पुष्पाणि** चिनोति।
ब्रू (बोलना)	—	गुरु: शिष्यं **धर्मं** ब्रूते (वदति)।
शास् (शिक्षा देना)	—	गुरु: **शिष्यं** शास्ति।
जि (जीतना)	—	पाण्डवा: **कौरवान्** अजयन्।
मथ् (मथना)	—	गोपी **दधि नवनीतं** मथ्नाति।
मुष् (चुराना)	—	चौर: **धनं** मुष्णाति।

दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह् ये धातुएँ द्विकर्मक होती हैं। इनके दोनों ही कर्मों में द्वितीया विभक्ति होती है। उपर्युक्त उदाहरणों में अधिकांश में दो कर्मों का प्रयोग किया गया है। कुछ में (जि, शास्, मुष्) एक ही कर्म का प्रयोग किया गया है। पर यदि वहाँ दूसरे कर्म का प्रयोग होगा तो भी दोनों में द्वितीया विभक्ति ही लगेगी।

तृतीया विभक्ति

- जिसकी सहायता से कार्य किया जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। रचना कलमेन पत्रं लिखति। वाक्य में पत्र का लेखन कलम की सहायता से किया जा रहा है, अत: पत्र लेखन में सहायक होने के कारण 'कलम' में तृतीया विभक्ति है। राम: रावणं 'बाणेन' हतवान्। इस वाक्य में रावण को मारने में 'बाण' प्रमुख साधन है। अत: ‘बाणेन’ में तृतीया विभक्ति है।

- अधोलिखित शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है—

सह (साथ)	—	सोहन: **रामेण** सह गच्छति।
सार्धम् (साथ)	—	गोपाल: **रामपालेन** सार्धम् क्रीडति।
सदृशम् (समान)	—	सीताया: मुखं **चन्द्रेण** सदृशम् अस्ति।
समम् (साथ)	—	**भोजनेन समं** जलं पिब।

समः (समान)	—	भोजः पराक्रमे **विक्रमेण समः** आसीत्।
अलम् (बस)	—	**अलं विवादेन।**
विना (बिना)	—	**रामेण विना** सीता दुःखिता अभवत्।

- जिस अङ्ग में कोई विकार प्रदर्शित करना हो, उस अङ्गवाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है—

    i) देवदत्तः **नेत्रेण काणः** अस्ति।

    ii) अश्वः **पादेन खञ्जः** अस्ति।

- फल प्राप्ति या कार्य की पूर्णता के अर्थ में समय की निरन्तरता का बोध कराने वाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है—

    i) रामः **सप्ताहेन** पुस्तकं समाप्तवान्।

    ii) बालः **सप्तभिः दिवसैः** नीरोगः जातः।

- पृथक्, विना तथा नाना के योग में द्वितीया, तृतीया या पञ्चमी विभक्तियों में से कोई भी एक लगती है—

    i) **जलं जलेन जलात्** वा विना न कोऽपि जीवितुं शक्नोति।

    ii) **ईश्वरम् ईश्वरेण ईश्वरात्** वा पृथक् न कोऽपि अस्मान् रक्षितुं समर्थः।

    iii) **विद्यां विद्यया विद्यायाः** वा नाना न सुखम्।

चतुर्थी विभक्ति

- सम्प्रदान कारक के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
- 'दा' धातु के योग में जिसे दिया जा रहा है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

यथा— पिता **पुत्राय** पुस्तकं यच्छति।

राजा **भिक्षुकाय** वस्त्रं ददाति।

अधोलिखित शब्दों या धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है—

रुच् (अच्छा लगना)	—	बालकाय मोदकं रोचते।
क्रुध् (क्रोध करना)	—	स्वामी सेवकाय क्रुध्यति।

कुप् (क्रोध करना) — माता पुत्राय कुप्यति।
द्रुह् (द्रोह करना) — मन्दमति: छात्र: योग्याय छात्राय द्रुह्यति।
स्पृह् (चाहना) — आभूषणेभ्य: स्पृहयति नारी।
ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना) — दुर्योधन: अर्जुनाय ईर्ष्यति।
असूय् (निन्दा करना) — धनहीन: धनिकाय असूयति।
नम: (नमस्कार) — गुरवे नम:।
स्वस्ति (कल्याण हो) — स्वस्ति प्राणिभ्य:।
स्वधा (पितरों को जल देना) — पितृभ्य: स्वधा।
स्वाहा (समर्पित) — अग्नये स्वाहा।
नि + विद् (निवेदन करना) — स: गुरवे निवेदयति।

पञ्चमी विभक्ति

- अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
- जिसे नियम पूर्वक पढ़ा जाए उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।

  यथा— अहं **गुरो:** संस्कृतं पठामि।
- जहाँ से कोई वस्तु उत्पन्न होती है उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।
  - i) गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
  - ii) बीजात् जायते वृक्ष:।
- जहाँ से कोई व्यक्ति या वस्तु अलग होती है वहाँ पञ्चमी विभक्ति होती है—
  - i) मोहन: **विद्यालयात्** आगच्छति।
  - ii) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति।

भी, त्रा तथा त्रस् धातुओं के योग में (भय हेतु में) पञ्चमी विभक्ति होती है—

i) राम: **पापात्** बिभेति।

ii) रक्षक: **चौरात्** त्रायते।

iii) गोकुल: **दुर्जनात्** त्रस्त:।

निम्न अव्ययों के योग से पञ्चमी विभक्ति होती है—

ऋते (विना)	—	ईश्वरात् **ऋते** न कोऽपि मम रक्षक:।
प्रभृति (से लेकर, शुरू करके)	—	तत: **प्रभृति** स: नित्यं विद्यालयं गच्छति।
पृथक् (अलग)	—	ईश्वरात् **पृथक्** नास्ति कोऽपि रक्षक:।
दूरम् (दूर)	—	प्राथमिकविद्यालय: ग्रामात् **दूरम्** अस्ति।
बहि: (बाहर)	—	मूषक: बिलात् **बहि:** आगच्छत्।
आरभ्य (आरम्भ करके)	—	सोमवासरात् **आरभ्य** वृष्टि: जायते।
आरात् (निकट)	—	ग्रामात् **आरात्** नदी अस्ति।
अनन्तरम् (बाद)	—	त्वम् पठनात् **अनन्तरं** क्रीडाक्षेत्रं गच्छ।
प्रमाद (उपेक्षा, आलस्य)	—	पठनात् मा **प्रमाद:**।
अन्य (दूसरा)	—	ईश्वरात् **अन्य:** कोऽपि पालक: नास्ति ?
पूर्वं (पहले)	—	विद्यालयगमनात् **पूर्वं** गृहकार्यं कुरु।
बहि: (बाहर)	—	मूषक: बिलात् **बहि:** आगच्छत्।
प्राक्	—	सोमवासरात् **प्राक्** रविवासर: भवति।

षष्ठी विभक्ति

- सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है

i) **रामस्य** पुस्तकम्

ii) **कृष्णस्य** ग्राम:

iii) **मृत्तिकाया:** घट:

निम्नलिखित शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है—

कृते (लिए)	—	बालकस्य **कृते** जलम् आनय।
हेतु: (कारण)	—	कस्य **हेतो:** अयम् उत्सव: ?
समक्षम् (सामने)	—	गुरो: **समक्षम्** असत्यं मा वद।
मध्ये (बीच में)	—	हंसानां **मध्ये** बक: न शोभते।

अन्त: (अन्दर) — अतिथि: गृहस्य **अन्त:** प्राविशत्।

दूरम् (दूर) — किं **दूरं** व्यवसायिनाम्।

अनादरम् (अनादर) — कस्यापि **अनादरम्** मा कुरु।

- कतिपय (तसिल्) तस् प्रत्ययान्त पदों के साथ षष्ठी होती है।

यथा— ग्रामस्य पूर्वत: नदी वहति।

- अनेक में एक का निश्चय करने में षष्ठी एवं सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं—

i) सोहन: **वीराणां/वीरेषु** वा महावीर: अस्ति।

ii) **कवीनां / कविषु** वा **कालिदास:** श्रेष्ठ:।

अध: (नीचे) — वृक्षस्य **अध:** श्रमिक: शेते।

उपरि (ऊपर) — भवनस्य **उपरि** पक्षिण: सन्ति।

पुर: / पुरस्तात् (सामने) — गृहस्य **पुर:**/ पुरस्तात् निम्बवृक्ष: अस्ति।

सप्तमी विभक्ति

अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है—

i) **वृक्षे** फलानि सन्ति।

ii) सिंह: **वने** वसति।

- जिसके समस्त अवयवों में कोई वस्तु व्याप्त हो वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है—

तिलेषु तैलं विद्यते।

- जो कर्ता की इच्छा में विद्यमान हो, वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है—

रामस्य **पठने** अनुराग: अस्ति।

- जहाँ एक क्रिया के अनन्तर दूसरी क्रिया का होना पाया जाए वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है—

i) **सूर्ये** अस्तं गते पक्षिण: नीडं गता:।

ii) **रामे** वनं गते दशरथ: प्राणान् अत्यजत्।

iii) **रुदति बालके** पिता कार्यालयं गत:।

© NCERT not to be republished

- समूह में किसी एक की श्रेष्ठता के निर्धारण में सप्तमी / षष्ठी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है—

i) **बालकेषु** बालकानां वा रमेश: श्रेष्ठ:।
ii) **पक्षिषु** पक्षिणां वा काक: चतुर:।
iii) **वीरेषु** वीराणां वा राणाप्रताप: श्रेष्ठ:।
iv) **पशुषु** पशूनां वा सिंहो राजा भवति।
v) **धावत्सु** धावतां वा कपिल: श्रेष्ठ:।

- निमित्त (कारण) अर्थ में सप्तमी विभक्ति होती है—

चर्मणि मृगं हन्ति—

- प्रवीण: (कुशल), चतुर शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभिक्त होती है—

प्रवीण: (कुशल) — **वीणायां** प्रवीण:।
चतुर: (चतुर) — रमा **वार्तालापे** चतुरा।

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठकेषु मूलशब्दा: प्रदत्ता:। तेषु उचितविभक्ती: योजयित्वा रिक्तस्थानानानि पूरयत—

i) बालका: .... पृच्छन्ति। (अम्बा)
ii) नास्ति .... सम: शत्रु:। (क्रोध)
iii) .... भीत: बालक: क्रन्दति। (चौर)
iv) शिष्या: .... विद्यां गृह्णन्ति। (गुरु)
v) अहं .... प्राक् आगमिष्यामि। (अध्यापक)
vi) अस्माकम् बालिका: .... कुशला: सन्ति। (गायन)
vii) माता .... स्निह्यति। (शिशु)
viii) .... क्रोध: जायते। (काम)
ix) .... नम:। (सरस्वती)
x) अलम् .... । (विवाद)
xi) भिक्षुक: .... याचते। (भिक्षा)
xii) धिक् देशस्य .... । (शत्रु)
xiii) वीर: .... न विरमति। (धर्मयुद्ध)
xiv) दुर्योधन: .... जुगुप्सति स्म। (पाण्डव)
xv) .... अर्जुन: श्रेष्ठ: धनुर्धर:। (भ्रातृ)
xvi) पितरौ .... सर्वस्वं यच्छत:। (अस्मद्)
xvii) किम् .... एतत् गीतं रोचते ? (युष्मद्)
xviii) .... परित: वायुमण्डलम् अस्ति। (पृथ्वी)
xix) .... बहि: छात्रा: कोलाहलं कुर्वन्ति? (कक्षा)
xx) अहम् .... पूर्वं .... वन्दे। (शयन, ईश्वर)
xxi) परिश्रमिण: .... स्पृहयन्ति। (सफलता)
xxii) वाल्मीकि: .... रचयिता ? (रामायणम्)
xxiii) .... विभाति सर:। (पंकज)

प्र. 2. कोष्ठकेभ्य: शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत—

i) .... सह सीता वनम् अगच्छत्। (रामस्य/रामेण)

ii) माता .... स्निह्यति। (माम्/मयि)

iii) .... मोदकं रोचते। (मोहनम्/मोहनाय)

iv) स: .... धनं ददाति। (रमेशम्/रमेशाय)

v) .... पत्राणि पतन्ति। (वृक्षेण/वृक्षात्)

vi) अध्यापिका .... पुस्तकं यच्छति। (सुलेखाम्/सुलेखायै)

vii) .... परित: वृक्षा: सन्ति। (विद्यालयम्/विद्यालयस्य)

viii) .... नम:। (गुरवे/गुरुम्)

प्र. 3. उचितविभक्तिप्रयोगं कृत्वा अधोलिखितपदानां सहायतया वाक्यरचनां कुरुत—

i) समम्   ii) धिक्

iii) उभयत: iv) विना

v) अन्ध: vi) बहि:

vii) प्रवीण: viii) अलम्

ix) विभेति   x) श्रेष्ठ:

प्र. 4. 'क' स्तम्भे शब्दा: दत्ता: सन्ति, 'ख' स्तम्भे च विभक्तय:। कस्य योगे का विभक्ति: प्रयुज्यते इति योजयित्वा लिखत—

	'क'	**'ख'**
i)	'रुच्' धातु योगे	(क) तृतीया
ii)	'सह' शब्द योगे	(ख) चतुर्थी
iii)	'नम:' शब्द योगे	(ग) पञ्चमी
iv)	'भी' 'त्रा' धातु योगे	(घ) चतुर्थी
v)	'दा' धातु योगे	(ङ) प्रथमा
vi)	कर्तृवाच्यस्य कर्तरि	(च) तृतीया
vii)	कर्मवाच्यस्य कर्तरि	(छ) चतुर्थी
viii)	'विना' योगे	(ज) तृतीया
ix)	यस्मिन् अङ्गे विकार: भवति तस्मिन्	(झ) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
x)	कर्मवाच्यस्य कर्मणि	(ञ) प्रथमा

© NCERT not to be republished

प्र. 5. 'स्थूलपदानां' स्थाने शुद्धपदं लिखत—

i) **अध्यापिकाया:** परित: छात्रा: सन्ति। ....

ii) छात्र: **आचार्याय** प्रश्नम् पृच्छति। ....

iii) सीता **लेखन्या:** लेखं लिखति। ....

iv) गोपाल: **शिवस्य** सह वार्तां करोति। ....

v) चौरा: **आरक्षिणा** विभ्यति। ....

vi) **महापुरुषम्** नम:। ....

vii) **त्वाम्** किम् रोचते? ....

viii) **कवये** कालिदास: श्रेष्ठ:। ....

ix) सा **गृहकर्मण:** निपुण:। ....

x) अहम् **रेलयानात्** कालिकातां गमिष्यामि। ....

© NCERT not to be republished

एकादश अध्याय

वाच्य परिवर्तन

अभिव्यक्ति या कथन के प्रकटीकरण की विधा को वाच्य कहते हैं। संस्कृत में वाच्य तीन तरह के होते हैं —

1. कर्तृवाच्य

इस वाच्य में कर्ता प्रधान होता है तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होती है। इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा— रामः गृहं गच्छति।

इस वाक्य में 'राम' कर्ता और 'गृहम्' कर्म है। इसकी क्रिया 'गच्छति' कर्ता 'राम' के अनुसार एकवचन की है।

बालिका पाठम् पठितवती।

इस वाक्य में 'बालिका' कर्ता तथा 'पाठम्' कर्म तथा 'पठितवती' क्रिया है।

सैनिकः देशं रक्षति।

इस वाक्य में 'सैनिकः' कर्ता, 'देशम्' कर्म तथा 'रक्षति' क्रिया है।

2. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है, अतः कर्म में प्रथमा तथा कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यहाँ क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार होता है। जिस लिङ्ग, पुरुष तथा वचन में कर्म होता है, उसी लिङ्ग, पुरुष तथा वचन में क्रिया का प्रयोग होता है।

यथा— रामेण गृहं गम्यते।
विद्यार्थिना पाठः पठ्यते।
मया चित्रे दृश्येते।

© NCERT not to be republished

इन वाक्यों में क्रमश: गृहम्, पाठ: तथा चित्रे कर्म हैं। अत: प्रथम दो वाक्यों में कर्म के एकवचन के अनुसार क्रिया भी एकवचन में तथा तीसरे में चित्रे में द्विवचन के कारण क्रिया भी द्विवचन में प्रयुक्त है।

3. भाववाच्य

भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। भाववाच्य में क्रिया का अर्थ या भाव ही प्रधान होता है, क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। भले ही कर्ता एकवचन में हो या बहुवचन में।

यथा— (मया / त्वया / युवाभ्याम् / आवाभ्यां / अस्माभि: / तै:) सुप्यते / आस्यते।

वाच्य परिवर्तन के नियम— कर्तृवाच्य में वर्तमानकाल की क्रियाओं को यदि कर्मवाच्य में परिवर्तित किया जाता है तो क्रियाओं में इस प्रकार परिवर्तन होता है।

उदाहरण—

कर्तृवाच्य की क्रिया	—	कर्मवाच्य / भाववाच्य की क्रिया
पठति	—	पठ्यते
लिखति	—	लिख्यते
खादति	—	खाद्यते
भवति	—	भूयते
धावति	—	धाव्यते
हसति	—	हस्यते
करोति	—	क्रियते
क्रीणाति	—	क्रीयते
नयति	—	नीयते
गच्छति	—	गम्यते
उत्पतति	—	उत्पत्यते
रोदिति	—	रुद्यते

भूतकाल की क्रियाओं में कर्तृवाच्य में जहाँ 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग होता है, वहाँ कर्मवाच्य में 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग होता है— साथ ही साथ कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

यथा— स: फलानि खादितवान्। (कर्तृवाच्य)

तेन फलानि खादितानि। (कर्मवाच्य)

अहम् ग्रन्थान् पठितवान्। (कर्तृवाच्य)

मया ग्रन्था: पठिता:। (कर्मवाच्य)

वयम् गुरुम् पूजितवन्त:। (कर्तृवाच्य)

अस्माभि: गुरु: पूजित:। (कर्मवाच्य)

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य यथानिर्दिष्टं वाच्यपरिवर्तनं कुरुत—

यथा— राम: गृहं गच्छति। (कर्तृवाच्य)
रामेण गृहं गम्यते।
कमलया पायसम् पक्वम्। (कर्मवाच्य)
कमला पायसम् पक्ववती।
छात्रा: हसन्ति। (भाववाच्य)
छात्रै: हस्यते।

i) अहं कार्यं कृतवान्। (कर्मवाच्य)
ii) त्वम् पुस्तकम् पठितवान्। (कर्मवाच्य)
iii) स: गायति। (भाववाच्य)
iv) युवाभ्यां सुलेख: लिखित:। (कर्तृवाच्य)
v) ता: रुदन्ति। (भाववाच्य)
vi) मोहन: कन्दुकम् क्रीडति। (कर्तृवाच्य)
vii) छात्रै: दुग्धं पीतम्। (कर्तृवाच्य)
viii) छात्र: हसति। (भाववाच्य)
ix) मम भ्राता उद्याने भ्रमति। (भाववाच्य)
x) सैनिक: युद्धक्षेत्रं गच्छति। (कर्मवाच्य)

प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु कर्तृपदे वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत—

यथा— **राजेन्द्र :** पाटलिपुत्रं गच्छति।
राजेन्द्रेण पाटलिपुत्रं गम्यते।

	कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
i)	.... रोटिकां खादति।	तेन रोटिका खाद्यते।
ii)	छात्र: ग्रन्थं पठति।	.... ग्रन्थ: पठ्यते।
iii)	.... राजभवनं गच्छति।	शकुन्तलया राजभवनं गम्यते।
iv)	दुष्यन्त: आखेटं करोति।	.... आखेट: क्रियते।
v)	.... गीतं गायति।	गायकेन गीतं गीयते।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्यानां कर्मपदे परिवर्तनं कुरुत—

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
i)	अहं .... पूजयामि।	मया **देव:** पूज्यते।
ii)	बालक: **फलं** खादितवान्।	बालकेन .... खादितम्।
iii)	त्वं **गृहं** गच्छसि।	त्वया .... गम्यते।
iv)	स: .... कथितवान्।	तेन **साधु:** कथित:।
v)	यूयं **कथां** श्रुतवन्त:।	युष्माभि: .... श्रुता।

प्र. 4. अधोलिखितवाक्यानां क्रियापदे परिवर्तनं कुरुत—

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
i)	स: जलम् **पिबति।**	तेन जलम् ....।
ii)	कपोत: आकाशे ....।	कपोतेन आकाशे **उत्पत्यते।**
iii)	सुनीता आभूषणं **धारयति।**	सुनीतया आभूषणं ....।
iv)	नेता भाषणं **करोति।**	नेत्रा भाषणं ....।
v)	स: कथां ....।	तेन कथा **श्रुता।**
vi)	श्रमिक: कार्यं **कृतवान्।**	श्रमिकेण कार्यं ....।
vii)	पुत्र: मातरं ....।	पुत्रेण माता **पूजिता**
viii)	त्वम् आचार्यम् **आदृतवान्।**	त्वया आचार्य: ....।

प्र. 5. अधोलिखितानां कथनानाम् उत्तरे त्रय: विकल्पा: दत्ता:। शुद्धविकल्पस्य समक्षे (✓) इति कुरुत—

(क) कर्तृवाच्यस्य कर्तरि विभक्ति: भवति—

i) प्रथमा ( ) (ii) द्वितीया ( ) (iii) तृतीया ( )

(ख) कर्तृवाच्यस्य कर्मणि विभक्ति: भवति—

i) प्रथमा ( ) (ii) द्वितीया ( ) (iii) तृतीया ( )

(ग) कर्मवाच्यस्य कर्तरि विभक्ति: भवति—

i) प्रथमा ( ) (ii) द्वितीया ( ) (iii) तृतीया ( )

(घ) कर्मवाच्यस्य कर्मणि विभक्ति: भवति—

i) प्रथमा ( ) (ii) द्वितीया ( ) (iii) तृतीया ( )

(ङ) भाववाच्यस्य कर्तरि विभक्ति: भवति—

i) प्रथमा ( ) (ii) द्वितीया ( ) (iii) तृतीया ( )

© NCERT not to be republished

0974CH12

रचना प्रयोग

1. पत्रम्

i) रुग्णताया: कारणात् अवकाशप्राप्तये प्रधानाचार्यं प्रति पत्रम्—

सेवायाम्

प्रधानाचार्य-महोदया:

केन्द्रीय-विद्यालय:

आर. के. पुरम्, सैक्टर:-द्वितीय:

नवदेहली - 110022

विषय:— अवकाशप्राप्तये निवेदनम्

मान्यवरा: / महोदया:,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं शिरोवेदनया पीडित: अस्मि। एतस्मात्कारणात् अद्य विद्यालयम् आगन्तुमसमर्थ: अस्मि। अत: प्रार्थये यत् दिनद्वयस्य अवकाशं प्रदाय अनुग्रहं कुर्वन्तु भवन्त:।

धन्यवादा:

भवतां विनीत: शिष्य:

नरेन्द्र:

कक्षा 10

वर्ग: 'ब'

दिनाङ्क : ....

© NCERT not to be republished

ii) शुल्कक्षमापनार्थं प्रधानाचार्यं प्रति पत्रम्—

सेवायाम्

प्रधानाचार्य-महोदया:

केन्द्रीय-विद्यालय:

आर. के. पुरम्, सैक्टर: चतुर्थ:

नवदेहली - 110022

विषय:— शुल्कक्षमापनार्थं निवेदनम्

मान्यवरा: / महोदया:,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं भवत: विद्यालये दशमकक्षाया: 'स' वर्गस्य छात्र: अस्मि। मम पिता एकस्मिन् विद्यालये द्वारपाल: अस्ति। तस्य मासिकवेतनम् द्विसहस्ररूप्यकमात्रम् अस्ति। अस्माकं कुटुम्बे पञ्च सदस्या: सन्ति। अनेन वेतनेन कुटुम्बस्य निर्वाह: काठिन्येन भवति। अत: शुल्कक्षमापनार्थं प्रार्थये।

आशासे यत् मदीयाम् इमां प्रार्थनां स्वीकृत्य शुल्कक्षमापनद्वारा माम् उपकरिष्यन्ति श्रीमन्त:।

धन्यवादा:।

भवतां विनीत: शिष्य:

सुरेन्द्र:

कक्षा 10

वर्ग: 'ब'

दिनाङ्क: ....

© NCERT not to be republished

iii) पुस्तकानि प्रेषयितुं प्रकाशकं प्रति पत्रम्—

सेवायाम्

व्यवस्थापक-महोदया:

आर्य बुक डिपो

करोलबाग

नवदेहली

महोदय: / महोदया:,

सेवायाम् निवेदनमस्ति यत् अहम् अधोलिखितानि पुस्तकानि क्रेतुम् इच्छामि। अत: यत् समुचितमुन्मोकं (कमीशनं) निष्कास्य एतानि पुस्तकानि वी.पी. माध्यमेन प्रेषयन्तु भवन्त:। शीघ्रता प्रशंसनीया स्यात्।

	पुस्तकानां नामानि	**लेखकानां नामानि**	**प्रति**
1.	सरल संस्कृत व्याकरणम्	डॉ. परमानंदगुप्त:	1
2.	निबन्धसौरभम्	डॉ. अरुणेशकुमार:	1
3.	कथासागर:	डॉ. वागीश:	1

धन्यवादा:

भावत्क:

अशोक:

61/जवाहरनगरम्

मण्डी

हिमाचल प्रदेश

दिनाङ्क: ....

© NCERT not to be republished

iv) स्वभगिन्या: विवाहे आमन्त्रयितुं स्वमित्रं प्रति पत्रम्—

आर 688
न्यू राजेन्द्र नगरम्
दिल्लीत:
20.11.2012

प्रिय मित्र,

नमस्ते।

इदं ज्ञात्वा प्रसन्नो भविष्यसि यत् भगवत्कृपया मम भगिन्या: लताया: विवाहसंस्कार: अधोलिखितकार्यक्रमानुसारं सम्पत्स्यते। एतदर्थं सानुरोधं निमन्त्रयामि। आशासे यत् यथासमयं आगत्य अस्मान् प्रीणयिष्यसि।

कार्यक्रम:

मंगलवासरे	26.11.2012	प्रात: सप्तवादने यज्ञ: सायम् अष्टवादने वरयात्रीणां स्वागतम् प्रीतिभोजनम् च।
बुधवासरे	27.11.2012	प्रात: पञ्चवादने लताया: पतिगृहगमनम्।

स्वगृहे सर्वेभ्य: मम वन्दनं निवेदय।

दर्शनाभिलाषी
देवेन्द्र:

दिनाङ्क: ....

© NCERT not to be republished

v) पितरौ प्रति परीक्षाया: परिणामसूचकं पत्रम्—

छात्रावास:
केन्द्रीय-विद्यालय:
देहलीछावनीत:
नवदेहली

वन्दनीया: पितृचरणा:

सादरं प्रणम्यते यदहम् अत्र सम्यक् निवसामि। मम परीक्षाफलम् अधुना प्रकाशितम्। नवमकक्षायाम् अहम् प्रथमश्रेण्याम् उत्तीर्ण:। सर्वेषु छात्रेषु मम प्रथमं स्थानमस्ति। अधुना कानिचित् पुस्तकानि क्रेतव्यानि सन्ति। विद्यालयस्य शुल्कमपि देयमस्ति। अत: पञ्चसहस्रं रूप्यकाणि शीघ्रतया प्रेषयन्तु भवन्त:। अहं प्रत्यहं मातु: स्मरणं करोमि। अनुज: रमेश: कथम् अस्ति। भगिनी श्वेता प्रत्यहं पठनाय विद्यालयं गच्छति न वा। अहम् अवकाशे गृहम् आगमिष्यामि।

भवदाशीर्वचसां प्रतीक्षायाम् भवत्पुत्र:
भवभूति:
कक्षा 10
वर्ग: 'ब'
केन्द्रीय-विद्यालय:, दिल्ली

दिनाङ्क: ....

2. दूरभाषवार्ता

(दूरभाषयन्त्रे ध्वनि: भवति)

पिता — (यन्त्रमुत्थाप्य) क: वदति ?
रमेश: — पित:! अहम् रमेश:! प्रणमामि।
पिता — चिरञ्जीव वत्स! अपि कुशली ?
रमेश: — आम् पित:! भवताम् आशीर्वचोभि: सर्वं कुशलम् अस्ति। एक: आवश्यक: प्रसङ्ग: समुपस्थित:। तदर्थम् अहम् भवन्तम् आकारितवान्।

पिता — वत्स! कथय कीदृशं ते प्रयोजनम् ?
रमेश: — मम विद्यालयेन छात्राणाम् आगरानगरस्य दर्शनाय एका आमोदयात्रा आयोज्यते। इयं यात्रा दिनद्वयाय भविष्यति। एतदर्थं कक्षाया: गुरुभ्य: एकसहस्ररुप्यकाणि देयानि सन्ति। कृपया एकसहस्ररुप्यकाणि शीघ्रं प्रेषयन्तु।
पिता — पुत्र! अहमद्यैव वित्तकोषं गत्वा एन.ई.एफ.टी द्वारा रुप्यकाणि प्रेषयिष्यामि। त्वया आमोदयात्रात: प्रत्यागत्य सूचना प्रेष्या।
रमेश: — अहम् आगरात: प्रत्यागत्य अवश्यमेवं सूचयिष्यामि। अधुना ध्वनियन्त्रं निदधानि।
पिता — आम् निधेहि ध्वनियन्त्रम्।
रमेश: — (पितरं प्रणम्य ध्वनियन्त्रम् आधारयन्त्रे निदधाति)

3. अपठित गद्यांश

1. उत्साह: उदासीनता, निराशा चेति तिस्र: मनस: अवस्था:। शिशव: सदा उत्साहशीला: इति विदितमेव। युवान: अपि प्रायेण उत्साहशीला:। अनेके वृद्धा: अपि तथैव। वयस: उत्साहस्य च नास्ति सम्बन्ध:। उत्साह: मानवस्य सहज: स्वभाव:। स: मनस: शरीरस्य च विकासाय भवति। शिशु: उत्साहेन सर्वं ग्रहीतुं, सर्वै: सह खादितुं सर्वै: सह खेलितुं च प्रवर्तते। प्रतिबन्धे कृते रोदिति। उपहासे कृते क्रोधं प्रकटयति किन्तु निराशो न भवति।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

i) शिशु: उपहासे कृते किं करोति? 1

ii) मनस: कति अवस्था: सन्ति? 1

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

i) के के उत्साहशीला: भवन्ति? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत— ½×2 = 1

i) 'अनेके वृद्धा:' अत्र विशेषणपदम् किम्?

ii) 'ज्ञातमेव' इति अर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

2. कस्मिंश्चित् प्रदेशे काचित् नदी प्रवहति स्म। नदीतीरे कश्चन संन्यासी स्वशिष्यै: सह आश्रमं निर्माय वसति स्म। एकदा संन्यासी शिष्यै: सह नद्या: अपरं तीरं गन्तुम् एकां नौकाम् आरूढवान्। वेगेन प्रवहन्त्यां नद्याम् अकस्मात् एका अपरा नौका शिलाया: घट्टनेन निमग्ना अभवत्। तेन तस्यां नौकायां स्थिता: सर्वे जना: मरणं प्राप्तवन्त:। संन्यासी अकथयत्- तस्यां नौकायां स्थितेषु कश्चित् दुष्ट: आसीत् इति मन्ये। अत: ते सर्वे मरणं प्राप्तवन्त:।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

i) संन्यासी कुत्र वसति स्म? 1

ii) अपरा नौका कस्या: घट्टनेन नद्यां निमग्ना अभवत्? 1

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

i) संन्यासी नौकादुर्घटनाया: किं कारणं कथितवान्? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत— ½×2 = 1

i) 'सज्जन:' इति पदस्य विपरीतार्थकपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

ii) 'आरूढवान्' इति क्रियाया: कर्तृपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

3. प्रात:कालादारभ्य सायं पर्यन्तं मानव: अनेकानि कार्याणि करोति। एतेषु कार्येषु किं समीचीनं किं वा असमीचीनम् इति विषये शयनकाले अवश्यं चिन्तनीयम्। एतादृशेन आत्मावलोकनेन स्वकीये आचरणे अज्ञानेन अनवधानेन रागद्वेषाभ्यां वा यदि कश्चन प्रमाद: सञ्जात:, अपचार: द्रोहो वा निष्पन्न: तर्हि तेषां परिमार्जनोपाय: अवश्यम् आलोचनीय:। पश्चात्ताप: अनुभवितव्य:। श्व: प्रभृति एतादृशं प्रमादं न करिष्यामि इति दृढसङ्कल्प: करणीय:।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत— 2

i) किं समीचीनम् किं वा असमीचीनम् इति विषये कदा आलोचनीयम्?

ii) यदि अपचार: द्रोह: वा निष्पन्न: तदा क: अवश्यम् आलोचनीय:?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

i) क: दृढसङ्कल्प: करणीय:? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

i) अनुच्छेदे के पदे परस्परं विपरीतार्थे प्रयुक्ते? 1

4. य: स्वदोषाणां कृते अनुतपति तस्य सत्पथगमनस्य द्वारम् उद्घाटितं भवति। अनुतापानलेन पापानि भस्मीभवन्ति, ग्लानि: नश्यति, चित्तं निर्मलं प्रसन्नं च भवति, सद्विचार: समुदेति। इत्थम् आत्मानुशीलनस्य महत्त्वं जीवने अनुभूयते। तेन कृतेषु कार्येषु त्रुटय: न भवन्ति। अत: कृतदोषोऽपि जन: अनुतप्य सत्कर्मसम्पादनेन जीवने महान् भवितुम् अर्हति।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

i) जीवने कस्य महत्त्वम् अनुभूयते? 1

ii) कृतदोष: जन: केन महान् भवितुं शक्नोति? 1

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

i) अनुतापानलेन किं किं भवति? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत— ½×2 = 1

i) 'एवम्' इति अर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

ii) 'अनुभूयते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

5. कस्मिंश्चित् अरण्ये अनेके पशव: वसन्ति स्म। एकदा पशूनां राजा सिंह: रोगपीडित: अभवत्। एकं शृगालं विहाय सर्वे पशव: रोगपीडितं नृपं द्रष्टुमागता:। एक: उष्ट्र: नृपाय एतत् न्यवेदयत् यत् अहंकारिणं शृगालं

विहाय सर्वे भवन्तं द्रष्टुमागता:। एतच्छ्रुत्वा सिंह: क्रोधितोऽभवत्। स्वमित्रै: एतज्ज्ञात्वा शृगाल: शीघ्रमेव सिंहस्य समीपे प्राप्त:। क्रोधितेन सिंहेन विलम्बेन आगमनकारणं पृष्ट: शृगालोऽवदत् यदहं तु सर्वप्रथममागन्तुम् ऐच्छम् परं चिकित्सकात् औषधमपि आनेयमिति विचिन्त्य तत्रागच्छम्। तच्छ्रुत्वा प्रसन्न: सिंह: औषधविषये पृष्टवान्। शृगाल: अवदत् यत्तेन औषधं तु न दत्तं परं कृपापरो भूत्वा चिकित्साक्रमम् उक्तम् यत् उष्ट्रस्य रक्तपानेनैव रोगस्य शान्ति: भविष्यति। तदा सिंह: उष्ट्रमाहूतवान्। भक्त्या आगतं च तं मारयित्वा तस्य रक्तं पीतवान्। एवं स्वपिशुनताया: दुष्फलम् उष्ट्रेण स्वयमेव प्राप्तम्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरं लिखत— ½ × 4 = 2

i) चिकित्सकेन किम् उक्तमासीत्?

ii) शृगाल: शीघ्रमेव कस्य समीपे प्राप्त:?

iii) उष्ट्रेण कस्या: दुष्फलम् प्राप्तम्?

iv) अनेके पशव: कुत्र वसन्ति स्म?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत— 1× 4 = 4

i) क्रोधितेन सिंहेन किं पृष्टम्?

ii) चिकित्सकेन कीदृशं चिकित्साक्रमम् उक्तम्?

iii) कं विहाय सर्वे सिंहं द्रष्टुमागच्छन्?

iv) सिंह: उष्ट्रमाहूय किं कृतवान्?

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

i) 'प्रसन्न: सिंह:' इति अत्र विशेष्यपदं किम्? 1

ii) 'त्यक्त्वा' इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1

iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। 2

6. अमर्त्यसेन: इति नाम एव संस्कृतमयम्। अमर्त्यसेनवर्यस्य जन्म शान्तिनिकेतने अभवत्। अस्य नाम गुरुदेवेन रवीन्द्रनाथवर्येण चितम्।

अस्य नाम निर्दिशन् स: उक्तवान् आसीत्— "अमर्त्यसेन:" इत्येष: शब्द: संस्कृतमूल: अत: एतस्य उच्चारणं स्पष्टं स्यात्, यत: अर्थपरिवर्तनं न भवेत्। शान्तिनिकेतने वसन् अमर्त्यसेन: बाल्ये संस्कृताभ्यासं कृतवान्। तस्य तीव्र: अभिलाष: अपि आसीत् यत् मातामह: क्षितीशमोहनसेन इव अहम् अपि प्रसिद्ध: संस्कृतविद्वान् भवेयम् इति।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरं लिखत— $1 \times 4 = 4$

i) अमर्त्यसेनस्य मातामहस्य नाम किम् आसीत्?

ii) कुत्र वसन् अमर्त्यसेन: संस्कृताभ्यासं कृतवान् आसीत्?

iii) अमर्त्यसेनस्य नाम केन चितम् ?

iv) किं भवितुम् अमर्त्यसेनस्य तीव्र: अभिलाष: आसीत्?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत—

i) अमर्त्यसेनस्य नामविषये निर्दिशन् रवीन्द्रनाथवर्य: किमुक्तवान्? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

i) 'अस्य नाम' इत्यत्र 'अस्य' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्? 1

ii) 'स्यात्' इत्यर्थे किं क्रियापदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1

iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। 2

7. कदाचित् देवराज: इन्द्र: भूलोकम् आगतवान्। भूलोके कमपि नगरं प्रविष्ट: स: मार्गे गच्छन् आसीत्। तत्र कश्चन विक्रेता बहूनां देवानां विग्रहान् संस्थाप्य विक्रयणं करोति स्म। देवेन्द्र: कुतूहलेन समीपं गत्वा दृष्टवान्। तत्र विष्णु:, शिव:, लक्ष्मी:, सरस्वती, गणेश: इत्यादीनां देवानां विग्रहा: आसन्। देवेन्द्रस्य विग्रह: अपि तत्र आसीत्। देवेन्द्र: एकैकस्यापि विग्रहस्य मूल्यं पृष्ट्वा-पृष्ट्वा ज्ञातवान्। अन्ते च कुतूहलेन तत्र स्थितस्य देवेन्द्रविग्रहस्य मूल्यं पृष्टवान्। स: विक्रेता उक्तवान्— य: कोऽपि कमपि विग्रहं क्रीणाति तस्मै एष: देवेन्द्र-विग्रह: नि:शुल्कं दीयते इति। तदा तु देवेन्द्रस्य स्थिति: शोचनीया एव आसीत्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

i) देवराज: कुत्र आगतवान्? 1

ii) कस्य स्थिति: शोचनीया आसीत्? 1

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

i) विक्रेता तत्र केषां देवानां विग्रहान् स्थापितवान्? 2

ii) देवेन्द्रविग्रहं कस्मै नि:शुल्कं दीयते? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

i) 'स्थिति: शोचनीया' अत्र विशेष्यपदं किम्? 1

ii) 'अपश्यत्' इत्यर्थे किं क्रियापदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1

iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। 2

8. हरियाणाराज्ये यमुनानगरमण्डले एक: संस्कृतपरिवार: अस्ति। तस्मिन् गृहे सर्वे संस्कृते सम्भाषणं कुर्वन्ति। तत्र पशवोऽपि संस्कृतम् अवबोद्धुं समर्था: सन्ति। तस्मिन् गृहे अभिमन्यु: नाम एक: युवक: अस्ति। सोऽपि संस्कृतं वदति। एकदा तत्र एक: संस्कृतप्राध्यापक: आगतवान्। तेन सह अभिमन्यु: संस्कृतेन सम्भाषणं कृतवान्। तस्य युवकस्य प्रतिभां दृष्ट्वा प्राध्यापक: अभिमन्यवे शतं रूप्यकाणि दत्तवान्। तस्मात् दिनात् तस्य मनसि संस्कृतं प्रति महती अभिरुचि: समुत्पन्ना। स: प्रतिदिनं गीताया: श्लोकान् पठित्वा-पठित्वा सर्वान् श्लोकान् अस्मरत्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत—

i) संस्कृतपरिवार: कुत्र अस्ति? 1

ii) प्राध्यापक: कस्मै शतं रूप्यकाणि दत्तवान्? 1

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

i) प्राध्यापक: अभिमन्यवे शतं रूप्यकाणि किमर्थं दत्तवान्? 2

ii) युवक: कथं गीताया: श्लोकान् अस्मरत्? 2

© NCERT not to be republished

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

i) 'अयच्छत्' इत्यर्थे किं क्रियापदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1

ii) 'कृतवान्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् चित्वा लिखत। 1

iii) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। 2

9. एकस्मिन् दिने बहव: जिज्ञासव: तत्त्वज्ञानं श्रोतुं महात्मन: सुकरातस्य गृहम् आगच्छन्। ज्ञानचर्चां शृण्वतां तेषां भूयान् काल: व्यतियात:। सुकरातस्य पत्नी गृहेऽपेक्षितानां वस्तूनाम् अभावचर्चां चिकीर्षति स्म, किन्तु तत्र उपस्थिते जनसमवाये एतत् सुकरं नासीत्। तत: कोपविहितचेतना सा अपशब्दान् उच्चारयन्ती तत्र समायाता, आगन्तुकेषु च पय: पातयन्ती प्रतिनिवृत्ता। सुकरात: सर्वान् सम्बोधयन् सस्मितम् उवाच, श्रुतम् एव भवद्भिर्यत् ये मेघा: गर्जन्ति, ते न वर्षन्ति, किन्तु अद्य प्रकृत्यां विपर्यास: परिलक्षितो भवति, मेघा: गर्जन्ति वर्षन्ति च।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

I. एकपदेन उत्तरत— 2

i) के महात्म-सुकरातस्य गृहम् आगच्छन्? 1

ii) सुकरातस्य पत्नी आगन्तुकेषु किं पातयन्ती प्रतिनिवृत्ता? 1

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

i) सुकरातस्य पत्नी किं चिकीर्षति स्म? 2

ii) सुकरातस्य मते प्रकृत्यां क: विपर्यास: परिलक्षित:? 2

III. यथानिर्देशम् उत्तरत—

i) 'कोपविहितचेतना सा' इति पदे अनुच्छेदे कस्यै प्रयुक्ते? 1

ii) 'अनेके' इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्? 1

iii) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। 2

4. अनुच्छेदलेखनम्

किसी विषय के एक बिन्दु पर विचारों या भावों को एक स्थान पर क्रमबद्ध रूप से लिखना अनुच्छेद कहलाता है।

नैतिकशिक्षाया: महत्त्वम्

'शिक्ष्' 'विद्योपादाने' इति व्युत्पत्त्या शिक्षाशब्दस्य अर्थ: विद्यार्जनम् एव किन्तु केवलानि पुस्तकानि कण्ठस्थीकृत्य उपाधिं प्राप्य जीविकोपार्जनम् एव शिक्षा नास्ति। जीवने सत्यम्, अहिंसा, विनम्रतानियमसाहसप्रभृतीनाम् उच्चादर्शाणाम् सम्यक् समावेशनम् एव शिक्षाया: उद्देश्यं भवति। यया शिक्षया एतादृशाणां सद्गुणानां विकास: भवति सा नैतिकशिक्षेति उच्यते। नैतिकशिक्षामाध्यमेन मानवानां मूलप्रवृत्तय: संशोध्यन्ते। नैतिकशिक्षया सङ्कीर्णानां विचाराणाम् अपनयनं भवति। उचितानुचितनिर्णयक्षमताया: विकासोऽपि भवति। सम्प्रति लोके चौर्यहिंसाबलात्कार—घृणाद्वेषादिघृणितप्रवृत्तय: अनियंत्रणीया: सञ्जाता:। अत: अस्माभि: मूलप्रवृत्तीनां संयमनम् अवश्यं कर्त्तव्यम्। नैतिकशिक्षाबलेन एव वयं गतगौरवं पुन: प्राप्तुं शक्नुम:।

महामना मदनमोहनमालवीय:

महामनामदनमोहनमालवीयमहोदय: वैदिकधर्मस्य उद्धारकेषु अन्यतम:। 1869 तमे वर्षे प्रयागसमीपवर्तिनि ग्रामे ब्राह्मणकुले मदनमोहनमालवीयमहोदयानां जन्म अभवत्। स: प्रयागस्थ-म्योर-सेंट्रल-महाविद्यालये शिक्षां प्राप्तवान्। 1884 वर्षात् आरभ्य 1887 वर्षपर्यन्तं स उच्चविद्यालये अध्यापकरूपेण कार्यं कृतवान्। तदनन्तरं स: अनेकानां पत्रपत्रिकाणां सम्पादकरूपेण कार्यं कृतवान्। 1899 तमे वर्षे स: विधिशास्त्रस्य परीक्षाम् उत्तीर्य अधिवक्तृरूपेण अपि कार्यं कृतवान्। राष्ट्रीयताप्रसारणाय, प्राचीनसंस्कृते: गौरववर्धनाय उत्तमशिक्षया च श्रेष्ठसन्ततिनिर्माणाय च स: 1916 तमे वर्षे काश्यां हिन्दूविश्वविद्यालयस्य स्थापनाम् अकरोत्। यद्यपि 1916 तमे वर्षे मालवीयमहोदया: दिवंगता: परं तेषाम् नाम हिन्दूविश्वविद्यालयमाध्यमेन अद्यापि श्रद्धया स्मर्यते।

सत्सङ्गति:

सताम् सङ्गति: इति सत्सङ्गति: कथ्यते। मनुष्य: स्वसंगत्या एव सज्जन: दुर्जनो वा भवति। यो जन: दुर्जनानाम् संसर्गे अधिकं कालं यापयति, सोऽपि दुर्जन:

भवति। सुमन: सङ्गात् कीट: अपि सतां शिरसि आरोहति, परं यदि कोऽपि सज्जन: अपि चौराणाम् संसर्गे कालं यापयति तदा आरक्षिभि: सोऽपि चौर: एव कथ्यते। अत एव अस्माभि: सर्वदा सत्सङ्गति: एव करणीया।

परोपकार:

परेषाम् उपकार: परोपकार: अस्ति। परोपकारप्रवृत्त्या एव मनुष्य: पशुभ्य: पृथक् भवति। आहारादिप्रवृत्तय: तु पशुषु अपि तथैव भवन्ति यथा मानवेषु। परं मानव: स्वविवेकेन उचितानुचितज्ञानेन एव आत्मानम् उच्चासने उच्चपदे च स्थापयति। वृक्षा: स्वयं फलं न खादन्ति, ते परेषां कृते एव फलानि छाया: च ददति। नद्य: परोपकाराय एव वहन्ति, गाव: अन्येभ्य: एव दुग्धं यच्छन्ति। एवमेव अनेके प्रात:स्मरणीया: महापुरुषा: अपि अभवन् ये स्वप्राणान् उत्सृज्य देशस्य समाजस्य च रक्षाम् अकुर्वन्। राजा शिवि: शरणागतस्य कपोतस्य रक्षायै स्वशरीरस्य मांसं कर्तयित्वा श्येनाय दत्तवान्। ऋषि: दधीचि: अपि वृत्रासुरवधाय स्वास्थीनि सहर्षम् अयच्छत्। अद्यापि लोके अनेके समाजसुधारका: सन्ति ये स्वार्थं परित्यज्य लोककल्याणं कुर्वन्ति। अत: सत्यमेव कथितम्—

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

छात्रजीवनम्

य: विद्यार्जनं कर्तुम् इच्छति विद्यार्जने च संलग्न: भवति स: विद्यार्थी उच्यते। विद्याध्ययनाय छात्र: विद्यालयं गच्छति। स: सर्वविधं सुखं परित्यज्य अहर्निशं विद्याध्ययनं करोति। विद्यार्थी अल्पाहारी गृहत्यागी काकचेष्टावान् बकध्यानयुक्त: अल्पनिद्रालुश्च भवेत्। यथोक्तं केनापि कविना—

काकचेष्टा बकध्यानं शुनो निद्रा तथैव च।
अल्पाहार: गृहत्याग: विद्यार्थिपञ्चलक्षणम्।।

प्रमादं विहाय अध्ययनेन परिप्रश्नेन च विद्यार्थी विद्यार्थी भवितुं शक्नोति। तेन तपोमयजीवनम् अनुकरणीयम् इति।

5. निबन्धावली

पर्यावरणम्

अद्यत्वे हि विज्ञानमयं युगं वर्तते। जनैः सौविध्यार्थं नानोपकरणानि प्रयुज्यन्ते। तेषामुत्पादनं कार्यशालासु यन्त्रैः क्रियते। यातायातव्यवस्थायाः कृते विविधानि यानानि प्रयुज्यन्ते। यद्यपि एतैरस्माकं जीवनं सुखमयं भवति, परम् एभिः प्रसारितः धूमः वायुमण्डलम् अत्यन्तं दूषयति। एवमेव वनानां विनाशेन ऋतुचक्रं प्रभावितं भवति। वायुमण्डलस्य दुष्प्रभावितत्वात् अस्माकं शरीरमपि श्वासादिरोगैः रुग्णं भवति।

महानगराणां मलिनजलं नानाप्रवाहिकामाध्यमेन नदीं प्रविशति। अस्मात् कारणात् नदीनां स्वच्छमपि जलं मलिनम् अपेयं च भवति। साम्प्रतं पाश्चात्यदेशेषु पर्यावरणं प्रति जागरुकता समुत्पन्ना। तत्प्रेरिता भारतीयैरपि पर्यावरणदूषणस्य सङ्कटम् अवगत्य साम्प्रतं गंगा-यमुनादि-नदीनां कृते शुद्धीकरणकार्यक्रमाः प्रचाल्यन्ते। अस्माभिरपि आवश्यकेऽस्मिन् पर्यावरणरक्षाकार्यक्रमे वृक्षा-रोपणमाध्यमेन, स्वच्छतादिनियमानां पालनेन च योगदानं विधेयम्।

दूरदर्शनम्

कालोऽयं विज्ञानमयः। विज्ञानस्य विभिन्नोपकरणैः मानवजीवनम् अतितरां सौविध्यमनुभवति। विज्ञानक्षेत्रे ये आविष्काराः संजाताः तेषु दूरदर्शनं सर्वान् अतिशेते।

अद्यत्वे एकत्र स्थितः मानवः एतदुपकरणमाध्यमेन दूरस्थिताः घटनाः वीक्षितुं शक्नोति। अमेरिकादेशेन ईराकदेशे यद् आक्रमणम् कृतम् तस्य साक्षात्प्रसारणं दूरदर्शनयन्त्रमाध्यमेन तद्वत् प्रत्यक्षीकृतं, यथा हि पुरा महाभारतस्य युद्धं सञ्जयेन धृतराष्ट्रं प्रति वर्णितमासीत्।

दूरदर्शनेन न केवलं मनोरञ्जनमेव भवति, अपितु दैनिकघटनानां ज्ञानम् अपि एतेन भवति। विभिन्नाभिः प्रणालिकाभिः (चैनलैः) प्रतिक्षणं नूतन-नूतनवार्ताणां प्रसारणं क्रियते। साम्प्रतं तु शिक्षाक्षेत्रेऽपि अस्य महान् उपयोगो विधीयते।

'ज्ञानदर्शन' इति कार्यक्रममाध्यमेन देशस्य सुदूरस्थक्षेत्रवास्तव्या: छात्रा: अपि विद्यार्जनं कर्तुं पारयन्ति। दूरदर्शनेन तु साम्प्रतं प्रतिदिनं संस्कृतवार्ता: अपि प्रसार्यन्ते, एतत्प्रसारणं निशम्य लोका: शुद्धं संस्कृतोच्चारणं कर्तुं पारयन्ति।

यद्यपि दूरदर्शनस्य नैके गुणा: सन्ति, परमत्र केचन अवगुणा: अपि सन्ति। अत्र प्रसार्यमाणानां कार्यक्रमाणाम् अधिकदर्शनेन नेत्रहानि: सम्भवति। बाल्यावस्थायामेव बालका: उपनेत्राणि संधारयितुं विवशीभवन्ति।

एकोऽपरोऽतिदोष: वर्तते यत् प्रायश: ये मनोरञ्जककार्यक्रमा: प्रसार्यन्ते, तेषु सदाचारशिक्षाया: अभावो वर्तते। नैके कार्यक्रमा: केवलम् अनैतिकताम् मूल्यहानिं च प्रदर्शयन्ति। अत: अस्माभि: दूरदर्शनेन केवलम् गुणार्जनमेव विधेयम्।

संस्कृतभाषाया: महत्त्वम्

भारतवर्षे आदिकालादेव मानवानां व्यवहारे संस्कृतभाषाया: प्रयोगो भवति स्म। संस्कृतं विश्वस्य प्राचीनतमा भाषास्ति। श्रद्धावशादियं जनै: देववाणी सुरभारतीत्यपि कथ्यते। इयं भाषा भारतीयाया: सभ्यताया: संस्कृते: चिन्तनस्य च संवाहिकास्ति। संस्कृतं धर्मस्य, दर्शनस्य, राजनीते:, इतिहासस्य, अर्थशास्त्रस्य नीतिशास्त्रस्य च मूलमस्ति।

अस्यां भाषायां भारतीयचिन्तनस्य सर्वे प्रमुखा: ग्रन्था: उपनिबद्धा: सन्ति। विश्वसाहित्यस्य प्राचीनतमानां ग्रन्थानां वेदानामपि भाषा संस्कृतमेवास्ति। सम्पूर्णं वैदिकं वाङ्मयं ज्ञानविज्ञानदृष्ट्या समस्ते जगति निरुपमं विद्यते। अस्यां भाषायां दर्शनग्रन्था: साहित्यग्रन्थास्तु उपनिबद्धा: सन्त्येव सहैव भौतिकविज्ञानस्य रसायनविज्ञानस्य, चिकित्साविज्ञानस्य, वनस्पतिविज्ञानस्य, भाषाविज्ञानस्य, वास्तुविज्ञानस्यापि अनेके मौलिका: ग्रन्था: विद्यन्ते।

संस्कृतभाषायाम् उपनिबद्धे साहित्ये सत्यस्य, अहिंसाया: राष्ट्रभक्ते:, परस्परं सहयोगस्य, त्यागस्य, विश्वबन्धुत्वस्य, शान्तेश्च भावनानाम् अजस्रं स्रोत: प्रवहत् विद्यते। लोककल्याणाय अस्यां भाषायां बहव: आदर्शा: प्रस्तुता: सन्ति, यथा— 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिन:', 'तेन त्यक्तेन

भुञ्जीथा: मा गृध: कस्यस्विद्धनम्' इत्यादय:। एतेषामादर्शानामनुकरणं कृत्वा य: कोऽपि मानव: स्वजीवनम् उन्नतं कर्तुं शक्नोति।

विषयदृष्ट्या भाषासौष्ठवदृष्ट्या च इयं भाषा अन्यासु सर्वासु विश्वभाषासु अतिशेते। आधुनिका: प्रायश: सर्वा: भारतीया: भाषा: संस्कृतभाषाया: एव निर्गता: सन्ति।

संस्कृतसाहित्यमाश्रित्यैव आधुनिकं साहित्यमपि विकसितम्। अत एव इयं भाषा भारतीयभाषाणां जननी सम्पोषिका च कथ्यते। विश्वबन्धुत्वभावनां पोषयितुम्, भारतीयां संस्कृतिमवगन्तुम्, राष्ट्रियताया: भावनां वर्धयितुम् भारतीयभाषाणां विकासाय च संस्कृतभाषाया: परमोपयोगिता विद्यते।

भारतीया संस्कृति:

संस्कृति: नाम संस्कारेण संस्करणं परिष्करणम् इति। यया संस्कृत्या सभ्यतया च भारतीया: जना: संस्कारं परिष्कारं च लभन्ते सा एव भारतीया संस्कृति:। इयम् 'आर्यसंस्कृति:' अपि उच्यते। एषा संस्कृति: जनानां हृदयेभ्य: दुर्गुणान्, दुर्व्यसनानि, पापानि च निस्सार्य दूरीकरोति। सदाचार-शिक्षणेन च सा मानवमनांसि निर्मलानि सात्त्विकानि च करोति। 'समन्वय-भावना' अस्माकं भारतीयानां संस्कृते: प्रमुखा विशेषता अस्ति। संस्कृतिरियं विश्वस्य सर्वेभ्य: मानवेभ्य: सौख्यम् उपदिशति।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दु:खभाग्भवेत्।।

अस्माकं भारते पूर्वम् आर्यजना: पापेभ्य: बिभ्यति स्म, सत्यं वदन्ति स्म, अहिंसाम् आचरन्ति स्म। ते दया-परोपकार-धैर्य-त्यागशीलता-सहानुभूत्यादि-नियमान् पालयन्ति स्म। अत एव ते विश्ववन्द्या: आसन्। भारतीया: जना: शास्त्रोक्तानां धर्मनियमानां पालने मनसा वाचा कर्मणा संनद्धा: भवन्ति स्म। सत्यमिदं यत् संसारे य: कोऽपि स्वसंस्कृतिं त्यजति स: कदापि सुखी समृद्धश्च न भवति। अत: यदि वयं सुखं सम्मानं, समृद्धिं च इच्छाम: तर्हि स्वभारतीयसंस्कृते: सद्गुणा: अस्माभि: ग्रहणीया: पालनीया: एव।

कवि: कालिदास:

संस्कृतसाहित्यम् अतिविस्तृतं वर्तते। अत्र नैके कवय: अनेकान् ग्रन्थान् विरचितवन्त: परं न हि तैर्लिखितं सर्वं साहित्यम् इदानीं प्राप्यते। केवलं अङ्गुलिगण्या एव कवय: एतादृशा: सन्ति, येषां नाम अद्यापि आदरपूर्वकं गृह्यते, मुहुर्मुहुश्च तेषां साहित्यं पठ्यते। एतादृश एव कवि: कालिदासोऽस्ति, यो हि आलोचकै: कविकुलगुरु: इत्युपाधिना समलङ्क्रियते।

कालिदास: भारतवर्षस्य कस्मिन् प्रदेशे कस्मिंश्च काले जन्म लेभे इत्यादिप्रश्ना: अद्यावधि: असमाहिता: एव। विद्वांस: ख्रैस्तीयप्रथमशताब्दीत: आरभ्य षष्ठशतकं यावत् कुत्रापि कालिदासस्य स्थितिं स्थापयन्ति। एवमेव तस्य जन्मस्थान-विषयेऽपि विवदन्ते। कालिदासस्य लोकप्रियतां वीक्ष्य कश्मीरवासिनस्तं कश्मीरप्रदेशे समुत्पन्नम्, बंगालवासिनश्च तं बंगप्रान्ते समुद्भूतम्, उज्जयिनीवासिनश्च कालिदासम् उज्जयिन्यां लब्धजन्मानं कथयन्ति।

महाकविना कालिदासेन सप्तग्रन्था: विरचिता:, एतेषु रघुवंश कुमारसम्भव-नामके द्वे महाकाव्ये, ऋतुसंहार-मेघदूतनामके द्वे खण्डकाव्ये, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रञ्चेति त्रीणि नाटकानि सन्ति।

एतेषु सर्वेषु अभिज्ञानशाकुन्तलं नाम नाटकं तस्य सर्वस्वम् अभिधीयते। एतन्नाटकम् अधीत्यैव पाश्चात्त्या: संस्कृताध्ययनं प्रति समुत्सुका अभूवन्। कालिदासस्य साहित्ये सर्वत्र प्रकृतेश्चित्रणं वर्तते। मानव: यदा-यदा स्वकर्तव्यस्य अवहेलनां विदधाति तदा स शापं दण्डं च प्राप्नोति। प्रकृतिशरणं गत्वैव तस्य निष्कृतिर्भवति। शाकुन्तले दुर्वासस: शापमाध्यमेन, मेघदूते च यक्षकथामाध्यमेन कविरिदमेव मुहुर्मुहुरुपदिशति। कालिदासस्य रस भावसमन्विता वाणी कस्य मनो न हरति? कालिदासस्य अद्वितीयत्वमेव केनापि कविनोक्तम्—

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदास:।

अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावाद्
अनामिका सार्थवती बभूव॥

आदिकवि: वाल्मीकि:

महर्षि: वाल्मीकि: संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविरस्ति। अयं मर्यादापुरुषोत्तमस्य रामस्य चरितवर्णनाय 'रामायणम्' नाम आर्षकाव्यम् अरचयत्। रामायणस्य फलश्रुत्यध्याये रामायणस्य कर्तृत्वेन वाल्मीके: उल्लेख: प्राप्यते। क्रौञ्चद्वन्द्वस्य एकं व्याधेन व्यापादितं दृष्ट्वा अस्य कवे: मनसि समुत्थित: शोक: एव श्लोकरूपेण आविर्भूत:। उक्तञ्च—

क्रौञ्चद्वन्द्ववियोगोत्थ: शोक: श्लोकत्वमागत:।

आदिकविरयम् ऋषे: प्रचेतस: दशम: पुत्र आसीत्। अयं जात्या ब्राह्मण: राज्ञो दशरथस्य च मित्रमासीत्। मुनेर्वाल्मीके: आश्रमे दशसहस्रसंख्याका: छात्रा: उषित्वा शिक्षामगृह्णन्। अस्याश्रम: गङ्गाया: तमसानद्याश्च तीरे आसीत्। वाल्मीके: आश्रमविषये इदमपि मतं प्राप्यते यत् अस्याश्रम: यमुनायास्तटे चित्रकूटस्य समीपे आसीत्। तत्रैव उषित्वा वाल्मीकि: रामायणस्य रचनामकरोत्।

वाल्मीकिना विरचितं 'रामायणम्' लोकेऽस्मिन् सर्वतो मधुरम्, लोकप्रियम्, सर्वतश्चाधिकं हृदयस्पर्शि ऐतिहासिकं काव्यमस्ति। अस्मिन् रामस्य, कथां वर्णयित्वा कविना लोकसमक्षम् एक: आदर्श: प्रस्तुतीकृत: यत् 'रामादिवद् प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्'।

रावण: सीताया: अपहरणम् अकरोत् अत: तस्य समूलं नाशोऽभवत्। राम: रामायणस्य सर्वगुणसम्पन्न: आदर्शनायकोऽस्ति। रामस्य चरितानि पठित्वा जना: स्वकर्तव्यस्य, लोकव्यवहारस्य शौर्यस्य च शिक्षां गृह्णन्ति।

इयं रामायणी कथा इयती रुचिपूर्णा अस्ति यत् जावा-सुमात्रा-बोर्नियो-बाली-चम्पा-थाईलैंडप्रभृतिदेशेषु सर्वत्र प्रचारमलभत।

परवर्तिभिरनेकै: महाकविभि: अस्य कथामवलम्ब्य अनेकानि काव्यानि नाटकानि च विरचितानि। अत एव इदं महाकाव्यं चिरस्थायिनीं कीर्तिमलभत। अत एवोच्यते—

यावत् स्थास्यन्ति गिरय: सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणी कथा लोकेषु प्रचलिष्यति।।

भगवद्गीता

अयं ग्रन्थ: महर्षिणा वेदव्यासेन रचितस्य महाग्रन्थस्य महाभारतस्य अङ्गभूत: अस्ति। महाभारतयुद्धकाले यदा अर्जुन: मोहग्रस्त: युद्धविरत: च अभवत् तदा श्रीकृष्णेन यत्किञ्चिदुपदिष्टं तत् गीता-ग्रन्थरूपेण प्रसिद्धम्। अस्मिन् कर्म-ज्ञान-सांख्य-योगानां विषये उपदेश: विद्यते। कर्मयोग: गीताया: प्रमुख: उपदेश: अस्ति। अत एव अस्य ग्रन्थस्य अपरं नाम 'कर्मयोगशास्त्रम्' अपि अस्ति। अस्य मननं कृत्वा मनुष्य: कर्मयोगी भवति। स: मनसा इन्द्रियै: शरीरेण च क्रियमाणेषु कर्मसु कर्तृत्वाभिमानं त्यजति। अयं ग्रन्थ: संन्यासं नोपदिशति अपितु योग: कर्मसु कौशलम्" इत्युपदिशति। गीतायां निष्कामकर्मण: विशिष्टं महत्त्वम् अस्ति —

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"।

अस्मिन् ग्रन्थे भगवता श्रीकृष्णेन उपदिष्टम् यत्— आत्मा नित्य: शरीराणि च अनित्यानि। अत: मरणात् न भेतव्यम्। नर: वीरो भूत्वा अन्यायस्य प्रतीकारं कुर्यात्। एवं प्रकारेण गीता सर्वान् मनुष्यान् सर्वेषु लौकिककर्मसु कौशलम् शिक्षयति। अर्जुन: उपदेशेन नष्टमोहो भूत्वा कृष्णस्य धर्मयुद्धे प्रवृत्त: अभवत्। गीताया: उपदेशसारं प्राप्य मनुष्य: आसुरीं सम्पदं परित्यज्य दैवीं सम्पदम् अर्जितुम् प्रवृत्तो भवति। अत: सर्वै: लोकै: गीतोपदेशम् अनुकृत्य जीवनम् सफलं कर्त्तव्यम्। गीताविषये केनापि कविना सत्यमुक्तम्—

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:।

हिमालय:

भारतभूखण्डोपरि प्रकृते: महती अनुकम्पा वर्तते। नाना पर्वतमाला: विभिन्ना: सरित: नैकानि वनानि, द्वे सागरे, मरुस्थली च अत्र राजन्ते। एकस्मिन्नेव समये नैके ऋतव: अपि द्रष्टुं शक्यन्ते। यद्येकत्र ग्रीष्मातपप्रचण्डता दृश्यते, तदा अन्यत्र

© NCERT not to be republished

हिमाच्छादितत्वात् शैत्यप्रकोपोऽप्यनुभूयते। अस्मिन् भारतवर्षे ये प्राकृतिक-सीमान: सन्ति तेषु उत्तरस्यां दिशि हिमालयस्य प्रामुख्यं वर्तते।

भारतवर्षस्य उत्तरे दिग्विभागे अवस्थितेयं विशाला पर्वतमाला। कश्मीरादाभ्य अरुणाचलप्रदेशं यावद् अतिविस्तृतेयं पर्वतशृङ्खला अनादिकालात् भारतं रक्षितवती। न कोऽपि शत्रु: इमाम् उल्लङ्घ्य भारतं प्राविशत्, केवलं विगते शताब्दे चीनदेश एव एतादृशं दु:साहसं कर्तुम् अपारयत्।

हिमालय एव उत्तरभारतस्य पिपासां शमयति विशालं कृषिक्षेत्रं च सिञ्चति। अस्य हिमाच्छादितत्वाद् गङ्गा-यमुना-शतद्रु-व्यास-वितस्तादय: सरित: सततं निस्सरन्ति। अस्माकं देश: 'हिन्दुस्तान' इति नाम्नापि व्यवह्रियते, अत्र यत् हिन्दू इति पदं वर्तते तत् सिन्धु इति शब्दान्निष्पन्नम्। सिन्धुनदी अपि हिमालयादेव प्रभवति।

चिरात् नाना कवय: स्वीयरचनासु हिमालयं वर्णितवन्त:। कालिदासेन तु स्वीये कुमारसम्भवे अयं हिमालय: देवभूमिरूपेण इत्थं वर्णित:—

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थित: पृथिव्यामिव मानदण्ड:।।

हिमालयप्रदेशे एव अस्माकं पुरातनतीर्थादीनि सन्ति। अत्रैव शङ्कराचार्येण स्थापितम् 'केदारनाथ इति तीर्थस्थानं वर्तते'। यमुनोत्री-गंगोत्री-बदरीनाथ-प्रभृतीनि पवित्राणि स्थानान्यपि अत्रैव वर्तन्ते।

नैकखनिजानाम् इयम् जन्मभूमि:। अत्रैवासीत् कण्वस्य तपोवनम्। आयुर्वेदस्य उपयोगाय औषधजातानि वनस्पतयश्च अस्मादेव प्राप्यन्ते। योगिन: अपि तप: साधनां कर्तुम् अत्रैव गच्छन्ति।

भारते भावनात्मकम् ऐक्यं स्थापयितुं हिमालयस्य महत्त्वपूर्णं योगदानं वर्तते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

संसारेऽस्मिन् जननी अस्मभ्यं यानि यानि सुखानि प्रयच्छति, जन्मभूमिश्च तथैव सौविध्यानि ददाति।

जन्मदात्री माता जन्मभूमिश्च स्वर्गाद् अपि श्रेष्ठा वरिष्ठा च वर्तते। माता

कुमाता कदापि न भवति। सा जन्मन प्रभृति अतीव निश्छलप्रेम्णा पुत्रं पुत्रीं च लालयति, पालयति, स्वदुग्धं पाययित्वा शिशुं वर्धयति स्वयं च महत्कष्टानि अनुभूय तं सुखयति, महद्भयाच्च रक्षति।

शीततौं रात्रिकालेषु बालस्य मूत्रेण आर्द्रीभूताऽपि विष्टरे स्वयं स्वपिति, परन्तु बालं च शुष्कस्थाने शय्यायां स्वापयति। किमधिकं माता स्वसन्ततिसुखाय रक्षणाय च स्वदुर्लभप्राणानपि दातुम् उद्यता भवति। अत: सत्यमिदं कथितं यत् जननी स्वर्गादपि अधिकं सुखं प्रयच्छति।

भासस्य कथनानुसारेण माता किल मनुष्याणां देवतानाम् च दैवतम्।

वस्तुत: जन्मभूमि: जननीवत् अस्मान् सर्वान् नानाविधानि अन्नानि, फलानि च दत्त्वा यावज्जीवनं पालयति पोषयति संवर्धयति च। भूमि: अस्मभ्यं धनं, धातून्, रत्नानि च प्रयच्छति। जन्मदात्री कतिचिद्वर्षानन्तरं स्वकर्त्तव्यं पूरयित्त्वा निवृत्ता भवति; किन्तु जन्मभूमि: अस्माकं जीवनस्य अन्तिमं क्षणं यावत् स्वान्नजलफलादिभि: अस्मान् पोषयति। वयं च अन्तिमं श्वासम् अत्रैव नयाम:। पशुपक्षिषु अपि स्वमातृभूमिं प्रति स्नेहभाव: दृश्यते। मानव: तु विशेषरूपेण विवेकशील: मनस्वी च वर्तते। अत: मातृभूम्यै तस्य स्नेह: स्वाभाविक:। सुष्ठूक्तम् अथर्ववेदेऽपि "माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:"। खगा: अपि स्वदेशभूमिं बहु स्निह्यन्ति—

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजमण्डितम्।
रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना।।

चन्द्रशेखर-भगतसिंह राजगुर्वादय: देशभक्ता: जन्मभूमिस्वतन्त्रतायै स्वकीयान् प्राणान् दत्त्वा अमरा: जाता:। मातृभूमे: सीमां परिरक्ष्य सैनिका: जन्मभूम्या: ऋणात् मुक्ता: भवन्ति। स्वर्णमयीं लङ्कां विजित्य राम: लक्ष्मणम् अवदत्—

अपि स्वर्णमयी लङ्का, न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जनमभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

© NCERT not to be republished

प्रियं मे भारतम्

अस्माकं प्रियं भारतम् 'आर्यावर्त: "भारतवर्षम्" हिन्दुस्तान' 'इण्डिया' इति चतुर्भि: नामभि: प्रसिद्धम् परन्तु सम्प्रति जनै: अस्य नाम 'भारतम्' इत्येव स्वीकृतम्।

भारतं कश्मीरात् कन्याकुमारीपर्यन्तं सुविस्तृतं राजते। अस्य मुकुट इव नगाधिराज: हिमालय: उत्तरस्यां दिशि शोभते। दक्षिणे चास्य हिन्दमहासागर: विद्यते।

अद्यत्वे भारते अष्टाविंशति: राज्यानि सन्ति, तानि सर्वाण्यपि प्रादेशिक-विधानसभाभि: सञ्चाल्यन्ते। दिल्लीनगरं भारतस्य राजधानी केन्द्रं चास्ति। केन्द्रीयं शासनं सांसदै: संचाल्यते। सांसदबहुसंख्याकदलेन मन्त्रिमण्डलं निर्मीयते। सर्वोपरि राष्ट्रपति: देशस्य शासनं करोति। किं बहुना भारतं सर्वोच्चसत्तासम्पन्नं प्रजातन्त्रात्मकं गणराज्यमस्ति।

भारते विविधा: जातय: सम्प्रदाया:, धर्मा: भाषाश्च। परं सर्वे भारतीया: परस्परं प्रेम्णा व्यवहरन्ति। अत्रत्या: गङ्गादिनद्य: सकलं जगत् पुनन्ति। अत्रैव अवतीर्णा: श्रीराम:, श्रीकृष्ण:, महात्माबुद्ध:, महावीर:, शङ्करादिमहामानवा:। अत्रैव रघु:, चन्द्रगुप्त:, अशोक:, विक्रमादित्य:, प्रभृतय: महान्त: शासका: अभवन्। आधुनिककाले गान्धि:, जवाहरलाल:, सुभाष:, चन्द्रशेखर:, मालवीयादय: महापुरुषा: अजायन्त। स्वकार्यैश्च भारतस्य महत्त्वं वर्धितवन्त:। राष्ट्रभक्ति: अस्माकं प्रथमं कर्त्तव्यम् अस्ति। अस्माभि: सर्वैरपि भारतस्य सेवा मनसा, वाचा कर्मणा च करणीया। सम्प्रदाय-जाति-भाषा-प्रदेशादिभेदकतत्त्वानि विस्मृत्य ऐक्यं विधाय भारतस्य रक्षा, उन्नति: च कर्त्तव्या। भारतस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादयन् केनापि सत्यमेवोक्तम्—

गायन्ति देवा: किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूय: पुरुषा: सुरत्वात्।।

© NCERT not to be republished

मैट्रो-रेलसेवा

अतिविस्तृतानि महानगराणि असंख्यनिवासिभिः सङ्कुलानि भवन्ति। महानगरेषु जनाः स्वकार्यं कर्तुं दूरं गन्तुं विवशा भवन्ति। यद्यपि महानगरेषु नैके राजमार्गा भवन्ति, परं यथा-यथा जनसंख्या वर्धते, वाहनानामपि संख्या प्रवर्धते, तथा तथा गमनागमने कष्टं भवति, वाहनानां च आधिक्येन पर्यावरणमपि दूषितं भवति।

अतः एतत्समाधानाय यूरोप-देशेषु मैट्रोनामधारिणी उपनगरगामिनी तीव्रगतिका रेलसेवा प्रवर्तिता। मूलतः सा रेलसेवा 'मैट्रो' नाम्ना अभिधीयते। भूमौ खननं विधाय विशालभवनानाम् अधः सुरंगेषु रेलपट्टिकाः स्थाप्यन्ते, तदुपरि द्रुतगत्या रेलकक्षाः धावन्ति।

दिल्लीनगर्यां प्रचलितायाः मैट्रोरेलसेवायाः द्वे स्वरूपे स्तः। मैट्रो-मार्गस्य प्रथमं स्वरूपं तु भूमेरुपरि, अपरञ्च भूम्यन्तः। इदानीं तु दिल्लीनगरं प्रतिवेशिनगरेषु यथा नोएडानगरं प्रति, गुरुग्रामं प्रति, गाज़ियाबादनगरं प्रति, फरीदाबादनगरं प्रति अपि मैट्रोरेलयानेन जनाः सुगमतया गमनागमनं कुर्वन्ति। वायुयानस्थानकं प्रति गम्यमानायाः तीव्रगामीमैट्रोसेवायाः प्रयोगं दैशिकाः, वैदेशिकाः च सानन्दं कुर्वन्ति।

साम्प्रतं सहस्रशो जनाः अल्पेनैव कालेन एकस्मात् स्थानाद् अपरत्र यान्ति। द्रुतगत्या प्रधावतः वातानुकूलितकक्षान् वीक्ष्य को जनः मैट्रोद्वारा यात्रां कर्तुं नेच्छति।

स्वतन्त्रता-दिवसः

अस्माकं भारतदेशः सप्तचत्वारिंशदुत्तर—नवशतैकसहस्रतमे (1947) वर्षे अगस्तमासस्य पञ्चदशदिनाङ्के स्वतन्त्रः अभवत्। दिनेऽस्मिन् प्रतिवर्षं सम्पूर्णे भारतवर्षे स्वतन्त्रतादिवसोत्सवः मन्यते। अयं दिवसः भारतीयेतिहासे स्वर्णाक्षरैः लिखितमस्ति यतः अस्मिन् एव दिवसे भारतवर्षः मुक्तो भूत्वा स्वातन्त्र्यम् अलभत। भारतस्य राजधान्यां दिल्लीनगरे स्वतन्त्रतादिवसोत्सवः विशेषरूपेण दर्शनीयः भवति। प्रातःकाले सप्तवादनसमये अपारजनसमूहः रक्तदुर्गस्य

मुख्यद्वारे एकत्रितो भवति। महान्तो नेतार: वैदेशिका: अतिथयश्च मञ्चे उपविशन्ति। भारतस्य प्रधानमन्त्री त्रिवर्णात्मिकां राष्ट्रपताकाम् आरोहयति, तत: 'जन-गण-मन' इति राष्ट्रगीतं गीयते, पश्चाच्च प्रधानमन्त्री देशवासिन: सन्दिशति। दूरदर्शनेन एतेषां कार्यक्रमाणाम् प्रसारणं भवति येन दूरस्था: अपि जना: सोल्लासम् कार्यक्रमान् पश्यन्ति।

दिवसेऽस्मिन् न केवलं राजधान्यामेव अपितु सर्वेषु प्रदेशेष्वपि विविधानि कार्यक्रमा: आयोज्यन्ते, यथा कविभि: देशभक्तिपरा: कविता: पठ्यन्ते, वीररसमयानि गीतानि गीयन्ते, स्वतन्त्रता-संग्रामसेनानिन: स्मर्यन्ते, क्रीडा-भाषण-प्रतियोगिता: समायोज्यन्ते, अन्ते च मिष्टान्नानि वितीर्यन्ते। राष्ट्रपर्व इदं सर्वेषु भारतीयेषु नवोत्साहं, नवां कल्पनाञ्च जनयति। अत एव अवसरेऽस्मिन् अस्माभि: सर्वैरपि प्रतिज्ञा कर्त्तव्या यद् शरीरेण, मनसा, धनेन, प्राणार्पणेनापि भारतमातु: सेवां सदा करिष्याम:।

© NCERT not to be republished

परिशिष्ट

I. शब्दरूपाणि

i) स्वरान्त शब्दरूप

बालक (अकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालक:	बालकौ	बालका:
	स् (:)	औ	अ:
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
	अम्	औ	अ: (आन्)
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकै:
	आ (एन)	भ्याम्	भि: (ऐ:)
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य
	ए (आय)	भ्याम्	भ्य:
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
	अस् (आत्)	भ्याम्	भ्य:
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो:	बालकानाम्
	अस् (स्य)	ओ (यो:)	आम् (नाम्)
सप्तमी	बालके	बालकयो:	बालकेषु
	इ (ए)	ओ: (यो:)	सु (एषु)
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालका: !

(अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप बालक के समान पढ़े जाएँगे।)

© NCERT not to be republished

फल (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
सम्बोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि!

(शेष तृतीया से सप्तमी विभक्ति पर्यन्त बालक के रूप के समान पढ़े जाएँगे।)

लता (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लता:
द्वितीया	लताम्	लते	लता:
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभि:
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्य:
पञ्चमी	लताया:	लताभ्याम्	लताभ्य:
षष्ठी	लताया:	लतयो:	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयो:	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लता:!

(आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप लता के समान होते हैं)

मुनि (इकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनि:	मुनी	मुनय:
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभि:
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
पञ्चमी	मुने:	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
षष्ठी	मुने:	मुन्यो:	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्यो:	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मनुय: !

('भूपति' आदि सभी इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप मुनि के समान पढ़े जाएँगे।)

पति (इकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पति:	पती	पतय:
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या (पतिना)	पतिभ्याम्	पतिभि:
चतुर्थी	पतये (पत्यै)	पतिभ्याम्	पतिभ्य:
पञ्चमी	पत्यु:	पतिभ्याम्	पतिभ्य:
षष्ठी	पत्यु:	पत्यो:	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्यो:	पतिषु
सम्बोधन	हे पते !	हे पती!	हे पतय:!

नदी (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्य:
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदी:
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि:
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्य:
पञ्चमी	नद्या:	नदीभ्याम्	नदीभ्य:
षष्ठी	नद्या:	नद्यो:	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्यो:	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ!	हे नद्य:!

भानु (उकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भानु:	भानू	भानव:
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्

तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभि:
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
पञ्चमी	भानो:	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
षष्ठी	भानो:	भान्वो:	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वो:	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू !	हे भानव:!

धेनु (उकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	धेनु:	धेनू	धेनव:
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनू:
तृतीया	धेन्वा (धेनुना)	धेनुभ्याम्	धेनुभि:
चतुर्थी	धेनवे/धेन्वे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य:
पञ्चमी	धेनो:	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य:
षष्ठी	धेनो:	धेन्वो:	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ	धेन्वो:	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनव:!

मधु (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभि:
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्य:
पञ्चमी	मधुन:	मधुभ्याम्	मधुभ्य:
षष्ठी	मधुन:	मधुनो:	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनो:	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

© NCERT not to be republished

पितृ (पिता) (ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितर:
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि:
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
पञ्चमी	पितु:	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
षष्ठी	पितु:	पित्रो:	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रो:	पितृषु
सम्बोधन	हे पित: !	है पितरौ!	हे पितर:!

मातृ (माँ, माता) (ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातर:
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄ:
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभि:
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्य:
पञ्चमी	मातु:	मातृभ्याम्	मातृभ्य:
षष्ठी	मातु:	मात्रो:	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रो:	मातृषु
सम्बोधन	हे मात:!	हे मातरौ!	हे मातर:!

गो (गाय और बैल) (ओकारान्त पुँल्लिङ्ग/स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौ:	गावौ	गाव:
द्वितीया	गाम्	गावौ	गा:
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभि:

© NCERT not to be republished

चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्य:
पञ्चमी	गो:	गोभ्याम्	गोभ्य:
षष्ठी	गो:	गवो:	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवो:	गोषु
संबोधन	हे गौ:!	हे गावौ!	हे गाव:!

द्यु/द्यो (आकाश/स्वर्ग) (ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	द्यौ:	द्यावौ	द्याव:
द्वितीया	द्याम्	द्यावौ	द्या:
तृतीया	द्यवा	द्योभ्याम्	द्योभि:
चतुर्थी	द्यवे	द्योभ्याम्	द्योभ्य:
पञ्चमी	द्यो:	द्योभ्याम्	द्योभ्य:
षष्ठी	द्यो:	द्यवो:	द्यवाम्
सप्तमी	द्यवि	द्यवो:	द्योषु
सम्बोधन	हे द्यौ:!	हे द्यावौ!	हे द्याव:!

नौ (नाव) स्त्रीलिङ्ग (औकारान्त)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	नौ:	नावौ	नाव:
द्वितीया	नावम्	नावौ	नाव:
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभि:
चतुर्थी	नावे	नौभ्याम्	नौभ्य:
पञ्चमी	नाव:	नौभ्याम्	नौभ्य:
षष्ठी	नाव:	नावो:	नावाम्
सप्तमी	नावि	नावो:	नौषु
सम्बोधन	हे नौ:!	हे नावौ!	हे नाव:!

© NCERT not to be republished

अक्षि (इकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभि:
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्य:
पञ्चमी	अक्ष्ण:	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्य:
षष्ठी	अक्ष्ण:	अक्ष्णो:	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्षिणि	अक्ष्णो:	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि!	हे अक्षिणी!	हे अक्षीणि!

ii) व्यञ्जनान्त शब्दरूप

राजन् (राजा) (नकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजान:
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञ:
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:
पञ्चमी	राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:
षष्ठी	राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञो:	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजान:!

भवत् (आप) (तकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्त:
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवत:

© NCERT not to be republished

तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्!	हे भवन्तौ!	हे भवन्तः!

आत्मन् (आत्मा, अपने आप) (नकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मानः!

विद्वस् (विद्वान्) (सकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांसः!

© NCERT not to be republished

चन्द्रमस् (चन्द्रमा) (सकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमा:	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस:
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस:
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभि:
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्य:
पञ्चमी	चन्द्रमस:	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्य:
षष्ठी	चन्द्रमस:	चन्द्रमसो:	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसो:	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमा:!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमस:!

वाच् (वाणी) (चकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाच:
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाच:
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भि:
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्य:
पञ्चमी	वाच:	वाग्भ्याम्	वाग्भ्य:
षष्ठी	वाच:	वाचो:	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचो:	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, वाग्!	हे वाचौ!	हे वाच:!

गच्छत् (जाते हुए) (तकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्त:
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छत:
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भि:

© NCERT not to be republished

चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
पञ्चमी	गच्छत:	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
षष्ठी	गच्छत:	गच्छतो:	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतो:	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्त:!

पुम्स् (पुरुष) (सकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांस:
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंस:
तृतीया	पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भि:
चतुर्थी	पुंसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्य:
पञ्चमी	पुंस:	पुम्भ्याम्	पुम्भ्य:
षष्ठी	पुंस:	पुंसो:	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसो:	पुंसु
सम्बोधन	हे पुमान्!	हे पुमांसौ!	हे पुमांस:!

पथिन् (रास्ता) नकारान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पन्था:	पन्थानौ	पन्थान:
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथ:
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभि:
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्य:
पञ्चमी	पथ:	पथिभ्याम्	पथिभ्य:
षष्ठी	पथ:	पथो:	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथो:	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्था:!	हे पन्थानौ!	हे पन्थान:!

© NCERT not to be republished

गिर् (वाणी, सरस्वती) रकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गी:	गिरौ	गिर:
द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिर:
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भि:
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्य:
पञ्चमी	गिर:	गीर्भ्याम्	गीर्भ्य:
षष्ठी	गिर:	गिरो:	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरो:	गीर्षु
सम्बोधन	हे गी:!	हे गिरौ!	हे गिर:!

अहन् (दिन) नकारान्त नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अह:	अह्नी-अहनी	अहानि
द्वितीया	अह:	अह्नी-अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभि:
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्य:
पञ्चमी	अह्न:	अहोभ्याम्	अहोभ्य:
षष्ठी	अह्न:	अह्नो:	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि-अहनि	अह्नो:	अहस्सु-अह:सु
सम्बोधन	हे अह:!	हे अह्नी-अहनी!	हे अहानि!

पयस् (दूध और जल) सकारान्त नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पय:	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पय:	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभि:
चतुर्थी	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्य:

पञ्चमी	पयस:	पयोभ्याम्	पयोभ्य:
षष्ठी	पयस:	पयसो:	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	पयसो:	पयस्सु-पय:सु
सम्बोधन	हे पय:!	हे पयसी!	हे पयांसि!

iii) सर्वनाम

सर्व (सब) अकारान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्व:	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वै:
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयो:	सर्वेषु

सर्व (सब) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वा:
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वा:
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभि:
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
पञ्चमी	सर्वस्या:	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
षष्ठी	सर्वस्या:	सर्वयो:	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयो:	सर्वासु

सर्व (सब) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

© NCERT not to be republished

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान चलेंगे। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।)

यत् (जो) पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	य:	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यै:
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्य:
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्य:
षष्ठी	यस्य	ययो:	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययो:	येषु

यत् (जो) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	या:
द्वितीया	याम्	ये	या:
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभि:
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्य:
पञ्चमी	यस्या:	याभ्याम्	याभ्य:
षष्ठी	यस्या:	ययो:	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययो:	यासु

यत् (जो) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।)

एतत् (यह) पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एष:	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतै:
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्य:
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्य:
षष्ठी	एतस्य	एतयो:	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयो:	एतेषु

एतत् (यह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।)

एतत् (यह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एता:
द्वितीया	एताम्	एते	एता:
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभि:
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्य:
पञ्चमी	एतस्या:	एताभ्याम्	एताभ्य:
षष्ठी	एतस्या:	एतयो:	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयो:	एतासु

तत् (वह) पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स:	तौ	ते

© NCERT not to be republished

द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तै:
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्य:
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य	तयो:	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयो:	तेषु

(तत्, यत्, एतत्, इदम्, अदस्, किम्, युष्मद्, अस्मद् आदि सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता)

तत् (वह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सा	ते	ता:
द्वितीया	ताम्	ते	ता:
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभि:
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्य:
पञ्चमी	तस्या:	ताभ्याम्	ताभ्य:
सप्तमी	तस्याम्	तयो:	तासु

तत् (वह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।)

किम् (कौन) पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	क:	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कै:

© NCERT not to be republished

चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्य:
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्य:
षष्ठी	कस्य	कयो:	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयो:	केषु

किम् (क्या-कौन) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	का	के	का:
द्वितीया	काम्	के	का:
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभि:
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्य:
पञ्चमी	कस्या:	काभ्याम्	काभ्य:
षष्ठी	कस्या:	कयो:	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयो:	कासु

किम् (क्या) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होंगे)

इदम् (यह) पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:

© NCERT not to be republished

षष्ठी	अस्य	अनयो:, एनयो:	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयो:, एनयो:	एषु

इदम् (यह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	इयम्	इमे	इमा:
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमा:, एना:
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभि:
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्य:
पञ्चमी	अस्या:	आभ्याम्	आभ्य:
षष्ठी	अस्या:	अनयो:, एनयो:	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयो:, एनयो:	आसु

इदम् (यह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

(इसके शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।)

अस्मद् (मैं)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, न:
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभि:
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, न:
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयो:, नौ	अस्माकम्, न:
सप्तमी	मयि	आवयो:	अस्मासु

© NCERT not to be republished

युष्मद् (तुम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, व:
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभि:
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, व:
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयो:, वाम्	युष्माकम्, व:
सप्तमी	त्वयि	युवयो:	युष्मासु

अदस् (यह) पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभि:
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्य:
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्य:
षष्ठी	अमुष्य	अमुयो:	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयो:	अमीषु

ईदृश् (इस प्रकार) पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ईदृक्, ईदृग्	ईदृशौ	ईदृश:
द्वितीया	ईदृशम्	ईदृशौ	ईदृश:
तृतीया	ईदृशा	ईदृग्भ्याम्	ईदृग्भि:
चतुर्थी	ईदृशे	ईदृग्भ्याम्	ईदृग्भ्य:
पञ्चमी	ईदृश:	ईदृग्भ्याम्	ईदृग्भ्य:

© NCERT not to be republished

षष्ठी	ईदृशः	ईदृशोः	ईदृशाम्
सप्तमी	ईदृशि	ईदृशोः	ईदृक्षु

कतिपय* (कुछ) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**बहुवचन**
प्रथमा	कतिपयः
द्वितीया	कतिपयान्
तृतीया	कतिपयैः
चतुर्थी	कतिपयेभ्यः
पञ्चमी	कतिपयेभ्यः
षष्ठी	कतिपयेषाम्
सप्तमी	कतिपयेषु

कतिपय (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**बहुवचन**
प्रथमा	कतिपयाः
द्वितीया	कतिपयाः
तृतीया	कतिपयाभिः
चतुर्थी	कतिपयाभ्यः
पञ्चमी	कतिपयाभ्यः
षष्ठी	कतिपयासाम्
सप्तमी	कतिपयासु

कतिपय (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**बहुवचन**
प्रथमा	कतिपयानि
द्वितीया	कतिपयानि

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान)

* कतिपय शब्दों के रूप केवल बहुवचन में ही होते हैं।

© NCERT not to be republished

उभ*, दोनों (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**द्विवचन**
प्रथमा	उभौ
द्वितीया	उभौ
तृतीया	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयो:
सप्तमी	उभयो:

उभ (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**द्विवचन**
प्रथमा	उभे
द्वितीया	उभे
तृतीया	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयो:
सप्तमी	उभयो:

उभ (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**द्विवचन**
प्रथमा	उभे
द्वितीया	उभे

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान)

iv) संख्यावाची शब्द

	पुँल्लिङ्ग	**स्त्रीलिङ्ग**	**नपुंसकलिङ्ग**
1.	एक:	एका	एकम्

* उभ शब्दों के रूप केवल द्विवचन में ही होते हैं।

© NCERT not to be republished

2. द्वौ	द्वे	द्वे
3. त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
4. चत्वार:	चतस्र:	चत्वारि

नीचे के संख्या-शब्द तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

5. पञ्च
6. षट्
7. सप्त
8. अष्टौ (अष्ट)
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. नवदश, एकोनविंशति:
20. विंशति:
21. एकविंशति:
22. द्वाविंशति:
23. त्रयोविंशति:
24. चतुर्विंशति:
25. पंचविंशति:
26. षड्विंशति:
27. सप्तविंशति:
28. अष्टाविंशति:
29. नवविंशति:
30. त्रिंशत्
31. एकत्रिंशत्
32. द्वात्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्
34. चतुस्त्रिंशत्
35. पञ्चत्रिंशत्
36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्
38. अष्टत्रिंशत्
39. एकोनचत्वारिंशत्/नवत्रिंशत्
40. चत्वारिंशत्
41. एकचत्वारिंशत्
42. द्विचत्वारिंशत्/द्वाचत्वारिंशत्
43. त्रयश्चत्वारिंशत्/त्रिचत्वारिंशत्
44. चतुश्चत्वारिंशत्
45. पञ्चचत्वारिंशत्
46. षट्चत्वारिंशत्
47. सप्तचत्वारिंशत्
48. अष्टचत्वारिंशत्

© NCERT not to be republished

49. एकोनपञ्चाशत्/नवचत्वारिंशत्
50. पञ्चाशत्
51. एकपञ्चाशत्
52. द्वि/द्वापञ्चाशत्
53. त्रि/त्रय: पञ्चाशत्
54. चतु: पञ्चाशत्
55. पञ्चपञ्चाशत्
56. षट्पञ्चाशत्
57. सप्तपञ्चाशत्
58. अष्टपञ्चाशत्
59. चतु: सप्तति
60. षष्टि:
61. एकषष्टि:
62. द्विषष्टि:/द्वाषष्टि:
63. त्रि/त्रय:षष्टि:
64. चतु: षष्टि:
65. पञ्चषष्टि:
66. षट्षष्टि:
67. सप्तषष्टि:
68. अष्टषष्टि:/अष्टाषष्टि:
69. नवषष्टि:/एकोनसप्तति:
70. सप्तति:
71. एकसप्तति:
72. द्वि/द्वासप्तति:
73. त्रि/त्रय:सप्तति:
74. चतु: सप्तति
75. पञ्चसप्तति:
76. षट्सप्तति:
77. सप्तसप्तति:
78. अष्टसप्तति:/अष्टासप्तति:
79. नवसप्तति:/एकोनाशीति:
80. अशीति:
81. एकाशीति:
82. द्व्यशीति:
83. त्र्यशीति:
84. चतुरशीति:
85. पञ्चाशीति:
86. षडशीति:
87. सप्ताशीति:
88. अष्टाशीति:
89. नवाशीति:/एकोननवति:
90. नवति:
91. एकनवति:
92. द्विनवति:
93. त्रि/त्रयोनवति:
94. चतुर्णवति:
95. पञ्चनवति:
96. षण्णवति:
97. सप्तनवति:
98. अष्टनवति:/अष्टानवति:
99. नवनवति:/एकोनशतम्
100. शतम्

© NCERT not to be republished

क्रमसंख्यावाचक शब्द (एक से बीस तक)

पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथम:	प्रथमा	प्रथमम्
द्वितीय:	द्वितीया	द्वितीयम्
तृतीय:	तृतीया	तृतीयम्
चतुर्थ:	चतुर्थी	चतुर्थम्
पञ्चम:	पञ्चमी	पञ्चमम्
षष्ठ:	षष्ठी	षष्ठम्
सप्तम:	सप्तमी	सप्तमम्
अष्टम:	अष्टमी	अष्टमम्
नवम:	नवमी	नवमम्
दशम:	दशमी	दशमम्
एकादश:	एकादशी	एकादशम्
द्वादश:	द्वादशी	द्वादशम्
त्रयोदश:	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
चतुर्दश:	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
पञ्चदश:	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
षोडश:	षोडशी	षोडशम्
सप्तदश:	सप्तदशी	सप्तदशम्
अष्टादश:	अष्टादशी	अष्टादशम्
नवदश:	नवदशी	नवदशम्
विंश:	विंशी	विशम्

© NCERT not to be republished

संख्यावाचक शब्दों के रूप

एक (नित्य एकवचनान्त)

विभक्ति	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एक:	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	(शेष पुँल्लिङ्ग एक के समान)
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्या:	
षष्ठी	एकस्य	एकस्या:	
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	

द्वि (दो) (नित्य द्विवचनान्त)

विभक्ति	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:
सप्तमी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:

त्रि (तीन) (नित्य बहुवचनान्त)

विभक्ति	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्र:	त्रीणि
तृतीया	त्रिभि:	तिसृभि:	त्रिभि:
चतुर्थी	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	त्रिभ्य:
पञ्चमी	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	त्रिभ्य:

© NCERT not to be republished

षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् (चार) (नित्य बहुवचनान्त)

विभक्ति	**पुँल्लिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**	**नपुंसकलिङ्ग**
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

© NCERT not to be republished

II. धातुरूपाणि

पठ्, पढ़ना (भ्वादिगण)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठ:	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यत:	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथ:	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्याव:	पठिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयु:
मध्यम पुरुष	पठे:	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

© NCERT not to be republished

श्रु (सुनना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः, शृण्वः	शृणुमः, शृण्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृण्वम्	अशृण्व,अशृणुव	अशृण्म, अशृणुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोतु, शृणुतात्	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु, शृणुतात्	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृण्वानि	शृण्वाव	शृण्वाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

© NCERT not to be republished

भू (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवत:	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथ:	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवाव:	भवाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभव:	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु (भवतात्)	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव (भवतात्)	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

© NCERT not to be republished

पा (पीना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबत:	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथ:	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबाव:	पिबाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिब:	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयु:
मध्यम पुरुष	पिबे:	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

© NCERT not to be republished

गम् (जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु:
मध्यम पुरुष	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

© NCERT not to be republished

पच् (पकाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पचति	पचत:	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथ:	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचाव:	पचाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपच:	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथ:	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्याव:	पक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयु:
मध्यम पुरुष	पचे:	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

© NCERT not to be republished

लिख् (लिखना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखत:	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथ:	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखाव:	लिखाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिख:	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यत:	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथ:	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्याव:	लेखिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयु:
मध्यम पुरुष	लिखे:	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

© NCERT not to be republished

स्था (तिष्ठ), बैठना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठ:	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथ:	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्याव:	स्थास्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयु:
मध्यम पुरुष	तिष्ठे:	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

© NCERT not to be republished

दृश् (पश्य), देखना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्य:	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु:
मध्यम पुरुष	पश्ये:	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

© NCERT not to be republished

अस् (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्त:	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थ:	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्व:	स्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसी:	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्यु:
मध्यम पुरुष	स्या:	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

© NCERT not to be republished

सेव् (सेवन करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथा:	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत्	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथा:	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

© NCERT not to be republished

लभ् (प्राप्त करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभावहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

© NCERT not to be republished

दा (यच्छ्), देना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छति	यच्छत:	यच्छन्ति
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथ:	यच्छथ
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छाव:	यच्छाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयच्छत्	अयच्छताम्	अयच्छन्
मध्यम पुरुष	अयच्छ:	अयच्छतम्	अयच्छत
उत्तम पुरुष	अयच्छम्	अयच्छाव	अयच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यत:	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथ:	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्याव:	दास्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छतु	यच्छताम्	यच्छन्तु
मध्यम पुरुष	यच्छ	यच्छतम्	यच्छत
उत्तम पुरुष	यच्छानि	यच्छाव	यच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छेत्	यच्छेताम्	यच्छेयु:
मध्यम पुरुष	यच्छे:	यच्छेतम्	यच्छेत
उत्तम पुरुष	यच्छेयम्	यच्छेव	यच्छेम

© NCERT not to be republished

अर्च् (पूजा करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चति	अर्चत:	अर्चन्ति
मध्यम पुरुष	अर्चसि	अर्चथ:	अर्चथ
उत्तम पुरुष	अर्चामि	अर्चाव:	अर्चाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आर्चत्	आर्चताम्	आर्चन्
मध्यम पुरुष	आर्च:	आर्चतम्	आर्चत
उत्तम पुरुष	आर्चम्	आर्चाव	आर्चाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चिष्यति	अर्चिष्यत:	अर्चिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	अर्चिष्यसि	अर्चिष्यथ:	अर्चिष्यथ
उत्तम पुरुष	अर्चिष्यामि	अर्चिष्याव:	अर्चिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चतु	अर्चताम्	अर्चन्तु
मध्यम पुरुष	अर्च	अर्चतम्	अर्चत
उत्तम पुरुष	अर्चानि	अर्चाव	अर्चाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चेत्	अर्चेताम्	अर्चेयु:
मध्यम पुरुष	अर्चे:	अर्चेतम्	अर्चेत
उत्तम पुरुष	अर्चेयम्	अर्चेव	अर्चेम

© NCERT not to be republished

व्रज (जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजति	व्रजत:	व्रजन्ति
मध्यम पुरुष	व्रजसि	व्रजथ:	व्रजथ
उत्तम पुरुष	व्रजामि	व्रजाव:	व्रजाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अव्रजत्	अव्रजताम्	अव्रजन्
मध्यम पुरुष	अव्रज:	अव्रजतम्	अव्रजत
उत्तम पुरुष	अव्रजम्	अव्रजाव	अव्रजाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजिष्यति	व्रजिष्यत:	व्रजिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	व्रजिष्यसि	व्रजिष्यथ:	व्रजिष्यथ
उत्तम पुरुष	व्रजिष्यामि	व्रजिष्याव:	व्रजिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजतु	व्रजताम्	व्रजन्तु
मध्यम पुरुष	व्रज	व्रजतम्	व्रजत
उत्तम पुरुष	व्रजानि	व्रजाव	व्रजाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजेत	व्रजेताम्	व्रजेयु:
मध्यम पुरुष	व्रजे:	व्रजेतम्	व्रजेत
उत्तम पुरुष	व्रजेयम्	व्रजेव	व्रजेम

© NCERT not to be republished

तप् (तप करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तपति	तपतः	तपन्ति
मध्यम पुरुष	तपसि	तपथः	तपथ
उत्तम पुरुष	तपामि	तपावः	तपामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतपत्	अतपताम्	अतपन्
मध्यम पुरुष	अतपः	अतपतम्	अतपत
उत्तम पुरुष	अतपम्	अतपाव	अतपाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तप्स्यति	तप्स्यतः	तप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तप्स्यसि	तप्स्यथः	तप्स्यथ
उत्तम पुरुष	तप्स्यामि	तप्स्यावः	तप्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तपतु	तपताम्	तपन्तु
मध्यम पुरुष	तप	तपतम्	तपत
उत्तम पुरुष	तपानि	तपाव	तपाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तपेत्	तपेताम्	तपेयुः
मध्यम पुरुष	तपेः	तपेतम्	तपेत
उत्तम पुरुष	तपेयम्	तपेव	तपेम

© NCERT not to be republished

शुच् (शोक करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचति	शोचत:	शोचन्ति
मध्यम पुरुष	शोचसि	शोचथ:	शोचथ
उत्तम पुरुष	शोचामि	शोचाव:	शोचाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशोचत्	अशोचताम्	अशोचन्
मध्यम पुरुष	अशोच:	अशोचतम्	अशोचत
उत्तम पुरुष	अशोचम्	अशोचाव	अशोचाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचिष्यति	शोचिष्यत:	शोचिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शोचिष्यसि	शोचिष्यथ:	शोचिष्यथ
उत्तम पुरुष	शोचिष्यामि	शोचिष्याव:	शोचिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचतु	शोचताम्	शोचन्तु
मध्यम पुरुष	शोच	शोचतम्	शोचत
उत्तम पुरुष	शोचानि	शोचाव	शोचाव

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचेत्	शोचेताम्	शोचेयु:
मध्यम पुरुष	शोचे:	शोचेतम्	शोचेत
उत्तम पुरुष	शोचेयम्	शोचेव	शोचेम

© NCERT not to be republished

नी (ले जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयत:	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथ:	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयाव:	नयाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनय:	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यत:	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथ:	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्याव:	नेष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयु:
मध्यम पुरुष	नये:	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

© NCERT not to be republished

भज् (भजन करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजति	भजत:	भजन्ति
मध्यम पुरुष	भजसि	भजथ:	भजथ
उत्तम पुरुष	भजामि	भजाव:	भजाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभजत्	अभजताम्	अभजन्
मध्यम पुरुष	अभज:	अभजतम्	अभजत्
उत्तम पुरुष	अभजम्	अभजाव	अभजाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजिष्यति	भजिष्यत:	भजिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भजिष्यसि	भजिष्यथ:	भजिष्यथ
उत्तम पुरुष	भजिष्यामि	भजिष्याव:	भजिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजतु	भजताम्	भजन्तु
मध्यम पुरुष	भज	भजतम्	भजत
उत्तम पुरुष	भजानि	भजाव	भजाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजेत्	भजेताम्	भजेयु:
मध्यम पुरुष	भजे:	भजेतम्	भजेत
उत्तम पुरुष	भजेयम्	भजेव	भजेम

© NCERT not to be republished

यज् (यजन करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजति	यजत:	यजन्ति
मध्यम पुरुष	यजसि	यजथ:	यजथ
उत्तम पुरुष	यजामि	यजाव:	यजाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयजत्	अयजताम्	अयजन्
मध्यम पुरुष	अयज:	अयजतम्	अयजत
उत्तम पुरुष	अयजम्	अयजाव	अयजाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यक्ष्यति	यक्ष्यत:	यक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	यक्ष्यसि	यक्ष्यथ:	यक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	यक्ष्यामि	यक्ष्याव:	यक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजतु	यजताम्	यजन्तु
मध्यम पुरुष	यज	यजतम्	यजत
उत्तम पुरुष	यजानि	यजाव	यजाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजेत्	यजेताम्	यजेयु:
मध्यम पुरुष	यजे:	यजेतम्	यजेत
उत्तम पुरुष	यजेयम्	यजेव	यजेम

© NCERT not to be republished

शुभ् (शोभित होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभते	शोभेते	शोभन्ते
मध्यम पुरुष	शोभसे	शोभेथे	शोभध्वे
उत्तम पुरुष	शोभे	शोभावहे	शोभामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशोभत	अशोभेताम्	अशोभन्त
मध्यम पुरुष	अशोभथा:	अशोभेथाम्	अशोभध्वम्
उत्तम पुरुष	अशोभे	अशोभावहि	अशोभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभिष्यते	शोभिष्येते	शोभिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	शोभिष्यसे	शोभिष्येथे	शोभिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	शोभिष्ये	शोभिष्यावहे	शोभिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभताम्	शोभेताम्	शोभन्ताम्
मध्यम पुरुष	शोभस्व	शोभेथाम्	शोभध्वम्
उत्तम पुरुष	शोभै	शोभावहै	शोभामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभेत	शोभेयाताम्	शोभेरन्
मध्यम पुरुष	शोभेथा:	शोभेयाथाम्	शोभेध्वम्
उत्तम पुरुष	शोभेय	शोभेवहि	शोभेमहि

© NCERT not to be republished

वृत् (होना-रहना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम पुरुष	अवर्तथा:	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम पुरुष	वर्तेथा:	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

© NCERT not to be republished

अदादिगण—

अद् (भक्षणे), खाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्त:	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थ:	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्मि	अद्व:	अद्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आद:	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यत:	अत्स्यन्ति
मध्मय पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथ:	अत्स्यथ
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्याव:	अत्स्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यम पुरुष	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्यु:
मध्यम पुरुष	अद्या:	अद्यातम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

© NCERT not to be republished

ब्रू (स्पष्ट बोलना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीति (आह)	ब्रूत: (आहतु:)	ब्रुवन्ति (आहु:)
मध्यम पुरुष	ब्रवीषि (आत्थ)	ब्रूथ: (आहथु:)	ब्रूथ
उत्तम पुरुष	ब्रवीमि	ब्रूव:	ब्रूम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
मध्यम पुरुष	अब्रवी:	अब्रूतम्	अब्रूत
उत्तम पुरुष	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यत:	वक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसि	वक्ष्यथ:	वक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वक्ष्यामि	वक्ष्याव:	वक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
मध्यम पुरुष	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उत्तम पुरुष	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयु:
मध्यम पुरुष	ब्रूया:	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उत्तम पुरुष	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

© NCERT not to be republished

हन् (हिंसागत्योः), (वध करना-जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हन्सि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

© NCERT not to be republished

पा (रक्षणे), रक्षा करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पाति	पात:	पान्ति
मध्यम पुरुष	पासि	पाथ:	पाथ
उत्तम पुरुष	पामि	पाव:	पाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपात्	अपाताम्	अपु:-अपान्
मध्यम पुरुष	अपा:	अपातम्	अपात
उत्तम पुरुष	अपाम्	अपाव	अपाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पातु	पाताम्	पान्तु
मध्यम पुरुष	पाहि	पातम्	पात
उत्तम पुरुष	पानि	पाव	पाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पायात्	पायाताम्	पायु:
मध्यम पुरुष	पाया:	पायातम्	पायात
उत्तम पुरुष	पायासम्	पायास्व	पायास्म

© NCERT not to be republished

तुदादिगण—

तुद् (दुख देना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदत:	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथ:	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदाव:	तुदाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुद:	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यत:	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथ:	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्याव:	तोत्स्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयु:
मध्यम पुरुष	तुदे:	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदयेम्	तुदेव	तुदेम

© NCERT not to be republished

इष् (चाहना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छत:	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथ:	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छाव:	इच्छाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छ:	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यत:	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथ:	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्याव:	एषिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयु:
मध्यम पुरुष	इच्छे:	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

© NCERT not to be republished

मिल् (मिलना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलति	मिलत:	मिलन्ति
मध्यम पुरुष	मिलसि	मिलथ:	मिलथ
उत्तम पुरुष	मिलामि	मिलाव:	मिलाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमिलत्	अमिलताम्	अमिलन्
मध्यम पुरुष	अमिल:	अमिलतम्	अमिलत
उत्तम पुरुष	अमिलम्	अमिलाव	अमिलाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मेलिष्यति	मेलिष्यत:	मेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मेलिष्यसि	मेलिष्यथ:	मेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	मेलिष्यामि	मेलिष्याव:	मेलिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलतु	मिलताम्	मिलन्तु
मध्यम पुरुष	मिल	मिलतम्	मिलत
उत्तम पुरुष	मिलानि	मिलाव	मिलाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलेत्	मिलेताम्	मिलेयु:
मध्यम पुरुष	मिले:	मिलेतम्	मिलेत
उत्तम पुरुष	मिलेयम्	मिलेव	मिलेम

© NCERT not to be republished

सिंच् (सींचना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सिञ्चति	सिञ्चतः	सिञ्चन्ति
मध्यम पुरुष	सिञ्चसि	सिञ्चथः	सिञ्चथ
उत्तम पुरुष	सिञ्चामि	सिञ्चावः	सिञ्चामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असिञ्चत्	असिञ्चताम्	असिञ्चन्
मध्यम पुरुष	असिञ्चः	असिञ्चतम्	असिञ्चत
उत्तम पुरुष	असिञ्चम्	असिञ्चाव	असिञ्चाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेक्ष्यति	सेक्ष्यतः	सेक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	सेक्ष्यसि	सेक्ष्यतः	सेक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	सेक्ष्यामि	सेक्ष्यावः	सेक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सिञ्चतु	सिञ्चताम्	सिञ्चन्तु
मध्यम पुरुष	सिञ्च	सिञ्चतम्	सिञ्चत
उत्तम पुरुष	सिञ्चानि	सिञ्चाव	सिञ्चाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सिञ्चेत्	सिञ्चेताम्	सिञ्चेयुः
मध्यम पुरुष	सिञ्चेः	सिञ्चेतम्	सिञ्चेत
उत्तम पुरुष	सिञ्चेयम्	सिञ्चेव	सिञ्चेम

© NCERT not to be republished

विद् (लाभे), पाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दति	विन्दत:	विन्दन्ति
मध्यम पुरुष	विन्दसि	विन्दथ:	विन्दथ
उत्तम पुरुष	विन्दामि	विन्दाव:	विन्दाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविन्दत्	अविन्दताम्	अविन्दन्
मध्यम पुरुष	अविन्द:	अविन्दतम्	अविन्दत
उत्तम पुरुष	अविन्दम्	अविन्दाव	अविन्दाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वेत्स्यति	वेत्स्यत:	वेत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	वेत्स्यसि	वेत्स्यथ:	वेत्स्यथ
उत्तम पुरुष	वेत्स्यामि	वेत्स्याव:	वेत्स्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दतु	विन्दताम्	विन्दन्तु
मध्यम पुरुष	विन्द	विन्दतम्	विन्दत
उत्तम पुरुष	विन्दानि	विन्दाव	विन्दाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्देत्	विन्देताम्	विन्देयु:
मध्यम पुरुष	विन्दे:	विन्देतम्	विन्देत
उत्तम पुरुष	विन्देयम्	विन्देव	विन्देम

© NCERT not to be republished

विश् (प्रवेशे), घुसना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विशति	विशतः	विशन्ति
मध्यम पुरुष	विशसि	विशथः	विशथ
उत्तम पुरुष	विशामि	विशावः	विशामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविशत्	अविशताम्	अविशन्
मध्यम पुरुष	अविशः	अविशतम्	अविशत
उत्तम पुरुष	अविशम्	अविशाव	अविशाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वेक्ष्यसि	वेक्ष्यथः	वेक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वेक्ष्यामि	वेक्ष्यावः	वेक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विशतु	विशताम्	विशन्तु
मध्यम पुरुष	विश	विशतम्	विशत
उत्तम पुरुष	विशानि	विशाव	विशाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विशेत्	विशेताम्	विशेयुः
मध्यम पुरुष	विशेः	विशेतम्	विशेत
उत्तम पुरुष	विशेयम्	विशेव	विशेम

© NCERT not to be republished

प्रच्छ् (पूछना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छत:	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथ:	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छाव:	पृच्छाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छ:	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यत:	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथ:	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्याव:	प्रक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु:
मध्यम पुरुष	पृच्छे:	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

© NCERT not to be republished

मुञ्च् (छोड़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
मध्यम पुरुष	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उत्तम पुरुष	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चावः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
मध्यम पुरुष	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः	मोक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः	मोक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
मध्यम पुरुष	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत
उत्तम पुरुष	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
मध्यम पुरुष	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम

विद् (लाभे), पाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दते	विन्देते	विन्दन्ते
मध्यम पुरुष	विन्दसे	विन्देथे	विन्दध्वे
उत्तम पुरुष	विन्दे	विन्दावहे	विन्दामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविन्दत	अविन्देताम्	अविन्दन्त
मध्यम पुरुष	अविन्दथा:	अविन्देथाम्	अविन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	अविन्दे	अविन्दावहि	अविन्दामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
मध्मय पुरुष	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्
मध्यम पुरुष	विन्दस्व	विन्देथाम्	विन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	विन्दै	विन्दावहै	विन्दामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्देत	विन्देयाताम्	विन्देरन्
मध्यम पुरुष	विन्देथा:	विन्देयाथाम्	विन्देध्वम्
उत्तम पुरुष	विन्देय	विन्देवहि	विन्देमहि

© NCERT not to be republished

तनादिगण—

तनु (तानना, फैलाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोति	तनुत:	तन्वन्ति
मध्यम पुरुष	तनोषि	तनुथ:	तनुथ
उत्तम पुरुष	तनोमि	तनुव:, तन्व:	तनुम:, तन्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
मध्यम पुरुष	अतनो:	अतनुतम्	अतनुत
उत्तम पुरुष	अतन्वम्	अतनुव-अतन्व	अतनुम-अतन्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यत:	तनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	तनिष्यसि	तनिष्यथ:	तनिष्यथ
उत्तम पुरुष	तनिष्यामि	तनिष्याव:	तनिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
मध्यम पुरुष	तनु	तनुतम्	तनुत
उत्तम पुरुष	तन्वानि	तन्वाव	तन्वाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयु:
मध्यम पुरुष	तनुया:	तनुयातम्	तनुयात
उत्तम पुरुष	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

© NCERT not to be republished

कृ (करना)

लट् लकार (वर्तमान काल) परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति
मध्मय पुरुष	करोषि	कुरुथ:	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्व:	कुर्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरो:	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्याव:	करिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:
मध्यम पुरुष	कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

© NCERT not to be republished

कृ, करना (आत्मनेपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम पुरुष	अकुरुथा:	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्मय पुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहै	करवामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथा:	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

© NCERT not to be republished

क्र्यादिगण—

क्री, खरीदना (उभयपदी)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीत:	क्रीणन्ति
मध्मय पुरुष	क्रीणासि	क्रीणीथ:	क्रीणीथ
उत्तम पुरुष	क्रीणामि	क्रीणीव:	क्रीणीम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्मय पुरुष	अक्रीणा:	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तम पुरुष	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यत:	क्रेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसि	क्रेष्यथ:	क्रेष्यथ
उत्तम पुरुष	क्रेष्यामि	क्रेष्याव:	क्रेष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यम पुरुष	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तम पुरुष	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयु:
मध्यम पुरुष	क्रीणीया:	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उत्तम पुरुष	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

© NCERT not to be republished

चुरादिगण—

चुर् (चुराना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयत:	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथ:	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयाव:	चोरयाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरय:	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यत:	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथ:	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्याव:	चोरयिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयु:
मध्यम पुरुष	चोरये:	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

© NCERT not to be republished

भक्ष् (भक्षण करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयत:	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथ:	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयाव:	भक्षयाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षय:	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यत:	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथ:	भक्षयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्याव:	भक्षयिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयानि	भक्षयाव	भक्षयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयु:
मध्यम पुरुष	भक्षये:	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

© NCERT not to be republished

कथ् (कहना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयत:	कथयन्ति
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथ:	कथयथ
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयाव:	कथयाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथय:	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यत:	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथ:	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्याव:	कथयिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयु:
मध्यम पुरुष	कथये:	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

© NCERT not to be republished

गण् (गिनना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयति	गणयत:	गणयन्ति
मध्यम पुरुष	गणयसि	गणयथ:	गणयथ
उत्तम पुरुष	गणयामि	गणयाव:	गणयाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगणयत्	अगणयताम्	अगणयन्
मध्यम पुरुष	अगणय:	अगणयतम्	अगणयत
उत्तम पुरुष	अगणयम्	अगणयाव	अगणयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयिष्यति	गणयिष्यत:	गणयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गणयिष्यसि	गणयिष्यथ:	गणयिष्यथ
उत्तम पुरुष	गणयिष्यामि	गणयिष्याव:	गणयिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयतु	गणयताम्	गणयन्तु
मध्यम पुरुष	गणय	गणयतम्	गणयत
उत्तम पुरुष	गणयानि	गणयाव	गणयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयेत्	गणयेताम्	गणयेयु:
मध्यम पुरुष	गणये:	गणयेतम्	गणयेत
उत्तम पुरुष	गणयेयम्	गणयेव	गणयेम

© NCERT not to be republished

पाल् (पालन करना)

लट् लकार (वर्तमान)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पालयति	पालयत:	पालयन्ति
मध्यम पुरुष	पालयसि	पालयथ:	पालयथ
उत्तम पुरुष	पालयामि	पालयाव:	पालयाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपालयत्	अपालयताम्	अपालयन्
मध्यम पुरुष	अपालय:	अपालयतम्	अपालयत
उत्तम पुरुष	अपालयम्	अपालयाव	अपालयाम

नश् (नष्ट होना)

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्य:	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यत:	नङ्क्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथ:	नङ्क्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्याव:	नङ्क्ष्याम:

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

© NCERT not to be republished

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयु:
मध्यम पुरुष	नश्ये:	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

जन् (उत्पन्न होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथा:	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्मय पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

© NCERT not to be republished

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथा:	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

स्वादिगण—

सु (रस निकालना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोति	सुनुत:	सुन्वन्ति
मध्यम पुरुष	सुनोषि	सुनुथ:	सुनुथ
उत्तम पुरुष	सुनोमि	सुनुव: सुन्व:	सुनुम: सुन्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
मध्यम पुरुष	असुनो:	असुनुतम्	असुनुत
उत्तम पुरुष	असुन्वम्	असुन्व, असुनुव	असुन्म, असुनुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोष्यति	सोष्यत:	सोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	सोष्यसि	सोष्यथ:	सोष्यथ
उत्तम पुरुष	सोष्यामि	सोष्याव:	सोष्याम:

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
मध्यम पुरुष	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उत्तम पुरुष	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयु:
मध्यम पुरुष	सुनुया:	सुनुयातम्	सुनुयात
उत्तम पुरुष	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

चि (चुनना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोति	चिनुत:	चिन्वन्ति
मध्यम पुरुष	चिनोषि	चिनुथ:	चिनुथ
उत्तम पुरुष	चिनोमि	चिनुव:-चिन्व:	चिनुम:-चिन्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
मध्यम पुरुष	अचिनो:	अचिनुतम्	अचिनुत
उत्तम पुरुष	अचिन्वम्	अचिनुव(अचिन्व)	अचिनुम(अचिन्म)

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चेष्यति	चेष्यत:	चेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चेष्यसि	चेष्यथ:	चेष्यथ
उत्तम पुरुष	चेष्यामि	चेष्याव:	चेष्याम:

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
मध्यम पुरुष	चिनुहि	चिनुतम्	चिनुत
उत्तम पुरुष	चिन्वानि	चिन्वाव	चिन्वाम

©NCERT not to be republished

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयु:
मध्यम पुरुष	चिनुया:	चिनुयातम्	चिनुयात
उत्तम पुरुष	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

(शक्) सकना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुत:	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथ:	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुव:	शक्नुम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नो:	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नुवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यत:	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथ:	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्याव:	शक्ष्याम:

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयु:
मध्यम पुरुष	शक्नुया:	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

आप् (प्राप्त करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुत:	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथ:	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुव:	आप्नुम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नो:	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यत:	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथ:	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्याव:	आप्स्याम:

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

© NCERT not to be republished

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयु:
मध्यम पुरुष	आप्नुया:	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished

टिप्पणी

© NCERT not to be republished